अश्व सेना

इसाक बाबेल



परिकल्पना प्रकाशन
लखनऊ
ISBN:81-87425-14-8

[redacted]

अश्वसेना

इसाक बाबेल

परिकल्पना प्रकाशन
लखनऊ

अनुवादक : विनय कुमार शुक्ल

ISBN: 81-87425-14-8

मूल्य : रु. 40.00

प्रथम संस्करण : जनवरी 2006

परिकल्पना प्रकाशन
द्वारा, जनचेतना, डी-68, निरालानगर,
लखनऊ–226 020 द्वारा प्रकाशित

क्रिएटिव प्रिन्टर्स 628/एस-8, शक्तिनगर, लखनऊ द्वारा मुद्रित

आवरण : रामबाबू

ASHWA SENA *by* ***Isak Babel***

पुस्तक के बारे में

इसाक बाबेल (1894-1941) के लघु उपन्यास 'अश्वसेना' की गणना उन कृतियों में की जाती है जिनके बिना क्लासिकी रूसी सोवियत साहित्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

बाबेल का जन्म ओदेस्सा में हुआ था। 1916 में, क्रान्ति के पहले ही 'ओदेस्सा की कहानियाँ' शीर्षक से उनकी दो कहानियाँ प्रकाशित होकर चर्चा का विषय बन चुकी थी। अपने पूरे जीवन-काल में उन्होंने कहानियों और लघु उपन्यासों के सिर्फ़ दो संग्रह और दो नाटक लिखे, लेकिन उन्हें विश्वव्यापी प्रसिद्धि मिली। 1915 में बाबेल ओदेस्सा से पेत्रोग्राद आ गये। मक्सिम गोर्की से उनकी पहली मुलाक़ात 1916 में हुई और इसके बाद वह जीवन भर उनके स्नेहभाजन बने रहे। गोर्की ने अपनी एक कहानी भी उन्हें समर्पित की थी।

बाबेल की कथाकृतियों में रूस में गृहयुद्ध काल (1918-20) विषयवस्तु के रूप में सर्वप्रमुख है। उनके लघु उपन्यास मर्मभेदी मनोवैज्ञानिक रचनाओं के रूप में अलेक्सान्द्र वोरोन्स्की और अन्य सोवियत आलोचकों द्वारा काफ़ी सराहे गये और उन्हें विश्वव्यापी ख्याति मिली। इनमें 'अश्वसेना' का स्थान सबसे ऊपर है, जो पहली बार 1926 में प्रकाशित हुआ।

हिन्दी पाठकों के लिए इस रचना के प्रकाशित करते हुए हम हर्ष और सन्तोष का अनुभव कर रहे हैं।

–कात्यायनी

ज्ब्रूच नदी के पार

छठी डिवीजन के कमाण्डर ने रिपोर्ट भेजी कि आज प्रातः नोवोग्राद-वोलीन्स्क पर अधिकार कर लिया गया। हेडक्वार्टर क्रापीव्नो से रवाना हो गया और हमारा काफिला शोरगुल करते चन्दावल की तरह ब्रेस्त—वार्सा राजमार्ग पर फैल गया जिसे जार निकोलाई प्रथम ने किसानों की हड्डियों पर बनवाया था।

चारों ओर पोस्त के सिन्दूरी खेत लहलहा रहे हैं, दोपहर की मस्त हवा रई के पीलापे से भरते खेतों में अठखेलियाँ कर रही थी, क्षितिज पर खेतों में कूटू की अछूती फसल किसी मठ की दीवार की तरह खड़ी थी। वोलीन की शान्त भूमि इठलाती फैली थी, वह भोजवृक्षों के मोतियाई झुरमुट की धुंध में छिपकर हमारी नज़रों से ओझल हो जाती, फिर फूलों से ढकी ढलानों पर चढ़ने को बेताब हो जाती और अपनी क्षीण भुजाओं को हाप के कुंजों में उलझा देती। नारंगी सूरज कटे सिर की तरह आकाश में लुढ़क रहा था, बादलों के पर्वतों की घाटियों में कोमल प्रकाश दमक रहा था, हमारे सिरों के ऊपर अस्ताचलगामी सूर्य की पताकाएँ लहरा रही थीं। कल बहे खून और मरे घोड़ों की बू संध्या की शीतलता में रम रही थी। गहराकर काली ज्ब्रूच गरजती हुई अपने रास्ते में पड़े पत्थरों से जूझती उन्हें फेन से घेर रही थी। पुल नष्ट पड़े थे और हम पाट में उतरकर नदी को पार करने लगे। लहरों पर चाँद का थाल तैर रहा था। पानी घोड़ों की पीठों के ऊपर से बह रहा था, घोड़ों की सैकड़ों टाँगों के बीच से पानी की धाराएँ गरज रही थीं। कोई डूबते-डूबते माँ मरियम को कोस रहा था। नदी छकड़ों के काले चौकोरों, नागों की तरह बल खाती चाँद की किरणों, दमकते भँवरों से पटी थी, वातावरण शोरगुल, सीटियों और गाने की आवाज़ों से मुखरित था। बड़ी रात गये हम नोवोग्राद पहुँचे। जिस घर में मुझे टिकाया गया वहाँ मुझे गर्भवती औरत और लाल-लाल बालों और पतली गर्दनों वाले दो यहूदी मिले, तीसरा फ़र्श पर सिर ढके दीवार से चिपटा सोया पड़ा था। अपने लिये नियत कमरे में मुझे अस्त-व्यस्त अलमारियाँ मिलीं, फ़र्श पर जनाना फर कोटों के चीथड़े, आदमी का मल और उन पवित्र भाँड़ों के ठीकरे बिखरे थे जिनका यहूदी साल में सिर्फ़ एक बार—अपने ईस्टर पर उपयोग करते हैं।

"सफाई कर दो," मैंने औरत से कहा। "आप लोग कितनी गन्दगी में रहते हैं..."

दो यहूदी अपनी जगह से हिले। वे अपने जूतों के नमदे के तलवों पर चुपचाप फुदकते हुए फ़र्श पर बिखरे ठीकरे हटाने लगे, वे बन्दरों की तरह फुदक रहे थे, ठीक वैसे जैसे सर्कसवाले जापानी, उनकी गर्दनें फूलकर नाच रही थीं। उन्होंने फ़र्श

पर पंख भरा, चिरा हुआ गद्दा बिछाया और मैं दीवार से सटकर, तीसरे, सोते हुए यहूदी के पास जाकर लेट गया। मेरी शय्या को भयावह दरिद्रता ने घेर लिया।

सर्वत्रस मौत का सन्नाटा छाया हुआ था बस चाँद ही नीले हाथों में अपना मस्त, गोल-मटोल, दमकता सिर थामे खिड़कियों के बाहर मटरगश्ती कर रहा था।

मैं अपनी अकड़ी टाँगों को सीधा करके फटे गद्दे पर पसर गया और मुझे नींद आ गयी। सपने में मुझे छठी डिवीजन का कमाण्डर दिखायी दिया। वह भारी-भरकम घोड़े पर सवार होकर ब्रिगेड कमाण्डर का पीछा कर रहा था और उसने उसकी आँखों में दो गोलियाँ मार दीं। गोलियों ने ब्रिगेड कमाण्डर के सिर को भेद दिया और उसकी दोनों आँखें ज़मीन पर गिर पड़ीं। "तूने ब्रिगेड को क्यों मोड़ा?" छठी डिवीजन के कमाण्डर सावीत्स्की ने घायल से चिल्लाकर पूछा और तभी मेरी नींद खुल गयी क्योंकि गर्भवती औरत मेरे चेहरे को उँगलियों से टटोल रही थी।

"श्रीमान," वह मुझसे बोली, "आप नींद में चिल्लाते और हाथ-पाँव चलाते हैं। मैं दूसरे कोने में आपका बिस्तर बिछाये देती हूँ क्योंकि आप मेरे पिताजी को धकेल रहे हैं..."

उसने फ़र्श से अपनी दुबली टाँगें और गोल पेट उठाया और सोते व्यक्ति पर से कम्बल हटाया। वहाँ सिर लुढ़काये मृत वृद्ध चित पड़ा था। उसका हलक बाहर निकला था और चेहरा दो टुकड़ों में कटा था, उसकी दाढ़ी में सीसे के लौंदे के मानिन्द खून का नीला थक्का जमा था।

"श्रीमान," गद्दे को झाड़ते हुए यहूदिन बोली, "पोलिश लोगों ने इन्हें मार डाला, पिताजी ने उनसे विनती की : मुझे पिछवाड़े में मारो ताकि मेरी बेटी मुझे मरता न देख सके। पर उन्होंने वही किया जो वे चाहते थे—इसी कमरे में उन्होंने दम तोड़ा और वह मेरे ही बारे में सोच रहे थे... और अब मैं जानना चाहती हूँ," अचानक औरत प्रचण्ड आवेश में बोली, "मैं जानना चाहती हूँ, इस सारी धरती पर आपको मेरे पिताजी जैसा बाप और कहाँ मिलेगा..."

नोवोग्राद में कैथोलिक गिरजा

कल मैं सैन्य कोमिसार को रिपोर्ट देने गया था जो फरार पादरी के घर में टिका था। बावर्चीखाने में जेसुइट पादरी की भण्डारिन श्रीमती एलीज़ा ने मेरी आवभगत की। उसने मुझे बिस्कुटों के साथ कहरूबे के रंग की चाय दी। उसके बिस्कुटों से सलीब की गन्ध आ रही थी। उनमें मक्कारी का सत और वैटिकन का सुवासित आक्रोश भरा था। घर के पास गिरजे में घण्टे-घड़ियाल आर्तनाद कर रहे थे जिन्हें घड़ियाली उन्मत्त होकर बजा रहा था। शाम का समय था, जुलाई का आकाश तारों से खचाखच भरा था। श्रीमती एलीज़ा शिष्टता के साथ अपना सफ़ेद सिर हिलाते हुए

मेरी प्लेट को बिस्कुटों से भरती जा रही थी और मैंने जेसुइटों के आहार का जी भरकर आनन्द लिया।

पोलिश वृद्धा मुझे "श्रीमान" कहकर सम्बोधित कर रही थी, ड्योढ़ी पर हड़ीले कानों वाले धूसर बुड्ढे तनकर खड़े थे और कहीं नागिन जैसे झुटपुटे में किसी सन्यासी का चोगा लहरा रहा था। पादरी भाग गया था पर वह अपने सहायक—श्रीमान रोमुआल्द को पीछे छोड़ गया था।

नकियाकर बोलने वाला भीमकाय हिजड़ा रोमुआल्द हमें "कामरेड" कहकर सम्बोधित करता था। अपनी पीली उँगली को नक्शे पर फेरकर वह पोलिशों की पराजय के स्थानों को दिखा रहा था। भ्रष्ट उल्लास के आवेश में वह अपनी मातृभूमि के घावों को बार-बार गिना रहा था। हमारी कामना है कि रोमुआल्द की याद विस्मृति की विनम्र तह से ढक जाये जिसने बेहिचक हमारे साथ गद्दारी की और जिसे यूँ ही गोली मार दी गयी। पर उस शाम उसका तंग चोगा सभी परदों के पास सरसरा रहा था, सभी सड़कों को तूफ़ान की तरह बुहार रहा था और वोद्का पीने के सभी इच्छुकों का उपहास कर रहा था। उस शाम सन्यासी की छाया चुपके-चुपके मेरे पीछे लगी हुई थी। वह, मतलब श्रीमान, रोमुआल्द बिशप बन सकता था, अगर वह जासूस न होता। मैं उसके साथ रम पी रहा था, पादरी के घर के खण्डहरों के नीचे अनदेखी ज़िन्दगानी की साँस फड़फड़ा रही थी और उसके कपटी प्रलोभनों ने मुझे निःशक्त कर डाला था। ओ, वेश्याओं के तावीजों की तरह नन्हे-नन्हे सलीबों, पोप के आदेशों के धर्मपुत्रों और वास्केटों के नीले रेशम में लिपटे-लिपटे गल गयी नाज़नीनों की अतलसी चिट्ठियों! क्या कहने हैं तुम्हारे!..

मैं तुझे यहीं से देख रहा हूँ सिन्दूरी चोगेवाले बेवफा सन्यासी, तेरे हाथों की सूजन को भी, बिल्ली की आत्मा की तरह तेरी कोमल और निर्दय आत्मा को भी, मैं तेरे ईश्वर के, कन्याओं को मदहोश बनानेवाले वीर्य से सुवासित विष से रिसते घावों को देख रहा हूँ।

हम सैन्य कोमिसार की प्रतीक्षा में बैठे रम पी रहे थे पर वह हेडक्वार्टर से लौटने का नाम ही न ले रहा था। रोमुआल्द कोने में लुढ़ककर सो गया। वह सोते हुए कँपकँपा रहा था, खिड़की के बाहर बाग में आकाश का उद्विग्न अंधकार तरुपथ को तड़पा रहा था। अँधेरे में गुलाब आतुरता के साथ डोल रहे थे। गुम्बदों पर हरी बिजलियाँ कौंध रही थीं। सड़क के किनारे नंगी लाश पड़ी थी। फैली मृत टाँगों पर चाँदनी की किरणों की फुहार-सी पड़ रही थी।

यह है पोलैण्ड, यह है रेच पोस्पोलीता* का दर्पपूर्ण शोक! मैं बलात्कारी परदेशी, पुजारी द्वारा परित्यक्त गिरजे में जूँ भरा गद्दा बिछाता हूँ और सिर के नीचे मोटी-मोटी पोथियाँ रखता हूँ जिनमें पोलिश सामन्तों के अगुआ सर्वगुण सम्पन्न महामहिम जोजेफ़

---

* रेच पोस्पोलीता—शब्दशः गणराज्य, सोलहवीं-अठारहवीं सदियों में पोलिश राज्य का नाम।

पिलसूदस्की* की महिमा बखान की गयी है।

ओ पोलैण्ड! दरिद्रों के झुण्ड तेरे प्राचीन नगरों पर सैलाब की तरह उमड़ पड़े, उनमें सभी गुलामों की एकता का गान गरज रहा है, लानत है तुझ पर रेच पोस्पोलीता, लानत है तुझ पर प्रिंस राद्ज़िवील और तुझ पर भी प्रिंस सापेगा कि इस घड़ी तुमने क़ब्र से सिर निकाला!..**

अभी तक मेरा सैन्य कोमिसार नहीं आया। मैं उसे हेडक्वार्टर, बाग और गिरजे में ढूँढने चला गया। गिरजे का फाटक खुला था। मैंने अन्दर कदम रखा, टूटे ताबूत पर दो रुपहली खोपड़ियाँ मेरे सामने प्रकट हुईं। डरकर मैं अन्धाधुंध दौड़ता तहखाने में उतर गया। वहाँ से बलूत का जीना गर्भगृह की ओर जाता था। मुझे ऊँचाई पर, गुम्बद की छत के पास अनेक रोशनियाँ झिलमिलाती दिखायी दीं। मुझे हाथों से मोमबत्तियाँ उठाये सैन्य कोमिसार, सुरक्षा अधिकारी और कज़्ज़ाक दिखायी पड़े। मेरी क्षीण पुकार को सुनकर उन्होंने मुझे तहख़ाने से निकाला।

खोपड़ियों से, जो गिरजे के शवमंच पर की गयी नक्काशी निकली अब मुझे डर नहीं लग रहा था और हम सब आगे तलाशी लेने लगे, क्योंकि यहाँ तलाशी ही ली जा रही थी जो पादरी के घर में ढेरों सैन्य सामग्री बरामद किये जाने के बाद शुरू की गयी थी।

अपनी आस्तीनों पर कढ़े घोड़ों के सिरों को चमचमाते, फुसफुसाते और महमेजों को खड़खड़ाते हुए हम ढोल की तरह गूँजती इमारत में चक्कर लगा रहे थे, हाथ हमारे पिघले मोम से ढँके थे। माँ मरियम की रत्नजड़ित मूर्तियाँ अपनी चूहों जैसी गुलाबी पुतलियों से हमारी गतिविधियों पर नज़र रखे थीं, हमारी उँगलियों में लपटें लपलपा रही थीं, चौकोर परछाइयाँ सन्त पीटर, सन्त फ्रेंसिस्को, सन्त विन्सेंट की मूर्तियों, उनके लाल गालों और किरमिज से रँगी घुँघराली दाढ़ियों पर ऐंठ रही थीं। हम घूम-घूमकर तलाशी ले रहे थे। हमारी उँगलियों के स्पर्श से हड्डी के बटन खटक रहे थे, देवचित्र दो हिस्सों में बँटकर खिसक जाते और हमारे सामने तहख़ाने को जानेवाली काई से ढकी कन्दराएँ खुल जातीं। यह प्राचीन गिरजा रहस्यों से भरा था। उसने अपनी चमकती दीवारों में चोर-दरवाज़े, आले और चुपके से खुलनेवाले कपाट छिपा रखे थे। ओ मूर्ख पादरी! तेरे भी क्या कहने, मसीहा के सलीब की कीलों पर अपनी भक्तिनों की चोलियाँ टाँगता था! गर्भगृह के पवित्र द्वार के पीछे हमें सोने के सिक्कों से भरा सूटकेस, नोटों से भरी चमड़े की बोरी और पन्ने की अँगूठियों के साथ पेरिस के जौहरियों की

* जोजेफ़ पिलसूदस्क (1867-1935)—पोलैण्ड का तानाशाह (1926 से); 1920 में सोवियत रूस के विरुद्ध सैनिक गतिविधियों का संचालक।

** लेखक का तात्पर्य पोलिश सामंतों से है जिन्होंने पोलिश राज्य की शक्ति, महत्ता और स्वाधीनता के प्रतीकों कार्ल राद्ज़िवील (1734-1790) और लेव सापेगा (1587-1633) की पताका उठायी थी।

डिबिया मिली।

बाद में सैन्य कोमिसार के कमरे में हमने पैसे गिने। सोने के स्तम्भ खड़े हो गये, नोटों के गलीचे बिछ गये, हवा के थपेड़े मोमबत्तियों की लौ को फड़फड़ा रहे थे, श्रीमती एलीज़ा की आँखों में कौओं जैसा उन्माद भरा था, रोमुआल्द के ठहाके गरज रहे थे और बावला घड़ियाली श्रीमान रोबात्स्की निरन्तर घण्टे-घड़ियाल बजाये जा रहा था।

"भागो यहाँ से," मैं अपने से बोला, "सिपाहियों से धोखा खा चुकी, आँख मारती कुँवारी मरियामों से भागो दूर..."

चिट्ठी

यह रही वह चिट्ठी जो हमारे डिस्पैच ग्रुप के लड़के कुदर्युकोव ने बोलकर मुझसे अपने घर लिखवायी थी। वह इसके काबिल नहीं कि उसे भुला दिया जाये। मैंने उसकी हूबहू नकल उतार ली, जैसी थी वैसी ही अक्षरशः उद्धृत कर रहा हूँ :

"आदरणीय माताजी येव्दोकीया फ़्योदोरोव्ना, इस चिट्ठी के शुरू में ही आपको सूचित करने की जल्दी में हूँ कि प्रभु की अनुकम्पा से मैं जीवित और स्वस्थ हूँ, आशा करता हूँ कि आप भी मुझे यही सूचित करेंगी। साथ ही मैं ज़मीन पर माथा टेककर आपको प्रणाम करता हूँ... (आगे दूर-पास के सगे सम्बन्धियों की लम्बी सूची है, इसे छोड़कर अगले अनुच्छेद को लें।)

"आदरणीय माताजी येव्दोकीया फ़्योदोरोव्ना कुदर्युकोवा। मैं आपको यह लिखने को आतुर हूँ कि मैं कामरेड बुद्योन्नी की लाल अश्वसेना में हूँ, आपके धरम भाई नीकोन वसील्यीच भी यहीं है, जिनकी आजकल लाल वीरों में गिनती होती है। उन्होंने मुझे अपने पास राजनीतिक विभाग के डिस्पैच ग्रुप में रख लिया है, हम मोर्चों पर साहित्य और अखबार, जैसे मास्को का 'इस्वेस्तिया', 'प्राव्दा' और अपना बेरहम अखबार 'लाल अश्वारोही' ले जावें हैं जिसे अग्रिम पाँत पर हरेक जवान पढ़ने को उतावला रहा है और इसके बाद वह बड़ी बहादुरी से कमीने पोलिश सामंतों को गाजर-मूली की तरह काटे हैं और नीकोन वसील्येविच के पास मेरे दिन बेहद बढ़िया कट रहे हैं।

"आदरणीय माताजी येव्दोकीया फ़्योदोरोव्ना। आपकी सामर्थ्य से जो बन पड़े वह मुझे भिजवा देवें। आपसे चितकबरे सूअर को हलाल करके मेरे लिये पार्सल भेजने की विनती करे हूँ। उस पर लिख देवें कामरेड बुद्योन्नी के राजनीतिक विभाग में वसीली कुदर्युकोव को मिले। हर रोज़ मैं बिना कुछ मुँह में डाले और बिना कपड़ों के आराम करे हूँ कि ठण्ड बहुत लागे है। मेरे स्त्योपा की तरफ़ से मुझे चिट्ठी में लिख देवें कि वह ज़िन्दा है या नहीं, विनती करे हूँ कि आप उसका ख़्याल पूरा रखियेगा और उसका कुशल-क्षेम मुझे लिखियेगा—अभी चलते समय उसकी टाँगें टकराती हैं

या नहीं, अगली टाँगों में खाज के बारे में भी लिखियेगा, नालें ठुकवा दी हैं या नहीं? आपसे विनती है, आदरणीय माताजी येव्दोकीया फ़्योदोरोव्ना कि आप उसकी अगली टाँगें बिला नागा साबुन से धोवें जो मैं देवचित्रों के पीछे छिपाकर रख गया था, अगर पिताजी ने साबुन पर हाथ साफ़ कर डाला तो क्रास्नोदार में खरीद लीजियेगा, भगवान आपका भला ही करेगा। मैं आपको यह भी बखान कर सकता हूँ कि यह देश बिल्कुल ग़रीब है, किसान यहाँ के अपने घोड़ों के साथ—हमारे लाल जाँबाजों से जंगलों में छिपे रहवें हैं, गेहूँ कम होवे है और उसके दाने इत्ते छोटे होवे हैं कि हम सब उसे देख हँसे हैं। किसान रई बोवे हैं और जौ के बारे में भी यही कहा जा सके है। डण्डियों पर यहाँ हाप उगाया जावे है, बड़े करीने से होवे है खेती उसकी, उससे देसी शराब खींचते हैं।

"दूसरी बात जो में इस खत में बताने को उतावला हूँ, वह पिताजी के बारे में है, वह यह कि साल भर पहले उन्होंने भैया फ़्योदोर तिमोफ़ेइविच कुर्द्युकोव को मार डाला। हमारी कामरेड पावलीचेन्को की लाल ब्रिगेड रोस्तोव शहर पर चढ़ाई कर रही थी जब हमारे बीच किसी ने गद्दारी कर डाली। और पिताजी उस ज़माने में देनीकिन की फ़ौज में कम्पनी के कमाण्डर थे। जिन लोगों ने उन्हें देखा वे बता रहे थे कि वे जार के ज़माने की तरह छाती पर मेडल लटकाकर चलते थे। और उस गद्दारी के कारण हम सबको क़ैद कर लिया गया और भैया फ़्योदोर तिमोफ़ेइविच पर पिताजी की नज़र पड़ गयी। और पिताजी फ़्योदोर भैया को हरामी, लाल कुत्ता, कुतिया की औलाद जैसी तरह-तरह की गालियाँ देते हुए रात तक पीटते रहे जब तक भैया फ़्योदोर तिमोफ़ेइविच मर नहीं गये। मैंने तब आपको चिट्ठी लिखी थी कि कैसे आपका बेटा फ़्योदोर बिना किरिया-करम के क़ब्र में पड़ा है। पर पिताजी ने मुझे चिट्ठी के साथ पकड़ लिया और बोले : तुम अपनी माँ के बेटे हो, तुम उसी की, कुलटा की जड़ हो, मैं तुम्हारी माँ का पेट फुलाता रहा और फुलाता रहूँगा, मेरी ज़िन्दगी बरबाद हो गयी, सच्चाई की खातिर मैं अपना बीज नाश कर दूँगा, और भी न जाने वे क्या-क्या कहते गये। मैंने उनके हाथों वैसे ही कष्ट झेले जैसे ईसामसीह ने झेले थे। पर जल्दी ही मैं पिताजी के पास से भाग गया और अपने कामरेड पावलीचेन्को के दस्ते में पहुँच गया। और हमारी ब्रिगेड को वोरोनेझ नगर जाने का आदेश मिला नये लोगों को भरती करने के वास्ते, हमने वहाँ नये जवानों को भरती किया, साथ ही हमें घोड़े, खुरजियाँ, रिवाल्वर और सब ज़रूरी चीज़ें भी मिलीं। वोरोनेझ के बारे में, आदरणीय माताजी, मैं आपको यह बता सकता हूँ कि यह शहर बहुत शानदार है, क्रास्नोदार से बड़ा होगा, लोग वहाँ के बड़े सुन्दर हैं, नदी में नहाया जा सके है। हमें दिन में एक सेर डबलरोटी, आधा सेर मांस और इतनी चीनी का राशन मिलता था कि सुबह उठकर मीठी चाय पीते, रात के खाने के बारे में भी यही कहा जा सके है, हम भूख के बारे में ही भूल गये थे। और दोपहर के खाने के वक्त मैं भैया सेम्योन तिमोफ़ेइविच

के पास चीले या हंस का मांस खाने जाया करन था और इसके बाद आराम करने के लिये लोट जाता था। उस वक्त सेम्योन तिमोफ़ेइविच को उनकी बहादुरी के लिये सारी रेजीमेंट अपना कमाण्डर बनवाना चाहवे थी और कामरेड बुद्योन्नी ने ऐसा हुक्म जारी करवाया और भैया को दो घोड़े, नयी वर्दी, सामान के लिए अलग से छकड़ा और 'लाल पताका' पदक मिला और मेरा ओहदा उनके भाई का था। अब अगर कोई पड़ोसी आपको परेशान करेगा तो सेम्योन तिमोफ़ेइविच उसका गला तक काट सकते हैं। फिर हमने जनरल देनीकिन की फ़ौज को खदेड़ना शुरू किया, हमने हज़ारों को गाजर-मूली तरह काट डाला और उन्हें काले सागर में धकेल दिया, पर पिताजी कहीं नज़र नहीं आये और सेम्योन तिमोफ़ेइविच उन्हें सभी मोर्चों पर ढूँढते रहे क्योंकि उन्हें फ़्योदोर भैया की बड़ी याद आवे थी। पर आदरणीय माताजी, आप तो पिताजी और उनके अड़ियल सुभाव को तो जानती ही हैं, तो पता है उन्होंने क्या किया—ढिठाई के साथ अपनी ललौंही दाढ़ी को काला रंग डाला और माइकोप शहर में सादे कपड़े पहनकर घूम रहे थे, इसलिये किसी को यह पता नहीं चला कि यह वही है और कोई नहीं, जो पुरानी सरकार के जमाने में पुलिस कांस्टेबल था। पर सच्चाई कहाँ छिप सकती है, आपके धरम भाई नीकोन वसील्येविच ने संजोग से उसे वहाँ के एक आदमी के घर में देख लिया और सेम्योने तिमोफ़ेइविच को चिट्ठी लिख दी। हम घोड़ों पर बैठ गये और दो सौ मील दौड़े-दौड़े गये—मैं, सेम्योन भैया और हमारी बस्ती के उतावले जवान।

"तो हमने माइकोप शहर में क्या देखा? हमने देखा कि चन्दावल बिल्कुल भी मोर्चे से सहानुभूति नहीं रखता और वहाँ सब जगह गद्दारी ही गद्दारी और पुरानी सरोकार के जमाने की तरह यहूदिये ही यहूदिये भरे हैं। और सेम्योन तिमोफ़ेइविच ने उन यहूदियों से बहुत बहस की जो पिताजी को नहीं देना चाहवें थे जिन्हें उन्होंने में बन्द कर रखा था, वे कह रहे थे कि कैदियों को मारने की मनाही का हुक्म आया है और हम खुद उस पर मुकदमा चलायेंगे, नाराज मत होओ, उसे अपनी करनी की पूरी सजा मिलेगी। पर सेम्योन तिमोफ़ेइविच भी कहाँ माननेवाले थे, उन्होंने साबित कर दिखाया कि रेजीमेंट के कमाण्डर वे ही हैं और सारे 'लाल पताका' पदक उन्हें कामरेड बुद्योन्नी से मिले हैं और उन्होंने उन सबके सिर धड़ से अलग करने की धमकी दी जो पिताजी की शख़्सियत पर बहस कर रहे थे और उसे नहीं ले जाने दे रहे थे, हमारे साथ गये जवान भी डरा-धमका रहे थे। पर जैसे ही सेम्योन तिमोफ़ेइविच को पिताजी सौंप गये और वे पिताजी को कोड़े मारने लगे और उन्होंने अहाते में जवानों को खड़ा किया जैसा कि फ़ौजी कायदा है। और तब सेम्योन भैया ने हमारे पिता तिमोफेई रोदीओनिच की दाढ़ी पर पानी उड़ेल दिया और दाढ़ी से रंग टपकने लगा। और सेम्योन भैया ने तिमोफेई रोदीओनिच से पूछा :

"क्यों, पिताजी, मेरे चंगुल में आपको अच्छा लगे है?"

"'नहीं,' पिताजी बोले, 'हाल बुरा है मेरा।'

"'और फ़्योदोर को, जब आप उसकी बोटियाँ काट रहे थे, आपके चंगुल में अच्छा लगे था?'

"'नहीं,' पिताजी बोले, "फ़्योदोर का हाल बुरा था।'

"तब सेम्योन भैया ने पूछा :

"'आपने कभी सोचा था, पिताजी, कि आपका भी बुरा हाल होगा?'

"' नहीं,' पिताजी बोले, 'तब मैंने नहीं सोचा कि मेरा हाल बुरा हाल होगा।'

"तब सेम्योन भैया ने जमा हुए लोगों की ओर मुड़कर कहा :

"'मैं यही सोचता हूँ कि अगर मैं तुम्हारे वालों के चंगुल में पड़ गया तो उनमें से कोई भी मुझ पर रहम नहीं करेगा। और अब पिताजी हम आपका काम तमाम करेंगे...'

"और तिमोफेई रोदीओनिच बेहयाई के साथ सेम्योन भैया को माँ-बहन की गालियाँ बकने लगे और उनका भसरा छेतने लगे, तब सेम्योन तिमोफ़ेइविच ने मुझे अहाते से बाहर भेज दिया, इसलिये आदरणीय माताजी येव्दोकीया फ़्योदोरोव्ना, मैं आपको यह बखान नहीं कर सकता कि पिताजी का कैसे काम तमाम किया गया क्योंकि मुझे तो अहाते से बाहर भेज दिया गया था।

"इसके बाद हमने नोवोरोसीस्क शहर में पड़ाव डाला। इस शहर के बारे में यह कहा जा सकता है कि ज़मीन का सिरा यहीं है, आगे काले सागर का पानी ही पानी है, और हम वहाँ मई तक रहे जब हम पोलिश मोर्चे पर पहुँचे और यहाँ हम पोलिश सामन्तों की ऐसी की तैसी कर रहे हैं...

"आपका प्यारा बेटा वसीली तिमोफ़ेइविच कुदर्युकोव। अम्मा, स्त्योपा का रखियेगा और भगवान आपका भला करेगा।"

यही कुदर्युकोव की चिट्ठी थी, एक भी शब्द नहीं बदला गया। जब मैंने लिखना पूरा किया, उसने लिखावट से भरा क़ागज़ लिया और उसे तह करके नंगे बदन पर पहनी क़मीज़ के अन्दर छिपा लिया।

"कुदर्युकोव," मैंने लड़के से पूछा, "तेरा बाप गुस्सैल था?"

"बाप मेरा कटखना कुत्ता था," उसने कुढ़कर कहा।

"और माँ उससे अच्छी है?"

"माँ ठीक है। चाहते हो देखना, यह रही हमारी फैमिली..."

उसने मेरी ओर तुड़ा-मुड़ा फोटो बढ़ा दिया। उसमें तिमोफेई कुदर्युकोव जड़ बैठा था—वर्दी की टोपी लगाये चौड़े कन्धोंवाला कांस्टेबल, दाढ़ी कढ़ी हुई, गालों की हड्डियाँ उभरी हुई, चमकती नज़र से देखती फीकी और रिक्त आँखें। उसके पास बेंत की कुर्सी पर स्कर्ट के बाहर लटके ब्लाउज में छोटी सी देहाती औरत बैठी थी, कुम्हलाये नेक लजालू नाक-नक्श। और दीवार के पास ठेठ कस्बाई फोटो-स्टूडियो की फूलों

और कबूतरों की पृष्ठभूमि में दो लड़के नज़र आ रहे थे—बेहद तगड़े, मतिमन्द, चौड़े चेहरों और उभरी आँखोंवाले, परेड की तरह तनकर जड़ खड़े दो कुदर्युकोव बन्धु—फ़्योदोर और सेम्योन।

अश्व-रिजर्व अधिकारी

गाँव में हाहाकार मचता। रिसाला फसल कुचलता और घोड़े बदलता। अश्वारोही अपने मरियल घोड़ों के बदले किसानों से काम के घोड़े ले लेते। पर कोसें किसे। घोड़े के बिना तो फ़ौज होती नहीं। फिर भी इस चेतना से किसानों की मुसीबत तो कम होती नहीं किसान हमेशा हेडक्वार्टर की इमारत के सामने भीड़ लगाये रहते।

वे अड़ियल, अपनी अन्तिम घड़ियाँ गिनते क्षीण घोड़ों को रस्सी से खींचकर लाते। अपने अन्नदाताओं से वंचित किसान निराशा के उन्माद में साहसी हो जाते और वे जानते थे कि यह साहस शीघ्र ही काफूर हो जायेगा और वे दौड़े-दौड़ अधिकारियों, ईश्वर और अपनी फूटी किस्मत को खरी-खोटी सुनाने चले जाते।

हेडक्वार्टर का स्टाफ अधिकारी ज. वर्दी डाटे ओसारे पर खड़ा होता। सूजी पलकों को मूँदकर वह दिखावटी ध्यान के साथ किसानों की शिकायतें सुनता। पर उसका यह ध्यान चाल मात्र थी और कुछ नहीं। हरेक सधे और थकान से निढाल कर्मचारी की तरह उसे अपने अस्तित्व के शून्यता भरे क्षणों में दिमाग़ के काम को पूरी तरह बन्द करना आता था। इन मादक चिन्तन-मुक्त इक्के-दुक्के मिनटों के दौरान हमारा स्टाफ अधिकारी अपने दिमाग़ की घिसी-पिटी मशीन को झाड़ता-पोंछता। इस बार भी किसानों के साथ यही किस्सा हुआ।

उनके बेतरतीब और प्रचण्ड गुलगपाड़े की सान्त्वनाप्रद संगत में ज. तटस्थ भाव से दिमाग़ में उस मन्द उथल-पुथल का पर्यवेक्षण कर रहा था जो विचारों की निर्मलता और शक्ति का शकुन होती है। उचित अवसर आने पर जब किसान के पास बहाने को आँसू भी न बचे होते वह रौब के साथ उन्हें झिड़कता और अपने दफ़्तर में घुस जाता काम करने के लिये।

इस बार झिड़कने की नौबत ही न आयी। लाल चेहरे और सलेटी मूँछोंवाला, भूतपूर्व सर्कस कलाबाज और अब अश्व रिजर्व अधिकारी द्याकोव लपट की तरह लाल अपने आँग्ल-अरब नस्ल के घोड़े को दौड़ाता ओसारे के पास आया—कन्धों पर काला लबादा, रुपहली पट्टियोंवाली लाल बिरजिस।

"सब भड़वों का हो भला!" सरपट दौड़ते घोड़े की लगाम खींचकर वह चिल्लाया और उसी क्षण उसके पास कज़्ज़ाकों से बदले में मिला मरियल घोड़ा धराशायी हो गया।

"देखा, कामरेड अफ़सर," अपनी टाँगों पर हाथ मार-मारकर किसान चीखा, "देखा, तुम्हारे लोग हम जनों को क्या देते हैं... देखा, बदले में हमें क्या देते हैं? कर लो

खेती इससे...''

''अरे इस घोड़े के लिए,'' शब्दों को खींच-खींचकर, तौल-तौलकर दयाकोव तब बोला, ''इस घोड़े के लिए, यार मेरे, अश्व-रिजर्व से तुम पन्द्रह हज़ार रूबल पाने के पूरे हकदार हो, अगर यह थोड़ा चंचल होता तो, दोस्त मेरे, तुम्हें इसके पूरे बीस हज़ार रूबल मिल सकते थे अश्व-रिजर्व से। पर अगर घोड़ा गिर भी गया तो यह कोई बात नहीं। अगर घोड़ा गिर पड़ा और फिर उठ गया तो यह हुआ असली घोड़ा और अगर वह नहीं खड़ा होता, मेरे कहने का मतलब है, तो इसका नाम ही घोड़ा नहीं। पर मैं कहे देता हूँ कि इस बढ़िया घोड़ी को खड़ा करके दिखा दूँगा...''

''हे भगवान, ओ दीनों की रक्षक माँ मरियम!'' किसान हाथ हिला-हिलाकर बोला। ''इस बिचारी के बस में कहाँ है... यह बिचारी दम तोड़ देगी...''

''भैया, घोड़े को बदनाम मत कर,'' दयाकोव असीम विश्वास के साथ जवाब में बोला, ''भैया, तू तो ईश्वर ही को बदनाम कर रहा है,'' और उसने अपनी सुडौल काया को चपलता के साथ जीन से उतारा। घुटनों पर तस्मों से कसी अपनी सुघड़ टाँगों को सीधा करके, मंच पर शानदार और चपल कलाकार की तरह, वह दम तोड़ते पशु की ओर बढ़ा। पशु ने अपनी गहरी धँसी हताशाभरी आँख दयाकोव पर गड़ा दी, उसकी किरमिजी हथेली से कोई अदृश्य आदेश चाटा और तत्काल निढाल घोड़े को इस सलेटी बालोंवाले, फले-फूले बाँके रोमियो से बहती सधी शक्ति की अनुभूति हुई। थूथनी हिलाते और मुड़ती टाँगों पर फिसलते हुए, पेट पर चाबुक की बेसब्र और दबंग गुदगुदी को महसूस करते हुए मरियल घोड़ा धीरे-धीरे, ध्यान के साथ पैरों पर खड़ा हो रहा था। और हम सबने देखा कि कैसे चौड़ी, लहराती आस्तीन से निकली पतली कलाई ने गन्दली अयाल को थपथपाया और चाबुक सनसनाकर खून से रिसती बगलों से चिपक गया। थरथर काँपता मरियल घोड़ा अपनी टाँगों पर खड़ा था और उसकी कुत्ते जैसी, सहमी, मोहती आँखें दयाकोव पर टिकी थी।

''मतलब असली घोड़ा निकला,'' दयाकोव ने किसान से कहा और नरमी के साथ बोला, ''और तुम, यार मेरे, शिकायत कर रहे थे...'

अर्दली को लगाम थमाकर अश्व-रिजर्व अधिकारी एक ही छलाँग में चार सीढ़ियों को लाँघ गया और रंगमंचीय लबादे को फड़फड़ाकर हेडक्वार्टर की इमारत में ओझल हो गया।

श्रीमाल अपोलेक

श्रीमान अपोलेक की मोहक और बुद्धिवत जीवनी का मुझ पर वैसा ही असर हुआ जैसा पुरानी शराब का। नोवोग्राद-वोलीन्स्क में, जल्दबाजी में फतह किये गये इस शहर में, टेढ़े-मेढ़े खण्डहरों के बीच किस्मत ने दुनिया की नज़रों छिपी इंजील को मेरे पाँवों तले डाल दिया। भोले-भाले प्रभामण्डलों की दमक के बीच तब मैंने श्रीमान अपोलेक के उदाहरण का अनुकरण करने का व्रत ले डाला। और स्वप्निल विद्वेष की मधुरता, मनुष्यता के कुत्तों और सूअरों के प्रति कटु घृणा, मूक और सम्मोहक प्रतिशोध की ज्वाला मैंने नये व्रत के लिए इन सबका बलिदान कर दिया।

नोवोग्राद के फ़रार पादरी के घर की दीवार पर क़ाफी ऊँचाई पर चित्र टँगा था। उस पर लिखा था 'योहन्ना बप्तिस्मादाता का देहावसान'। योहन्ना की छवि में मैं झट से उस व्यक्ति को पहचान गया जिसे मैंने पहले कभी देखा था।

मुझे याद आता है : सीधी और उजली दीवारों के बीच ग्रीष्म की सुबह की नीरवता मकड़ी के जाले की तरह भरी थी। सूर्य ने चित्र के चरणों पर किरण-पुंज चढ़ा दिया था। उसमें चमकते धूलिकणों का झुण्ड मँडरा रहा था। योहन्ना की दीर्घ आकृति आले की नील गहराई से सीधे मेरे ऊपर उतर रही थी। इस अटल, घिनौनी सूखी देह पर काला लबादा आडम्बर के साथ लटका था। लबादे के गोल बकसुओं पर खून की बूँदें चमक रही थीं। योहन्ना का सिर छिली गर्दन से तिरछा कटा था। वह मिट्टी की तश्तरी में पड़ा था जिसे सैनिक की बड़ी-बड़ी पीली उँगलियों ने कसकर पकड़ा हुआ था। मृतक का चेहरा मुझे जाना-पहचाना सा लगा। मुझे किसी रहस्य की पूर्वानुभूति हुई। मिट्टी की तश्तरी में फ़रार पादरी के सहायक श्रीमान् रोमुआल्द से उतरा मृत सिर रखा था। उसके खींसे निपोड़े मुँह से रंगबिरंगी केंचुली को चमकाता साँप का छोटा-सा धड़ लटका था। साँप का हल्का-सा गुलाबी, सजीवतापूर्ण सिर लबादे की घनी पृष्ठभूमि पर हावी था।

मैं चितेरे की दक्षता और उसक मनहूस कल्पना से चकित रह गया। अगले दिन पुराने पादरी की भण्डारिन श्रीमती एलीज़ा की दाम्पत्य शय्या के ऊपर लटका लाल-लाल गालोंवाली 'होली मदर' का चित्र मुझे और भी आश्चर्यजनक लगा। दोनों ही चित्रों पर एक ही तूलिका की छाप थी। 'होली मदर' का मांसल चेहरा श्रीमती एलीज़ा का ही छवि चित्र था। और यहीं मैं नोवोग्राद के देवचित्रों की गुत्थी सुलझने से काफ़ी पास पहुँच गया। गुत्थी की कुंजी श्रीमती एलीज़ा की रसोई में थी जहाँ महकती शामों को पुराने, दासों-गुलामों वाले पोलैण्ड की परछाइयाँ पगले चित्रकार की अगुआई में जमा होतीं। पर क्या श्रीमान अपोलेक, जिसने आस-पास के गाँवों में फरिश्तों को बसा दिया और अपना धर्म त्यागनेवाले लंगड़े यानेक को सन्त बना दिया, सचमुच ही पगला था?

तीस साल पहले, गर्मियों के एक मामूली दिन अंधे गोटफ्रिड के साथ वह यहाँ आया था। अपोलेक और गोटफ्रिड—दोनों यार श्मेरेल के भटियारखाने के पास पहुँचे जो रोव्नो जानेवाले राजमार्ग पर शहर की सरहद से कोई दो मील की दूरी पर है। अपोलेक के दायें हाथ में रंगों का बक्सा था, बायें हाथ से वह अन्धे हार्मोनिका वादक का हाथ पकड़कर चल रहा था। उनके कीलों से जड़े ज[illegible] जूतों की कदम ताल में चैन और आशा की गूँज हो रही थी। अपोलेक की पतली गर्दन पर पीला स्कार्फ

लिपटा था, अन्धे की टोपी पर तीन कत्थई पंख डोल रहे थे।

भटियारखाने में आगन्तुकों ने खिड़की के दासे पर रंग और हार्मोनिका रख दिये। चितेरे ने अपना स्कार्फ खोला, जो मेलों में हाथ की सफाई दिखानेवाले बाजीगरों के फीते जैसा लम्बा निकला। फिर वह आँगन में निकला, सारे कपड़े उतार डाले और ठण्डे पानी से अपनी गुलाबी, संकरी, क्षीण देह को स्नान कराया। श्मेरेल की पत्नी ने अतिथियों के सामने किशमिश की वोद्का और भरवाँ कटलेटों की तश्तरी लाकर रखी। भरपेट खा-पीकर गोटफ्रिड ने अपने हड़ीले घुटनों पर हार्मोनिका टिकायी। उसने उसाँस छोड़ी, सिर को पीछ झुकाया और दुबली उँगलियाँ हिलायीं यहूदी भटियारखाने में हेडलबर्ग के गीत गूँजने लगे। अपोलेक कँपकँपाते स्वर में अन्धे की संगत में गा रहा था। यह सब ऐसे लग रहा था माना सेंट इंडेहिल्डा कैथीड्रल से उठाकर आर्गन श्मेरेल के यहाँ लाया गया हो और कला देवियाँ चटकीले सूती स्कार्फ लेपेटे और नाल जड़े जर्मन जूते पहनकर अगल-बगल में बैठी आर्गन बजा रही हों।

अतिथि सूर्यास्त तक गाते-बजाते रहे, फिर उन्होंने किरमिच के थैलों में हार्मोनिका और रंग रखे और श्रीमान् अपोलेक ने नीचे तक झुककर भटियारे की बीवी ब्रायना को क़ागज़ का एक टुकड़ा थमा दिया।

"आदरणीय श्रीमती ब्रायना," वह बोला, "यायावर चित्रकार की ओर से, जिसे बपतिस्मे के समय अपोल्लिनारी नाम दिया गया, यह स्वीकार करें, आपका यह चित्र हमारी नम्र कृतज्ञता का प्रतीक, आपकी भव्य अतिथिपरायणता का प्रमाण है। अगर प्रभु यीशु मेरी उम्र बढ़ायें और मेरी कला को बल दें तो मैं आपका रंगीन चित्र बनाने के लिये लौटूँगा। आपके बालों में मोती खूब फबेंगे और सीने पर हम पन्ने का हार बना देंगे..."

क़ागज़ के छोटे-से टुकड़े पर लाल पेंसिल से, मिट्टी की तरह मुलायम लाल पेंसिल से श्रीमती ब्रायना का ताम्र काकुलों से घिरा चेहरा चित्रित था।

"मेरे पैसे!" पत्नी का चित्र देखकर श्मेरेल चिल्लाया। उसने लाठी उठायी और गाहकों के पीछे दौड़ पड़ा। पर रास्ते में श्मेरेल को अपोलेक का पानी में नहाया गुलाबी बदन और अपने आँगन में चमकती धूप और हार्मोनिका की मन्द-मन्द सुर-लहरी की याद आ गयी। भटियारा मन ही मन झेंप गया और लाठी पटककर घर लौट आया।

अगली सुबह अपोलेक ने नोवोग्राद के पादरी के सम्मुख म्यूनिख अकादमी की शिक्षा का डिप्लोमा प्रस्तुत किया और उसके सामने बाइबिल पर बारह चित्र बिछा दिये। ये चित्र तेल रंगों से सरू की लकड़ी के पतले तख़्तों पर बने थे। फ़ादर को अपनी मेज पर लबादों का दहकता सिन्दूर, पन्ने सरीखे खेतों की दमक और फलस्तीन के मैदानों पर बिछी फूलों की रंगबिरंगी चादरें दिखायी दीं।

श्रीमान् अपोलेक के संत, आह्लादित और सीधे-सादे, सफेद दाढ़ियों और लाल चेहरों वाले इन वृद्धों का पूरा गुट्ट रेशम के थानों और गहरी शामों की नीलिमा में ठुँसा हुआ था।

उसी दिन श्रीमान् अपोलेक को नये गिरजे की सज्जा का आर्डर मिल गया। और बेनेडिक्टाइन मदिरा के रसपान के समय फ़ादर चित्रकार से बोला।

"संत मरीया की कसम," वह बोला, "श्रीमान् अपोल्लिनारी, यह हमारा अहोभाग्य है कि आपने हमारे यहाँ पदार्पण करके हमें धन्य किया..."

अपोलेक ने लगन के साथ काम किया और एक ही महीने बाद नया गिरजा रेवड़ों की में-में, सूर्यास्तों के धूलधूसति सोने और गायों के पीत थनों से भर गया। छिली-कटी खालवाले भैंसे छकड़ों को खींचे जा रहे थे, गुलाबी थूथनियों वाले कुत्ते रेवड़ के आगे-आगे दौड़ रहे थे और खजूर के सीधे तनों से टँगे पालनों में मोटे-मोटे शिशु झूल रहे थे। फ्रांसिस्कनों के मोटे कत्थई लबादे पालने को घेरे हुए थे। मजूसियों के झुण्ड में गंजी टाँटें और घावों की तरह लाल झुर्रियाँ चमक रही थीं। मजूसियों के झुण्ड में शातिराना मुस्कान के साथ पोप लिओ तेरहवें का बुढ़ियों जैसा चेहरा टिमटिमा रहा था और नोवोग्राद का पादरी भी एक हाथ से चीन की नक्काशीदार माला जप रहा था और दूसरे, खाली हाथ से नवजात यीशु को आशीर्वाद दे रहा था।

पाँच महीने अपोलेक अपने लकड़ी के हिंडोले में जकड़ा दीवारों के सहारे-सहारे, गुम्बद की छत के सहारे-सहारे, कोरस के छज्जों पर रेंगता रहा।

"आपको परिचित चेहरों से बड़ी आसक्ति है, श्रीमान् अपोलेक," एक बार एक मजूसी में अपने को और योहन्ना के कटे सिर में श्रीमान रोमुआल्द को पहचानकर पादरी बोला। बूढ़ा पादरी मुस्करा दिया और उसने गुम्बद की छत पर काम करते चित्रकार को ब्रांडी का एक गिलास भिजवा दिया।

फिर अपोलेक ने 'अन्तिम भोज' और 'मगदल्ला की मरीया पर पत्थर-वर्षा' के चित्र बनाये। एक रविवार को उसने चित्रों से अलंकृत दीवारें खोल दीं। पादरी द्वारा आमंत्रित गणमान्य नागरिकों ने अपोस्तोल पाल के रूप में लँगड़े स्वधर्मत्यागी यानेक और मरीया मगदल्लीना के रूप में यहूदी युवती एल्का—अज्ञात माँ-बाप की बेटी और ढेरों नाजायज बच्चों की माँ को पहचान लिया। गणमान्य नागरिकों ने ईशनिन्दात्मक चित्रों को ढँकने का आदेश दिया। पादरी ने ईशनिन्दक पर धमकियों की बौछार कर दी। पर श्रीमान् अपोलेक ने भित्तिचित्रों को नहीं ढका।

इस प्रकार एक ओर से कैथोलिक गिरजे की शक्तिशाली व्यवस्था और दूसरी ओर से देवों के चित्र बनानेवाले चितेरे के बीच अपूर्व,अनसुना युद्ध छिड़ गया। वह तीन दशकों तक जारी रहा। संयोग लम्पट मनमौजी को नये विधर्म का प्रवर्तक बनाते-बनाते रह गया, तब यह रोमन कैथोलिक चर्च के कुटिल और अशान्त इतिहास में अब तक ज्ञात सबसे अजीबोगरीब और हास्यास्पद योद्धा होता—परमानन्द के नशे में छाती से दो सफ़ेद चूहे चिपकाये और जेब में महीन से महीन कूचियों का सेट

डाले धरती को नापनेवाला योद्धा।

"होली मदर' के पन्द्रह ज्लोती, 'होली फैमिली' के पच्चीस ज्लोती और गाहक के सभी रिश्तेदारों के चेहरोंवाले 'अन्तिम भोज' के पचास ज्लोती। गाहक का दुश्मन जूडस के रूप में चित्रित किया जा सकता है, इसके लिए ऊपर से दस ज्लोती देने होंगे," जब उसे निर्माणाधीन गिरजे से निकाल दिया गया, अपोलेक ने आसपास के किसानों के बीच यह घोषणा कर दी।

आर्डरों की उसे कोई कमी न थ। और जब एक साल बाद, नोवोग्राद के पादरी के उन्मत्त सन्देश पाकर झीतोमीर के बिशप द्वारा भेजा गया आयोग वहाँ आया तो उसे दरिद्र से दरिद्र और बदबूदार घरों तक में ये वीभत्स, देवद्रोही, भोले और रंगबिरंगे पारिवारिक चित्र देखने को मिले। बीच में माँग काढ़े खिचड़ी बालोंवाले योसफ, साज-सिंगार किये यीशु, ढेरों बच्चों को जन्म दे चुकी, घुटने चौड़े किये देहाती मरियमें पूजा के कोनों में क़ागज़ के फूलों की मालाओं से घिरी विराजमान थीं।

"उसने तो तुम्हें जीते जी संत बना डाला!" अपोलेक की हिमायत करनेवाली भीड़ से दूबेन नोवोकोंस्तान्तीन का विकर चिल्लाकर बोला। "उसने तुम्हें पापियों, चोरी की शराब खींचनेवालों, बेरहम सूदखोरों, डंडीमारों और अपनी बेटियों की देह बेचनेवालों को पूजा का पात्र बना डाला!"

"महामहिम," तब लंगड़ा वितोल्द–कब्रिस्तान का चौकीदार और चोरी के माल का दलाल–विकर से बोला, "दीनदयाल प्रभु का सत्य क्या है, यह कौन बतायेगा अज्ञानी जनता को? क्या श्रीमान् अपोलेक के चित्रों में जो हमारे गर्व की तुष्टि करते हैं आपकी गालियों और मालिकाना गुस्से से अधिक सत्य नहीं है?"

भीड़ के व्यंग्यबाणों ने विकर के पैर उखाड़ दिये। उपनगरीय इलाकों के लोगों की मनोवृति गिरजे के सेवकों की सुरक्षा के लिए ख़तरनाक थी। अपोलेक के स्थान पर आमंत्रित चित्रकार एल्का और लंगड़े यानेक को पोतने का निश्चय न कर पाया। उन्हें अब भी नोवोग्राद के कैथीड्रल के बगलवाले हिस्से में देखा जा सकता है : अपोस्टल पाल के रूप में काली चिथड़ों जैसी दाढ़ीवाले डरपोक लँगड़े, गाँव के विधर्मी यानेक को और उसे, मगदल्ला की वेश्या, दुबली और पगली, नाचते बदन और पिचके गालों वाली को।

पादरी से संघर्ष तीन दशक तक जारी रहा। फिर कज़्ज़ाकों की बाढ़ ने बूढ़े पादरी को उसके पत्थर के बू भरे नीड़ से भगा दिया और अपोलेक ने–किस्मत का खेल तो देखो!–श्रीमती एलीज़ा की रसोई में डेरा डाल दिया। और मैं, क्षणिक अतिथि, शामों को उसकी बातों की मदिरा का रसपान करता हूँ।

बातें–किस विषय में? पोलिश सामन्तों के रोमानी जमाने के बारे में, तिरियाचरित के बारे में, चित्रकार लूका डेल राब्बिओ और बेथलहम के बढ़ई के परिवार के बारे में।*

"मैं श्रीमान् क्लर्क को एक बात बताना चाहता हूँ..." रात के खाने से पहले अपोलेक ने रहस्यपूर्ण ढंग से मुझसे कहा।

"अच्छा," मैं बोला, "ठीक है, अपोलेक, मैं आपको सुन रहा हूँ कान लगाकर..."

पर गिरजे का नौकर रोबात्स्की, गम्भीर और धूसर, हड़ीला और बड़े-बड़े कानोंवाला व्यक्ति हमारे बहुत पास बैठा था। वह हमारे सामने मौन और घृणा के फीके पटल टाँग रहा था।

"मैं श्रीमान को बताना चाहता हूँ," अपोलेक फुसफुसाते हुए मुझे एक कोने में ले गया, "कि यीशु, मरीया का बेटा, येरुशलम के एक मामूली खानदान की लड़की देबोरा से विवाहित था..."

"अरे, यह आदमी!" श्रीमान् रोबात्स्की निराशा भरे स्वर में चिल्लाया, "इस आदमी की मौत अपने बिस्तर में नहीं होगी... इस आदमी को लोग जान से मार डालेंगे..."

"खाने के बाद," निस्तेज स्वर में अपोलेक बुदबुदाया, "खाने के बाद अगर श्रीमान् क्लर्क की इच्छा होगी..."

मेरी इच्छा थी। अपोलेक के किस्से की शुरुआत से उत्तेजित मैं रसोई में टहलते हुए वांछित घड़ी की प्रतीक्षा करने लगा। खिड़की के बाहर रात काले स्तम्भ की तरह खड़ी थी। बाहर सजीव और अँधेरा बाग ठण्ड में ठिठुर रहा था। गिरजे की सड़क चाँदनी में चमकती दूधिया धारा की तरह बहती लग रही थी। ज़मीन पर मनहूस चमक बिछी थी, झाड़ियों पर बेरियों की दमकती लड़ियाँ लटकी थीं। कुमुदिनियों की सुगन्ध स्पिरिट की तरह निर्मल और तीखी थी। यह ताजा ज़हर अँगीठी की वसायुक्त, उमड़ती साँस में घुल रहा था और रसोई में बिखरी देवदार की लकड़ियों की बिरोजायुक्त घुटन को निर्जीव बना रहा था।

गुलाबी गुलुबन्द बाँधे और घिसी गुलाबी पतलून पहने अपोलेक अपने कोने में किसी दयालु और भव्य पशु की तरह खटर-पटर कर रहा था। उसकी मेज गोंद और रंगों से सनी हुई थी। बुड्ढा जल्दी-जल्दी हाथ चलाता काम कर रहा था, उसके कोने से अत्यन्त धीमी ताल सुनाई दे रही थी। बूढ़ा गोटफ्रिड उसे अपनी फड़कती उँगलियों से निकाल रहा था। अन्धा लालटेन की पीली, तैलीय चमक में जड़ बैठा था। अपना गंजा सिर झुकाकर वह अपने अन्धेपन का अनन्त संगीत और शाश्वत मित्र अपोलेक की बड़बड़ाहट सुन रहा था।

"... और वह सब जो श्रीमान् को पादरी और सुसमाचारक मार्क और सुसमाचारक मत्ती कहते हैं–वह सच नहीं है... पर श्रीमान् क्लर्क के लिए सच्चाई पर से परदा हटाया जा सकता है, जिनका मैं पचास मार्क में हरियाली और आकाश की पृष्ठभूमि में सन्त फ्रांसिस्को के रूप में चित्र बनाने को तैयार हूँ। यह श्रीमान फ्रांसिस्को बड़ा सीधा-सादा सन्त था। और अगर श्रीमान् क्लर्क की रूस में मंगेतर है... औरतों को

* जिसमें ईसा मसीह ने जन्म लिया।

संत फ्रांसिस्को प्यारा है, हालाँकि सभी औरतों को नहीं, श्रीमान्..."

देवदार की लकड़ी की गन्धवाले कोने में इसी प्रकार यीशु और देबोरा के विवाह के बारे में किस्सा शुरू हुआ। बकौल श्रीमान् अपोलेक के, इस लड़की का वर था। उसका वर एक युवा इस्रायली था जो हाथीदाँत का व्यापार करता था। पर देबोरा की सुहाग-रात का अन्त विस्मय और आँसुओं से हुआ। औरत को भय ने जकड़ लिया जब उसने पति को अपनी शय्या के पास आता देखा। उसका जी मतला गया। उसने जो कुछ शादी की दावत में खाया उसकी उल्टी कर दी। देबोरा की, उसके बाप की, उसकी माँ की और उसके सारे कुनबे की नाक काट गयी। दूल्हे ने उपहास करके उसे त्याग दिया और अपने अतिथियों को बुलाकर वहाँ से चला गया। तब यीशु ने पति के लिए आतुर और उससे डरनेवाली औरत की व्यथा देखकर स्वयं दूल्हे का परिधान धारण किया और सहानुभूति से ओतप्रोत होकर उल्टी में सनी देबोरा के साथ रतिक्रीड़ा में लीन हो गया। फिर वह अपने पतन पर गर्व करनेवाली औरत की तरह तुमुल विजयोल्लास के साथ बाहर निकली जहाँ मेहमान जमा थे। बस यीशु ही एक ओर हटकर खड़ा था। उसका बदन मौत के पसीने से तर हो गया, वेदना की मधुमक्खी ने उसके दिल को डंक मार दिया। किसी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया और वह दावत से निकला और यहूदा के पूरब में रेगिस्तानी देश में चला गया जहाँ योहन्ना उसकी बाट जोह रहा था। और देबोरा ने बेटे को जन्म दिया...

"कहाँ है वह?" मैं चिल्ला पड़ा।

"उसे पादरियों ने छिपा दिया," अपोलेक ने अकड़कर कहा और अपनी शराबियोंवाली नाक के पास पतली और काँपती उँगली ले गया।

"श्रीमान चित्रकार," अचानक अँधेरे से उठते हुए रोबात्स्की चिल्लाकर बोला, उसके सलेटी कान हिलने लगे, "आप क्या कहते हैं? यह हरगिज नहीं हो सकता..."

"ठीक कह रहा हूँ, बिल्कुल ठीक," अपोलेक ने दुबककर गोटफ्रिड का हाथ पकड़ लिया, "ठीक, ठीक बात है, जनाब..."

वह अन्धे को दरवाज़े की ओर घसीटकर ले चला पर दहलीज पर रुककर उसने मुझे उँगली से इशारा करके बुलाया।

"सन्त फ्रांसिस्को," वह आँखों को मिचमिचाते हुए फुसफुसाकर बोला, "बाँह पर चिड़िया बैठी होगी, कबूतर या कोई और, जैसी श्रीमान् क्लर्क की इच्छा होगी..."

और वह अपने अन्धे और शाश्वत मित्र के साथ अदृश्य हो गया।

"पगला है!" तब गिरजे का सेवक रोबात्स्की बोला, "इस आदमी की मौत बिस्तर में नहीं होगी..."

श्रीमान् रोबात्स्की ने मुँह चौड़ा खोला और बिल्ली की तरह उबासी ली। मैं विदा लेकर रात बिताने के लिए घर चल दिया, अपने फटीचर यहूदियों के यहाँ।

शहर में आवारा चाँद भटक रहा था। और मैं उसके साथ अपने साकार न हो

सकनेवाले सपनों और अधूरे गीतों को दिल में सँजोये चल रहा था।

इटली की सुहानी धूप

कल मैं फिर से श्रीमती एलीज़ा की रसोई में देवदार की हरी टहनियों के तपे मण्डप तले बैठा था। मैं गर्म, लपलपाती-बुदबुदाती अँगीठी के पास बैठा था और फिर बड़ी रात गये अपने घर के लिये रवाना हुआ। नीचे, कगार के पास शान्त ज़्ब्रूच अपनी काली, काँच जैसी लहरों को ठेल रही थी।

चिड़चिड़ी बुढ़ियों की ज़मीन में गड़ी तर्जनियों जैसे टेढ़े-मेढ़े स्तम्भोंवाला जला शहर सपने की तरह हवा में तैरता, आरामदेह और अद्भुत लग रहा था। चाँद की नग्न चाँदनी अजस्र ऊर्जा के साथ उस पर बरस रही थी। खण्डहरों की नम काई रंगमंच की बेंच के संगमरमर की तरह दमक रही थी। और मैं व्याकुल मन से बादलों के पर्दे के पीछे से प्रेम का गीत गाते रोमियो के, अतलसी रोमियो के मंच पर पदार्पण की प्रतीक्षा कर रहा था और पार्श्व में कहीं नीरस बिजलीवाला चाँद के स्विच पर उँगली टिकाये खड़ा होगा।

नीलाभ सड़कें मेरे पास से ढेरों स्तनों से फूटी दूध की धाराओं की तरह बहती-सी जा रही थीं। घर लौटते समय मुझे अपने पड़ोसी सीदोरोव से भेंट का डर लग रहा था जो रातों को मुझ पर अपने विषाद का झबरीला पंजा रख देता। सौभाग्य से, चाँद के दूध से क्षत-विक्षत उस रात सीदोरोव के मुँह से एक भी शब्द नहीं झड़ा। किताबों से घिरा वह कुछ लिख रहा था। मेज पर स्वप्नदर्शियों के लिये चिता की तरह कुबड़ी मोमबत्ती जल रही थी। मैं एक ओर बैठा ऊँघ रहा था, सपने बिल्ली के बच्चों की तरह मेरे इर्द-गिर्द धमाचौकड़ी मचा रहे थे। और काफ़ी रात गये ही अर्दली ने मुझे जगा दिया जो सीदोरोव के लिये हेडक्वार्टर से बुलावा लेकर आया था। वे दोनों साथ चले गये। तब मैं दौड़ा-दौड़ा मेज के पास गया जहाँ बैठा सीदोरोव लिख रहा था और किताबें उलटी-पलटीं। यह इटालियन की पाठ्यपुस्तक, रोम के फोरम का चित्र और रोम का नक्शा था। सारा नक्शा काटे के निशानों और बिन्दुओं से पटा था। मैं लिखाई से ढके पन्ने के ऊपर झुक गया और साँस रोककर उँगलियाँ चटखाते हुए पराया खत पढ़ डाला। उदास हत्यारे सीदोरोव ने मेरी कल्पना की गुलाबी रूई के चिथड़े-चिथड़े कर डाले और मुझे खींचकर अपने अक्लमन्द पगलेपन के गलियारों में ले गया। ख़त दूसरे पन्ने से शुरू हो रहा था, मुझे शुरू का पन्ना खोजने का साहस न हुआ :

"... फेफड़ा बिंध गया और कुछ-कुछ पगला-सा गया या बकौल सेर्गेई के दिमाग़ का पेंच ढीला हो गया। सचमुच यह बुद्ध दिमाग़ फिर तो सकता नहीं। अच्छा मजाक छोड़ो एक तरफ़... मित्र मेरी, विक्तोरिया, आओ, अब आज के एजेंडा पर गौर करें...

"मैंने मख्नों के साथ तीन महीने के अभियान में भाग लिया—उबाऊ धोखाधड़ी के अलावा उसे और कुछ नहीं कहा जा सकता... बस वोलिन ही अभी तक वहाँ है। वोलिन अपोस्टलों के लबादे डाटकर अराजकतावादियों का लेनिन बनने के लिये एड़ी-चोटी एक कर रहा है। बड़ी भयंकर बात है। पर बप्पा मख्नो उसको सुनता है, अपनी धूल से भरी तार जैसी लटों को सहलाता है और गँवारों की तरह अपनी सड़ी खींसें निपोड़ता है। और अब मुझे नहीं पता कि यह सब अराजकतावाद का विषैला बीज ही है और हम स्वयंभू राजधानी की made in ख़ार्कोव स्वयंभू केन्द्रीय समिति के स्वयंभू कार्यकर्त्ता तुम्हारी ऊँची नाकों चने चबवा पायेंगे या नहीं। तुम्हारे जिगरी यार अब अपनी अराजकतावादी जवानी के पापों को याद करना पसन्द नहीं करते और राजकीय विवेक की ऊँचाई से उनकी हँसी उड़ाते हैं—भाड़ में जाये मेरी बला से...

"और फिर मैं मास्को पहुँच गया। मैं मास्को कैसे पहुँचा? अधिग्रहण के और किसी दूसरे मामले में हमारे लोग किसी को सता रहे थे। मैं अनाड़ी बीच में आ गया। बस हो गयी मेरी हजामत। गनीमत है कि चोट मामूली थी पर मास्को में, आह, विक्तोरिया, मास्को में मैं बदकिस्मती का शिकार बन गया। रोज़ अस्पताल की नर्सें मुझे खाने को दलिये के दो दाने देतीं। वे उसे बड़ी ट्रे में ऐसे उठाकर लातीं मानो पूजा का थाली ला रही हों और मुझे इस प्रगतिशील दलिये, योजना के अतिरिक्त आपूर्ति और योजनानुसार रहनेवाले मास्को से नफरत हो गयी। बाद में सोवियत में मेरी मुट्ठी भर अराजकतावादियों से भेंट हुई। वे छैले या सठियाये बुड्ढे है। असली काम की योजना लेकर क्रेमलिन में मुँह उठाये पहुँच गया। वहाँ मेरा सिर सहलाकर वादा किया गया कि अगर मैं सुधर गया तो मुझे उपाध्यक्ष बना देंगे। मैं नहीं सुधरा। आगे क्या हुआ? आगे मोर्चा, अश्वसेना और कच्चे खून और आदम मांस की बदबू भरे फ़ौजी।

"विक्टोरिया, मुझे बचा लीजिये। राजकीय विवेक से मैं पागल हो रहा हूँ, ऊब से मदहोश। आप नहीं मदद करेंगे और मैं बिना किसी योजना के ही दम तोड़ दूँगा। कौन चाहेगा कि योद्धा इतने असंगठित ढंग से दम तोड़ दे, आख़िर आप विक्टोरिया, मंगेतर के नाते तो यह चाहेंगी नहीं कि कभी भी पत्नी न बनें। देखा, भावुक हो उठा मैं, भाड़ में जाये यह भावुकता...

"अब काम की बात करेंगे। फ़ौज में मुझे ऊब होती है। घाव की वजह से घुड़सवारी मैं नहीं कर सकता, मतलब लड़ भी नहीं सकता। विक्टोरिया, अपनी पहुँच का प्रयोग करके मुझे इटली भिजवा दीजिये। भाषा वहाँ की मैं सीख रहा हूँ और दो महीने बाद मैं उसमें बोलने लगूँगा। इटली में ज़मीन बहुत हद तक तैयार है। बस दो एक गोलियाँ चलने की कसर है। उनमें से एक मैं चला दूँगा। वहाँ के राजा को उसके पुरखों के पास भिजवाना चाहिये। यह बेहद ज़रूरी है। उनका राजा भी बड़ा मजेदार बन्दा है, वह लोकप्रियता का खेल खेलता है और पालतू सोशलिस्टों के साथ खड़ा होकर

पारिवारिक पत्रिकाओं में छपवाने के लिये फोटो खिंचवाता है।

"केन्द्रीय समिति और विदेश मंत्रालय में आप गोली-वोली, राजा-वाजाओं के बारे में कुछ मत कहिएगा। वे आपका सिर सहलाकर बुदबुदायेंगे : 'रोमानी तबीयत का आदमी है।' बस यह कह दीजियेगा कि बीमार है, ऊब की वजह से चिड़चिड़ा और मदहोश है, उसे इटली की सुहानी धूप और केलों की इच्छा है। आख़िर मैं इसके काबिल हूँ या नहीं हूँ इसके काबिल? बस इलाज के लिये। अगर नहीं तो मुझे ओदेस्सा के चेका* में भेज दें... वह बड़े काम का है और...

"कितनी बेवकूफी भरी, कितनी बेहूदगी और बेवकूफी भरी बातें मैं लिख रहा हूँ, मित्र मेरी विक्तोरिया...

"इटली मेरे मन पर सनक की तरह सवार हो गया है। इस अनदेखे देश का विचार मेरे लिये औरत के नाम, आपके, विक्तोरिया, नाम की तरह ही मधुर है..."

मैं खत पढ़कर अपनी पिचकी गंदी शय्या पर सोने की तैयारी करने लगा पर नींद नहीं आयी। बगल के कमरें में गर्भवती यहूदिन फूट-फूटकर रो रही थी, उत्तर में उसका लम्बू पति कराह-कराहकर बड़बड़ा रहा था। वे लुटे माल को याद कर रहे थे और अपने दुर्भाग्य के लिये एक-दूसरे को कोस रहे थे। बाद में, पौ फटने से कुछ पहले सीदोरोव लौटा। मेज पर पूरी जल चुकी मोमबत्ती आख़िरी साँस ले रही थी। सीदोरोव ने अपने घुटनों तक ऊँचे बूट से मोमबत्ती का एक और टुकड़ा निकाला और अनन्य सोच में डूबे उसे पिघली मोमबत्ती पर थोप दिया। हमारा कमरा अँधेरा, मनहूस था, हर चीज़ में रात की सीलन की बू बसी थी, बस चाँदनी से भरी खिड़की ही मोचन की तरह दमक रही थी।

उसने, मेरे दुर्वह पड़ोसी ने लौटकर चिट्ठी छिपा दी। पीठ झुकाकर वह मेज पर बैठ गया और रोम के चित्रों की एल्बम खोली। सुनहरी किनारीवाली भव्य पुस्तक उसके जैतूनी, भावशून्य चेहरे के सामने टिकी थी। उसकी धनुषाकार पीठ के ऊपर से केपिटल के दाँतेदार खण्डहर और सूर्यास्त से आलोकित सर्कस का अखाड़ा चमक रहे थे। शाही परिवार का फोटो भी वहीं चमकीले पन्नो के बीच रखा था। कलैण्डर से काटे गये क़ागज़ के टुकड़े पर अपनी काले बालों वाली पत्नी, युवराज उम्बेर्टो और ढेरों राजकुमारियों के साथ दुबला-पतला मिलनसार राजा विक्टर-एम्मानुईल छायांकित था।

...सुदूर और बेझिन स्वरों-नादों से गुंजायमान रात छायी है, नम अंधकार में प्रकाश का चौकोर चमक रहा है और उसकी पृष्ठभूमि में सीदोरोव का निर्जीव मुखौटे जैसा चेहरा मोमबत्ती की पीली लौ के ऊपर लटका है।

* प्रतिक्रान्ति से संघर्ष का आपात आयोग।

गेदाली

शनिवारों की पूर्वसंध्या में मुझे यादों की घनी वेदना सताती है। कभी मेरे दादा जी इन संध्याओं को अपनी पीली दाढ़ी से इब्न एज़्रा के ग्रन्थों को सहलाते थे। सिर पर लेस की ओढ़नी डाले बुढ़िया सबाथ की मोमबत्ती की लौ के ऊपर अपनी गठीली उँगलियों से टोना करती और पुलकित होकर रोती। इन शामों को मेरा बाल हृदय जादुई लहरों पर नन्हे पोत की तरह डोलता...

मैं झीतोमोर के चक्कर काटता सहमे सितारे को ढूँढ रहा हूँ। प्राचीन यहूदी मन्दिर—सिनानाग के पास, उसकी पीली उदासीन दीवारों की छाया में बूढ़े, सन्तों जैसी दाढ़ियोंवाले पिचकी छातियों को सनक भरे चिथड़ों से ढके यहूदी खड़िया, नील, लालटेन की बत्तियाँ बेचा करते हैं...

यह रहा मेरे सामने बाज़ार और बाज़ार की मौत। समृद्धि की पुष्ट आत्मा की हत्या हो गयी। दुकानों पर मूक ताले लटके हैं और सड़क के पत्थर मुर्दे की टाँट की तरह सफाचट हैं। वह सहमा सितारा टिमटिमाकर बुझ रहा है...

मेरी किस्मत बाद में खुली, वह सूर्यास्त के ऐन पहले खुली। गेदाली की दुकान बन्द कटरों में दुबकी थी। डिकेन्स, उस शाम तेरा प्रेत कहाँ था? तू इस दुकान में पुरानी जरी की जूतियाँ और जहाजों के रस्से, पुराने जमाने की कम्पास और भूस भरा उकाब, शिकार खेलने की विंचेस्टर रायफल, जिस पर "1810" का वर्ष खुदा था और फूटा भगौना देख सकता।

बूढ़ा गेदाली—इस ख़जाने का नाटा मालिक—आँखों पर धूमिल काँच का चश्मा चढ़ाये और फ़र्श तक लटका हरा कोट पहने शाम की गुलाबी शून्यता में अपनी निधि की परिक्रमा कर रहा था। वह अपने गोरे हाथों को मसलता, अपनी सलेटी दाढ़ी को नोचता और उसके कानों तक उड़कर आते अदृश्य स्वरों को सिर झुकाकर सुनता।

यह दुकान किसी जिज्ञासु और मेधावी बालक की पिटारी की तरह थी जो बड़ा होकर वनस्पतिविज्ञान का प्रोफ़ेसर बनेगा। इस दुकान में बटन भी थे और मरी तितली भी। उसके नाटे मालिक का नाम था गेदाली। सब बाज़ार छोड़ गये, गेदाली रह गया। वह ग्लोबों, खोपड़ियों और मरे फूलों की भूलभुलैयाँ में मुर्ग़े के रंगबिरंगे परों के ब्रुश को हिलाता, निर्जीव फूलों को फूँककर जमी धूल उड़ाता, बल खाता, इठलाता जा रहा था।

हम बीयर के पीपों पर बैठे थे। गेदाली अपनी पतली दाढ़ी को कभी लपेटता तो कभी खोलता। उसका सिलिण्डर हैट सिर पर काली मीनार की तरह डोल रहा था। हमारे पास से उष्म हवा बह रही थी। आकाश रंग बदलने लगा। वहाँ ऊपर, लुढ़की बोतल से मृदु रक्त बह रहा था और विगलन की हल्की-सी बू मुझे घेरती जा रही थी।

"क्रान्ति का हम 'हाँ' कहकर स्वागत करेंगे पर भला शनिवार के सबाथ को हम 'ना' कर सकते हैं?" गेदाली ने यों अपनी बात शुरू की और अपनी सुरमई आँखों की रेशमी डोरों से मुझे लपेटने लगा। "मैं 'हाँ' चिल्ला-चिल्लाकर क्रान्ति का स्वागत करना चाहता हूँ पर वह गेदाली से छिपती है और अपने आगे-आगे बस गोलीबारी को भेजती है..."

"बन्द आँखों में धूप नहीं घुसती," मैंने वृद्ध को उत्तर दिया, "पर हम बन्द आँखों को चीरकर खोल देंगे..."

"पोलैण्ड वाले ने मेरी आँखें बन्द कर दीं," वृद्ध बहुत धीमे से फुसफुसाया। "पोलैण्डवाला कटखना कुत्ता है। वह यहूदी को पकड़कर उसकी दाढ़ी उखाड़ता है—स्साला, कुत्ता! और वह दिन आ जाता है जब उस कटखने कुत्ते की पिटाई होती है। यह कितना अच्छा है, यह क्रान्ति है! और फिर वह जिसने पोलैण्डवाले की पिटाई की मुझसे बोला : 'गेदाली, अपना ग्रामोफ़ोन मेरे पास जमा करवा दे..' मैं क्रान्ति को जवाब देता हूँ : 'मालकिन, मुझे संगीत से प्रेम है।'—'गेदाली, तुझे नहीं पता कि तुझे किससे प्रेम है, मैं तुझ पर गोली चलाऊँगी, तब तुझे पता चलेगा और गोली चलाये बिना मैं रह नहीं सकती क्योंकि मैं क्रान्ति हूँ...'"

"वह गोली चलाये बिना नहीं रह सकती, गेदाली..." मैं बूढ़े से बोला, "क्योंकि वह क्रान्ति है..."

"पर मालिक मेरे, पोलैण्डवाला गोली चलाता था क्योंकि वह प्रतिक्रान्ति था। आप चलाते हैं क्योंकि आप—क्रान्ति हैं। पर क्रान्ति तो आनन्द है। और आनन्द को घर में यतीम बच्चे नहीं पसन्द। नेक काम नेक आदमी करता है। क्रान्ति—यह नेक लोगों का नेक ध्येय है। पर नेक लोग हत्या नहीं करते। अर्थात, क्रान्ति बुरे लोग करते हैं पर पोलैण्डवाले भी बुरे लोग हैं। कौन गेदाली को यह बतायेगा कि कहाँ क्रान्ति है और कहाँ प्रतिक्रान्ति? मैंने कभी तालमूद* पढ़ा था और उस पर रब्बी शलोमो शुहाकी की टिप्पणियाँ और मोशे बेन मयमोन की किताबें मुझे पसन्द हैं। झीतोमीर में और भी समझदार लोग हैं। और हम सब, पढ़े-लिखे लोग, ज़मीन पर चेहरा रगड़कर बुलन्द आवाज़ में पूछ रहे हैं : हे भगवान, कहाँ है वह मधुर क्रान्ति?..."

बूढ़ा चुप हो गया। और हमें आकाशगंगा में तैरता पहला तारा दिखायी पड़ा।

"शनि आ रहा है," गेदाली गरिमा के साथ बोला, "यहूदियों को सिनानाग जाना चाहिये... श्रीमान कामरेड," यह कहकर वह उठा और उसका काली मीनार जैसा सिलिण्डर हैट सिर पर डोल पड़ा। "झीतोमीर में कुछ नेक लोगों को ले आयें। अरे हमारे शहर में उनकी कमी है, कसम से बहुत कमी है! भले लोगों को लाइये और हम उन्हें सारे ग्रामोफ़ोन दे डालेंगे। हम मूढ़ नहीं हैं। इण्टरनेशनल... हम जानते हैं कि इण्टरनेशनल क्या है। और मैं भले मानसों का इण्टरनेशनल चाहता हूँ, चाहता हूँ कि हर जान को रजिस्टर किया जाये और उसे प्रथम श्रेणी का राशन मिले। ले, जान मेरी, खा, जी भरकर खा और ज़िन्दगी का मजा ले! श्रीमान कामरेड, आपको पता है ही कि इण्टरनेशनल को खाते कैसे हैं..."

---

* यहूदी विधि-संग्रह।

''उसे बारूद के साथ खाते हैं,'' मैंने बूढ़े को उत्तर दिया, ''और बढ़िया से बढ़िया खून में भिगोकर...''

और युवा शनि नीले अंधकार से निकलकर अपने सिंहासन पर विराजमान हो गया।

''गेदाली,'' मैं बोला, ''आज शुक्रवार है और अब शाम हो गयी। यहूदी मठड़ी, यहूदी चाय का एक गिलास और चाय के गिलास में कुछ अवकाशप्राप्त खुदा कहाँ मिल सकते हैं?...''

''नहीं है,'' अपने पिटारे सरीखी दुकान पर ताला टाँगते हुए गेदाली ने उत्तर दिया, ''नहीं है यह सब। पास ही में एक ढाबा है, भले लोग उसे चलाते थे पर अब वहाँ खाते नहीं, वहाँ रोते हैं...''

उसने अपने हरे कोट के तीन हड्डी के बटन बन्द किये। उसने मुर्गे के पंखों से अपने कपड़ों को झाड़ा और मुलायम हथेलियों पर पानी छिड़का और नाटा, एकाकी, ख़्याली पुलाव बनानेवाला गेदाली सिर पर काला हैट लगाये और बगल में मोटी भजनमाला दबाये चल पड़ा।

शनिवार आ रहा था। गेदाली—अलभ्य इण्टरनेशनल का संस्थापक—सिनानाग में पूजा करने चला गया।

जब मैंने अपना पहला हंस पकड़ा

छठी डिवीजन का कमाण्डर सावीत्स्की मुझे देखकर खड़ा हुआ और मैं उसके सुन्दर डील-डौल को देखकर चकित रह गया। वह उठा और अपनी सिन्दूरी बिरजिस, एक कान पर झुकी किरमिजी टोपी, छाती पर टँके पदकों से कमरे को उसी तरह काट दिया जैसे फहराता ध्वज आकाश के टुकड़े-टुकड़े करता है। उसके बदन से इत्र और साबुन की तीखी शीतलता की गन्ध फैल रही थी। उसकी युवतियों जैसी लम्बी टाँगें जाँघों तक ऊँचे चमकीले बूटों में जकड़ी थीं।

उसने मेरी ओर मुस्कराकर देखा, चाबुक को मेज पर पटका और अभी-अभी स्टाफ अधिकारी द्वारा बोलकर लिखवाये गये आदेश को अपनी ओर सरकाया। यह इवान चेस्नोकोव को अपनी रेजीमेण्ट के साथ चुगूनोव—दोब्रीदोव्का की दिशा में कूच करने और दुश्मन को देखते ही उसे नष्ट करने का आदेश था।

''...उसको नष्ट करने की सजा-ए-मौत तक जिम्मेदारी,'' डिवीजन कमाण्डर लिखने लगा और उसने पूरा पन्ना रंग डाला, ''चेस्नोकोव पर है, अगर पूरी नहीं की तो मैं देखते ही गोली मार दूँगा, कामरेड चेस्नोकोव, आपको, जो पहले महीने नहीं है मेरे साथ मोर्चे पर, इसमें तनिक भी शक नहीं होना चाहिये...''

छठी डिवीजन के कमाण्डर ने आदेश पर चौड़े दस्तखत मारे और उसे अर्दलियों के सामने पटक दिया और मेरी ओर उसने अपनी सलेटी आँखें मोड़ीं जिनमें मस्ती

नाच रही थी।

मैंने उसे डिवीजन के हेडक्वार्टर में अपनी नियुक्ति का पत्र थमा दिया।

''आदेश जारी हो जायेगा!'' कमाण्डर बोला। ''आदेश जारी करके नियुक्त कर देंगे, तुम्हें अगाड़ी के सुख के सिवा बाकी सारा राशन-भत्ता मिलेगा। तुम पढ़े-लिखे हो?''

''पढ़ा-लिखा हूँ,'' मैंने उसकी जवानी के लोहे और प्रफुल्लता पर ईर्ष्या करते हुए उत्तर दिया, ''पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय से कानून की डिग्री ली है...''

''तो तुम वंडर चाइल्ड में से हो,'' वह चिहुँककर हँस पड़ा, ''और चश्मुदीन भी। कितने फटीचर हो!.. भेज देते हैं बिना पूछे हमसे, और यहाँ तो चश्मा देखते ही सिर कलम कर देते हैं। हमारे साथ रहोगे?''

''रह लूँगा,'' मैंने उत्तर दिया और क्वार्टर अर्दली के साथ गाँव में रैनबसेरा ढूँढने चल पड़ा।

क्वार्टर अर्दली कन्धों पर मेरी सन्दूकची लादे चल रहा था, हमारे सामने गाँव की, सीताफल की तरह पीली गोल-मटोल सड़क थी, आकाश में अपनी गुलाबी साँसें छोड़ता सूरज अपनी अन्तिम घड़ियाँ गिन रहा था।

हम बेलबूटेदार कंगूरोंवाले मकान के पास पहुँचे, क्वार्टर अर्दली रुककर सहमी मुस्कान के साथ अचानक बोला :

''यहाँ चश्मेवालों के साथ बड़ी मुसीबत है, कोई इलाज नहीं उसका। ऐसे आदमी का जीना हराम कर देते हैं। पर अगर आप किसी मेम साहब को खराब कर दें, ऊँचे दर्जे की मेम को, तब जवानों का अपको प्यार मिलेगा...''

वह अपने कन्धों पर मेरी सन्दूकची लादे हिचकिचाया, मेरे बिल्कुल पास आया, फिर हताश होकर दौड़ता हुआ पासवाले अहाते में घुस गया। वहीं सूखी घास पर बैठे कज़्ज़ाक एक दूसरे की दाढ़ी बना रहे थे।

''देखो, जवानो!'' क्वार्टर अर्दली ज़मीन पर मेरी सन्दूकची रखकर बोला। ''कामरेड सावीत्स्की के आदेशानुसार आपको इस आदमी को अपने साथ टिकाना होगा और कोई बदमाशी मत करना क्योंकि यह आदमी पढ़ाई के दौरान अन्याय का शिकार बन चुका है...''

क्वार्टर अर्दली का चेहरा लाल हो गया और वह बिना मुड़कर देखे चला गया। मैंने कज़्ज़ाकों को सिल्यूट मारा। सन जैसे लटके बालों और र्‌याजान के नाक-नक्श वाला युवक मेरी सन्दूकची के पास आया और उसे उठाकर फाटक के बाहर फेंक दिया। फिर उसने मेरी ओर अपने चूतड़ मोड़े और एक खास हुनर से भद्दी आवाज़ें निकालने लगा।

''तोप!'' उम्र में कुछ बड़ा कज़्ज़ाक उससे चिल्लाकर बोला और हँसने लगा, ''बराज फायर कर...''

युवक अपना हुनर दिखाकर हट गया। तब ज़मीन पर रेंग-रेंगकर मैं सन्दूकची से बिखरी अपनी पाण्डुलिपियाँ और घिसे-फटे अपने कपड़े समेटने लगा। उन्हें समेटकर मैं अहाते के दूसरे सिरे पर चला गया। मकान के पास ईंटों पर देग टिका था, समं सूअर का मांस पक रहा था, उससे ऐसी भाप उड़ रही थी जैसे देहात में दूर से अपने घर की चिमनी से धुआँ निकलता है और उसने मेरी भूख और अपूर्व एकाकीपन को गड्ड-मड्ड कर डाला। मैंने अपनी टूटी-फूटी सन्दूकची को सूखी घास से ढँककर सिरहाना बनाया और कमिन्टर्न की द्वितीय कांग्रेस में लेनिन का 'प्राव्दा' में छापा लेख पढ़ने के लिये ज़मीन पर लेट गया। दाँतेदार टीलों के पीछे से मेरे ऊपर धूप पड़ रही थी, कज़्ज़ाक मेरी टाँगों को लाँघते आ-जा रहे थे, युवक निरन्तर मेरा मजाक उड़ा रहा था, अखबार में छपी मनपसन्द पंक्तियाँ काँटों से भरी राह पर चलती मेरी ओर आ रही थीं पर किसी भी तरह मुझ तक पहुँच नहीं पा रही थीं। तब मैंने अखबार तह करके रख दिया और ओसारे पर बैठी सूत कातती मकान मालकिन के पास गया।

"मालकिन," मैं बोला, "मुझे कुछ भकोसना है..."

बुढ़िया मालकिन ने मेरी ओर अपनी खराब आँखों की डबडबायी पुतलियाँ उठायीं और फिर झुका ली।

"कामरेड," कुछ देर चुप रहकर वह बोली, "ऐसी बातों से मेरा मन गले में फन्दा डालने को होता है।"

"भाड़ में जाओ," मैं तब निराशा के साथ बोला और घूँसे से बुढ़िया की छाती को ठेल दिया, "मैं तुमसे कोई बात नहीं करना चाहता..."

और मुड़कर मुझे पास ही में किसी की तलवार पड़ी दिखायी दी। एक रोबीला हंस अहाते में मटरगश्ती कर रहा था और बेफ़िक्री से अपने परों को सँवार रहा था। मैं उसका पीछा करके उस पर टूट पड़ा, हंस का सिर मेरे बूट के नीचे आकर फट गया और फटकर उससे खून बहने लगा। उसकी सफ़ेद गर्दन गोबर में बिछी थी और हलाल परिन्दे के डैने फड़फड़ा रहे थे।

तेरी ऐसी की तैसी!" मैं हंस को तलवार से कुरेदता बोला, "मालकिन, भून दे मेरे लिये।"

अपनी ख़राब आँखों और ऐनक को चमकाते हुए बुढ़िया ने हंस को उठाया और अपनी एप्रन में उसे लपेटकर रसोईघर की ओर चल दी।

"कामरेड," वह कुछ चुप रहकर बोली, "मेरा मन गले में फन्दा डालने को होता है," और उसने अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर लिया।

अहाते में कज़्ज़ाक अपने देश को घेरकर बैठ चुके थे। वे तपस्वियों की तरह निश्चल तनकर बैठे थे और हंस की ओर नहीं देख रहे थे।

"छोरा अपना ही लगता है," उनमें से एक मेरे बारे में बोला और आँख मारकर उसने अपनी चम्मच में बन्दगोभी का शोरबा भरा।

कज़्ज़ाक एक दूसरे की इज़्ज़त करनेवाले किसानों की तरह संयतचारुता के साथ खाना खाने लगे और मैंने तलवार को बालू से साफ़ किया और आतुरता के साथ फाटक से बाहर निकला और फिर लौट आया। अहाते के ऊपर चाँद सस्ते झुमके की तरह लटका था।

"भइया," अचानक कज़्ज़ाकों में वरिष्ठ सुरोव्कोव मुझसे बोला, "बैठ जा हमारे साथ, कुछ खा ले जितने में तेरा हंस भुनेगा..."

उसने अपने फुलबूट से एक और चम्मच निकाली और मुझे थमा दी। हमने बन्दगोभी का सूप और सुअर का मांस खाया।

"अख़बार में क्या लिखा है?" सन जैसे बालोंवाले लड़के ने मुझसे पूछा और मेरे लिये आराम से बैठने के वास्ते जगह खाली कर दी।

"अख़बार में लेनिन लिखते हैं," मैं 'प्राव्दा' निकालते हुए बोला, "लेनिन लिखते हैं कि हमारे यहाँ हर चीज़ का टोटा है..."

और मैंने जोश में आये बहरे की तरह ज़ोर-ज़ोर से पढ़कर कज़्ज़ाकों को लेनिन का भाषण सुना दिया।

साँझ ने मुझे अपनी धुँधली चादरों की ताजगीदायक नमी में लपेट दिया, शाम ने माँ की तरह मेरे तपते माथे को सहलाया।

मैं विजयोल्लास के साथ पढ़ रहा था और लेनिन की सीधी-सरल बातों के गूढ़ अर्थ पर पुलकित होकर ध्यान दे रहा था।

"सच हरेक की नाक में गुदगुदी करता है," सुरोव्कोव बोला, जब मैंने पढ़ना समाप्त किया, "पर उसे ढेर में कैसे खोजें, और वे फौरन वैसे ही ढूँढ निकालते हैं, जैसे मुर्गी दाने को।"

ये शब्द हेडक्वार्टर स्क्वाड्रन के प्लाटून कमाण्डर सुरोव्कोव ने लेनिन के बारे में कहे और फिर हम सूखी घास की टाल में सोने चले गये।

हम छः लोग वहाँ एक दूसरे के बदन की गर्मी पाते, टाँगें उलझाये टूटे छप्पर के नीचे सोये थे जिसमें से तारे चूते से रहे थे।

मैं सपने और सपनों में औरतों को देख रहा था, बस मेरा दिल ही हत्या के खून से रंगा किरकिराता घुल रहा था।

रब्बी

"...सब नश्वर है। बस माँ को ही अमरत्व प्राप्त है। और जब माँ ज़िन्दा नहीं रहती तो वह अपनी याद छोड़ जाती है, जिसे अभी तक कोई भी अपवित्र करने का साहस न कर पाया है। माँ की स्मृति हमारे में उसी तरह संवेदना भरती है जैसे महासागर, असीम महासागर संसार को चीरकर बहती नदियों में पानी भरता है..."

ये गेदाली के शब्द थे। उसने आडम्बर के साथ ये शब्द कहे थे। बुझती साँझ

उसे अपने सन्ताप के गुलाबी धुएँ से घेर रही थी। बूढ़ा बोला :

"हसीदीवाद* के पुनीत भवन के द्वार और गवाक्ष तोड़ दिये गये हैं पर वह माँ की आत्मा की तरह अमर है... फूटी खिड़कियों के साथ हसीदीवाद अब भी इतिहास की हवाओं के चौराहे पर अटल खड़ा है।"

गेदाली ने यह कहा और सिनानाग में प्रार्थना करके मुझे चेर्नोबिल वंश के अन्तिम रब्बी, रब्बी मोताले के पास ले गया।

मैं गेदाली के साथ मुख्य सड़क पर चल रहा था। सफ़ेद कैथीड्रल दूरी पर कुटू के खेतों की तरह दिखायी पड़े। नुक्कड़ पर तोप का पहिया चरमराया। फाटक से दो गर्भवती उक्रइनी औरतें निकलीं और सिक्कों के कण्ठहार को झनझनाते हुए बेंच पर बैठ गयी। सूर्यास्त की नारंगी रणभूमि पर सहमा-सहमा सा तारा जल उठा और चैन, शनिवार का चैन झीतोमीर के यहूदी मुहल्ले की टेढ़ी-मेढ़ी छतों पर उतर आया।

"यहाँ है," गेदाली अग्रभाग की नष्ट सज्जावाली लम्बी इमारत की ओर इशारा करके फुसफुसाया।

हमने पत्थर के फ़र्शवाले मुर्दाघर की तरह रीतते कमरे में प्रवेश किया। रब्बी मोताले पगलों और फरेबियों से घिरा मेज पर बैठा था। उसके सिर पर सेबल के समूर की टोपी और बदन पर डोरी का फेंटा लगा सफ़ेद चोगा था। रब्बी आँखें बन्द किये बैठा दुबली उँगलियों से अपनी पीली दाढ़ी को मसल रहा था।

"कहाँ से आया है, यहूदी?" उसने पूछकर अपनी पलकें खोलीं।

"ओडेस्सा से," मैंने उत्तर दिया।

"शहरे शरीफ," रब्बी ने कहा, "हमारी जलावतनी का तारा, हमारी मुसीबतों की जड़!.. यहूदी क्या करता है?"

"ओस्त्रोपोल के हर्ष की साहसिक गाथा को काव्यबद्ध कर रहा हूँ।"

"महान श्रम है," रब्बी ने बुदबुदाकर कहा और पलकें मूँद ली। "सियार हुआँ-हुआँ करता है जब वह भूखा होता है, हरेक मूर्ख में मुँह लटकाने की मूर्खता होती है और बस बुद्धिमान ही अपनी हँसी से निरानन्द अस्तित्व की काली चादर को चीरता है... यहूदी ने क्या पढ़ा है?"

"बाइबिल।"

"यहूदी को क्या चाहिये?"

"मौज-मस्ती।"

"रेब* मोर्दहे," सादिक दाढ़ी हिलाता बोला, "नौजवान को मेज पर बैठने दो, सबाथ की इस संध्या को इसे भी बाकी यहूदियों के साथ बैठकर खाने दो, मनाने दो इसे खुशी कि यह ज़िन्दा बच गया, मरा नहीं, जब इसके पड़ोसी नाचें बजाने दो इसे

---

* हसीदीवाद—यहूदी धर्म में रहस्यवादी मत। 18वीं शताब्दी में यह उक्रइन के कुछ इलाकों में सनातन यहूदी धर्म के विपक्ष के रूप में पनपा।

तालियाँ, पीने दो इसे शराब, अगर कोई दे दे इसे शराब..."

रेब मोर्दहे लपककर मेरे पास आया, यह पुराना विदूषक, पलटी पलकोंवाला कुबड़ा बुड्ढा था, उसका क़द दस वर्ष के बालक से छोटा ही हो सकता था।

"अरे मेरे अजीज और इतने जवाँ नौजवान!" चिथड़ों में लिपटा रेब मोर्दहे आँख मारकर मुझसे बोला, "अरे, ओडेस्सा में मैं कितने ही अमीर बेवकूफ़ों को जानता था, कितने ही अक्लमन्द भिखारियों को मैं जानता था ओडेस्सा में! नौजवान, बैठ भी जाइये मेज पर और पीजिये शराब जो आपको कोई नहीं देनेवाला..."

हम सब साथ बैठ गये—पगले, फरेबी और गावदी। कोने में चौड़े कन्धोंवाले, मछुओं और अपोस्टलों जैसे लगते यहूदी पूजा की पोथियों के ऊपर झुके कराह रहे थे। अपने हरे कोट में दीवार के पास ऊँघता गेदाली तोते जैसा लग रहा था। अचानक गेदाली की पीठ पीछे मुझे एक किशोर दिखायी पड़ा, स्पिनोज़ा के चेहरे वाला किशोर, उसका चौड़ा ललाट भी स्पिनोज़ा जैसा था और चेहरा किसी नन की तरह मलिन। वह सिगरेट पी रहा था और जेल में पकड़कर लाये गये फरार क़ैदी की तरह काँप रहा था। चिथड़ों में लिपटा मोर्दहे चुपके से उसके पीछे गया और उसके मुँह की सिगरेट छीनकर मेरे पास दौड़ा आया।

"यह रब्बी का बेटा इल्या है," मोर्दहे फटी आवाज़ में बोला और अपनी पलकों के रक्तिम मांस को मेरे बिल्कुल पास ले आया, "शापित पुत्र, सबसे छोटा बेटा, नालायक बेटा..."

और मोर्दहे ने किशोर को घूँसा दिखाया और उसके मुँह पर थूक दिया।

"प्रभु की महिमा महान है," तभी रब्बी मोताले ब्रात्स्लावी का स्वर गूँजा और उसने अपनी सन्यासिनों जैसी उँगलियों से रोटी तोड़ी, "इस्राइल के प्रभु की महिमा महान है जिसने पृथ्वी के सभी जनगण के बीच हमीं को चुना..."

रब्बी ने अन्न को पूजा और हम सब खाना खाने बैठ गये। बाहर घोड़े हिनहिना रहे थे और कज़्ज़ाक चिल्लपों कर रहे थे। खिड़की के बाहर युद्ध का मरुस्थल मुँह बाये खड़ा था। मौन और प्रार्थना के समय रब्बी का बेटा एक के बाद एक सिगरेट पीयेजा रहा था। खाना खत्म होने पर मैं सबसे पहले उठा।

"मेरे अजीज और इतने जवाँ नौजवान," मेरी पेटी खींचकर मोर्दहे पीछे से बुदबुदाया, "अगर दुनिया में चिड़चिड़े अमीरों और भिखमंगों के अलावा और कोई न होता तो संत लोग कैसे गुजारा करते?"

मैं बुड्ढे को पैसे देकर बाहर निकल आया। मैं गेदाली से विदा लेकर स्टेशन चला गया। वहाँ, स्टेशन पर प्रथम अश्व सेना की प्रचार रेलगाड़ी में सैकड़ों बत्तियों की जगमगाहट, वायरलैस उपकरण की जादुई चमक, छापेखाने की मशीनों की हठपूर्ण दौड़ और 'लाल अश्वारोही' समाचारपत्र के लिये अधूरा लेख मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे।

---

* रब्बी का परिचर।

ब्रोदी के रास्ते में

मुझे मधुमक्खियों का दुख है। एक-दूसरे से लड़ती सेनाओं ने उन्हें तबाह कर दिया। वोलीन प्रदेश में मधुमक्खियाँ अब नहीं रहीं।

हमने उनके छतों को अपवित्र कर डाला। हमने उन्हें गन्धक से मारा और बारूद से उड़ाया। मधुमक्खियों के पुनीत प्रजातंत्रों में जले चिथड़ों के धुएँ की बदबू व्याप्त थी। धीरे-धीरे उड़ते हुए वे दम तोड़ती थीं और अस्फुट गुंजार करती थीं। रोटी से वंचित होकर हम तलवारों से शहद निकालते थे। वोलीन प्रदेश में मधुमक्खियां अब नहीं रहीं।

दैनन्दिन कुकर्मों का इतिवृत मेरे दिल को असाध्य रोग की तरह निरन्तर जकड़े रहता था। कल ब्रोदी के पास पहली मारकाट हुई थी। वहाँ की नीलाभ भूमि पर भटके हम लोगों को—न मुझे, न मेरे मित्र अफ़ोन्का बीदा को इसका तनिक भी गुमान था। घोड़ों को सुबह से अनाज का चारा मिल चुका था। खेतों में रई की ऊँची फसल लहलहा रही थी, धूप बेहद सुहावनी थी पर मन जो इस चमक-दमक भरे निर्मल व्योम के योग्य नहीं था मन्द-मन्द पीड़ा का पिपासु था।

"शहद की मक्खियों और उनकी भलमनसाहत के बारे में गाँवों की लुगाइयाँ किस्से बखान करती हैं," मेरा मित्र, प्लाटून कमाण्डर बोला, "तरह-तरह के किस्से बखान करती है। लोगों ने ईसामसीह का बुरा किया या नहीं किया बुरा, इसके बारे में बाकी लोगों को कयामत के दिन ही पता चलेगा। पर गावों की लुगाइयाँ यह किस्सा बखान करती हैं—ईसामसीह सलीब पर लटका ऊब रहा था। और तरह-तरह के डांस-मच्छर मसीह को सताने के लिए उस पर बैठ रहे थे। और वह उनको अपनी आँखों से देख रहा था और दिल उसका बैठ रहा था। पर असंख्य डांस मच्छरों को तो उसकी आँखें दिखायी दे नहीं रही थीं। शहद की मक्खी भी मसीहा के इर्द-गिर्द मण्डरा रही थी। 'मार डंक इसे,' मच्छर चिल्लाकर मधुमक्खी से बोले, 'मार डंक इसे,' हम देख लेंगे!. .'—'यह काम मुझे नहीं आता,' मसीह के ऊपर पर फड़फड़ाते हुए शहद की मक्खी बोली, 'मैं यह नहीं कर सकती, वह तो मज़दूर वर्ग का, बढ़ई का बेटा है...' मधुमक्खी को समझना चाहिये," अफ़ोन्का, मेरे प्लाटून कमाण्डर ने बात यों पूरी की, "मधुमक्खी को भी कुछ सब्र कर लेना चाहिये। उसकी ख़ातिर भी तो हाथापाई कर रहे हैं..."

और हाथ फड़फड़ाकर अफ़ोन्का ने गीत छेड़ दिया। यह लाखी घोड़े के बारे में गीत था। अफ़ोन्का का प्लाटून—आठ कज़्ज़ाक उसका साथ देने लगे।

"जिगीत नाम का लाखी घोड़ा था उस कज़्ज़ाक लेफ्टिनेण्ट का, हो गया जो धुत्त पीकर वोद्का त्योहार को," अफ़ोन्का तार की तरह तान खींचता और ऊँघता यह गीत गा रहा था। "जिगीत था स्वामीभक्त घोड़ा पर त्योहारों पर लेफ्टिनेण्ट की मंशाओं की सीमा न थी। त्योहार के दिन थीं बोतलें पाँच वोद्का की। चौथी के बाद हुआ

सवार लेफ्टिनेण्ट घोड़े पर और ले चला घोड़े को अपने आकाश की ओर। थी चढ़ाई लम्बी पर जिगीत भी था घोड़ा उम्दा। पहुँचे वे आकाश में और लेफ्टिनेण्ट को हुई तलब बोतल की पाँचवी। पर अन्तिम बोतल तो गयी थी छूट धरती पर ही। तब पड़ा रो लेफ्टिनेण्ट अपने निष्फल प्रयास पर। वह रो रहा था और जिगीत मालिक को देख बदल रहा था कनौतियाँ..."

अफ़ोन्का इसी तरह दहाड़ता और ऊँघता गीत गा रहा था। गीत धुएँ की तरह वातावरण में तैर रहा था। और हम उसी ओर जा रहे थे जहाँ सूर्यास्त हो रहा था। उसकी उमड़ती नदियाँ खेतों के गलीचों पर उतरकर बह रही थीं। सन्नाटा भी सूर्यास्त के गुलाबी रंग में रंगता जा रहा था। अन्न की लहलहाती फसलों के झिलमिलाते समूर से ढकी धरती बिल्ली की पीठ की तरह पसरी थी। टीले पर क्लेकोतोव गाँव के कच्चे मकानों का कुबड़ा झुण्ड था। टीले के पार मृत और दाँतेदार ब्रोदी का दृश्य हमारी बाट जोह रहा था। पर क्लेकोतोव के पास हमारे सामने धाँय से गोली चलने की आवाज़ गूँजी। एक घर के पीछे से दो पोलिश सिपाही झाँके। उनके घोड़े खम्भों से बँधे थे। दुश्मन का हल्का तोपखाना कुछ करने के मूड में टीले पर आ रहा था। गोलियाँ धागों की तरह सड़क पर बिछ गयीं।

"भागो!" अफ़ोन्का बोला।

और हम भाग खड़े हुए।

ओ ब्रोदी! तेरे कुचले दम्भ की जहरीली बू मेरे नथुनों में भरने लगी थी। मैं ठण्डे आँसुओं से भरी तेरी घातक शीत बरसाती नज़रों को महसूस करने लगा था। और अब ताबड़तोड़ सरपट दौड़ मुझे तेरे सिनागागों के खण्डित पत्थरों से दूर ले जा रही है..

तचान्का* की महिमा

मेरे लिये हेडक्वार्टर से गाड़ीवान भेजा गया। उसका कुलनाम ग्रीश्चूक था, उम्र उसकी उनतालीस साल की थी।

पाँच साल वह जर्मनी का युद्धबन्दी रहा और कुछ महीने पहले क़ैद से भागकर लिथुआनिया, उत्तर-पश्चिमी रूस से होता हुआ वोलीन प्रदेश में पहुँचा और बेलेव में दुनिया के सबसे मूर्ख लामबन्दी आयोग की पकड़ में आ गया और उसे सैनिक सेवा में वापस झोंक दिया। क्रेमेनेत्स जिले तक जहाँ का ग्रीश्चूक बाशिंदा था उसे बस पचास मील और जाना बाकी था। क्रेमेनेत्स जिले में उसके बीवी-बच्चे थे। पाँच साल और दो महीने से वह घर नहीं गया था। लामबन्दी आयोग ने उसे मेरा कोचवान बना दिया और कज़्ज़ाकों के बीच मैं अब अछूत नहीं रहा।

मैं अब तचान्का और उसके कोचवान का स्वामी हो गया था। तचान्का! यह

---

* तचान्का—खुली बग्घी जिस पर गृहयुद्ध के काल में मशीनगन फिट की जाती थी।

शब्द उस त्रिकोण का आधार बन गया जिस पर मार-काट—रक्तपात की हमारी रीत टिकी थी।

आन्तरिक कलह की सनक के कारण साधारण घोड़ागाड़ियाँ जिन पर पहले पादरी और अहलदार यात्रा करते थे भयानक और चलायमान अस्त्र बन गयी। उन्होंने नयी समरनीति और रणनीति का निर्माण किया, युद्ध के जाने-पहचाने चेहरे को विकृत बना डाला, वीरों को और तचान्का के पण्डितों को जन्म दिया। ऐसा ही था मख्नो जिसने पैदल दस्तों, तोपखाने और अश्वारोही दस्तों तक को भंग करके इन बड़ी-बड़ी बेढब विरचनाओं के बदले घोड़ागाड़ियों पर तीन सौ मशीनगनें लगाकर तचान्का को अपनी रहस्यमय और कुटिल समरनीति की धुरी बनाया। ऐसा ही था मख्नो, प्रकृति की तरह विविधरूपी। घास से लदे छकड़े रण विरचना में ढलकर नगरों पर कब्जा कर लेते। जिला कार्यकारिणी की इमारत के पास पहुँचकर बारात जबरदस्त गोलीबारी करती और अराजकता का काला झण्डा फहराता अदना पादरी प्रशासन से बुर्जुआ लोगों, सर्वहाराओं, शराब और संगीत को प्रदान करने की माँग करता।

तचान्का फ़ौज में गज़ब की तेजी होती है।

बुद्योन्नी भी यह सिद्ध करने में मख्नो से पीछे नहीं रहा। इस फ़ौज को मारना कठिन है और पकड़ना—असम्भव। मशीनगन पुआल के ढेर के नीचे गाड़ दी, घोड़ागाड़ी किसान के खलिहान में खड़ी कर दी और तचान्का लड़ाकू इकाई नहीं रही। ये सुरक्षित इकाइयाँ जिनका अनुमान ही लगाया जा सकता था, पर जो महसूस नहीं होतीं, मिलकर हाल तक के प्रचण्ड, विद्रोही और स्वार्थी उक्रइनी देहात की संरचना बनाती थीं। इधर-उधर कोनों में छिपे आयुधवाली फ़ौज को मख्नो एक घण्टे में लड़ने के लिए तैयार कर देता और उसे विसर्जित करने में तो इससे भी कम समय की आवश्यकता होती।

हमारे यहाँ, बुद्योन्नी की नियमित अश्वारोही सेना में तचान्का का इतना अधिक महत्व न था। पर हमारी सभी मशीनगन टीमें घोड़ागाड़ियों पर ही तैनात थीं। कज़्ज़ाकों के अनुसार दो प्रकार की तचान्काएँ होती थीं : कालोनियाई और अहलदारी। यह उनकी कोरी कल्पना नहीं बल्कि असलियत थी।

अहलदारी घोड़ागाड़ियों में, इन फटीचर, बिना किसी खास प्रेम और कौशल के बने इन छकड़ों में मदहोश हाकिम और उनींदे अहलदारों के झुण्ड, मौके पर शवपरीक्षा और पूछताछ के लिये पहुँचने की जल्दी में कुबान की गेहूँ की स्तेपियों में हिचकोले खाते। और कालोनियाई घोड़ागाड़ियाँ हमारे यहाँ समारा, उराल और वोल्गा के तटवर्ती इलाकों की समृद्ध जर्मन कालोनियों से आयीं। कालोनियाई घोड़ागाड़ियों की सीटों की चौड़ी बलूत की पीठों पर गुलाबी जर्मन फूलों के मोटे-मोटे बेलबूटों की समृद्ध छटा बिखरी होती। उनकी मज़बूत पेंदी लोहे से मढ़ी होती। पहियों की धुरियाँ उम्दा कमानियों पर टिकी होतीं। अब वोलीन की टूटी-फूटी ऊबड़-खाबड़ सड़कों पर टूटती

इन कमानियों में मुझे अनेक पीढ़ियों का जोश-आवेश समाया महसूस होता।

मुझ पर पहली बार कोई चीज़ पाने का नशा छाया हुआ था। रोज़ दोपहर के खाने के बाद हम गाड़ी तैयार करते थे। ग्रीश्चूक अस्तबल से घोड़ों को निकालकर लाता। वे दिन-प्रतिदिन, हृष्ट-पुष्ट होते जा रहे थे। उनकी रगड़कर साफ़ की गयी बगलों की हल्की-सी चमक को मैं गर्व से पुलकित होकर देखता। हम घोड़ों की सूजी टाँगों की मालिश करते, अयाल छाँटते, उनकी पीठों पर पतली-पतली पेटियों के सूखे उलझे जाल जैसी कज़्ज़ाक साज़ डालते और उन्हें सरपट दौड़ाते अहाते से निकलते। ग्रीश्चूक कोचवान की सीट पर तिरछा होकर बैठता; मेरी गद्दी पर भड़कीले गाढ़े का बिछौना और इत्र और निश्चिंतता की सुगन्ध से सराबोर सूखी घास बिछी होती। खिलते पोस्त के चौकोर धरती को रँगते और टीलों पर खड़े खण्डित गिरजे चमचमाते दिखायी पड़ते। सड़क के पास ऊँचाई पर गोले से खण्डित आले में सन्त उर्सूला की उघड़ी बाँहोंवाली कत्थई मूर्ति दिखायी देती। सिंहद्वार के काले पड़ चुके सोने के पत्तर पर प्राचीन लिपि के अक्षरों से बुनी ऊबड़-खाबड़ श्रृंखला थी—"यीशु और उनकी दिव्य माँ की महिमा हेतु..."

पोलिश जागीरदारों की गढ़ियों की तलहटियों में सुनसान यहूदी बस्तियाँ पड़ी हैं। ईंट की चहारदीवारियों पर नीलाभ विस्तार में निरावेग माया की तरह पैगम्बरी मोर कान्ति बिखेर रहा है। बिखरी झोंपड़ियों की ओट में हसीदी टोपी की तरह गोल, नेत्रहीन खण्डित सिनानाग दरिद्र भूमि पर पसरा था। दुबले कन्धोंवाले यहूदी चौराहों पर मुँह लटकाये खड़े होते। उन्हें देखकर दिमाग़ में तबियतदार, तोंदू, सस्ती शराब की तरह मतवाले दक्षिणी यहूदियों की छवि कौंध जाती। इन दुबली और हड़ीली पीठों, इन पीली और दुखित दाढ़ियों के कड़वे दम्भ की उसे कोई तुलना नहीं की जा सकती। यातना की पीड़ा में तराशे इन आवेशित नाक-नक्शों में न वसा थी और न ही रक्त की उष्ण धड़कन। गलीसी और वोलीन के यहूदियों की भाव-भंगिमाएँ असंयत, आवेगी, सुरुचि विपन्न थीं पर उनकी व्यथा की शक्ति असित महानता से परिपूर्ण और पोलिश जमींदार के प्रति उनकी प्रच्छन्न घृणा असीम थी। उनको देखकर मैं इस आँचल के दहकते इतिहास, शराब का ठेका चलानेवाले धर्म के ठेकेदारों, सूदखोर रब्बियों, पोलिश सिपाहियों के बलात्कार का शिकार बनी उन युवतियों के बारे में किस्सों को समझ गया जिनको पाने के लिए पोलिश धन्नासेठ द्वन्द्वयुद्ध करते थे।

दोल्गुशोव की मौत

लड़ाई की बाढ़ शहर की ओर बढ़ रही थी। दोपहर को कन्धों पर काला लबादा डाले कोरोचायेव—चौथी डिवीजन का उपेक्षित कमाण्डर हमारे पास से उड़ता गुजरा, वह अकेले ही लड़ रहा था और मौत की तलाश में था। वह पास से जाते-जाते चिल्लाकर मुझसे बोला :

"हमारा संचार टूट गया है, राद्ज़ीवील्लोव और ब्रोदी आग में लिपटे हैं!.."

कोयले जैसी काली आँखोंवाला वह काले ध्वज की तरह फड़फड़ाता अपने घोड़े को दौड़ाये चला गया।

तख्ते की तरह सपाट घाटी में ब्रिगेडें व्यूह रचना कर रही थीं। सिन्दूरी धूल में लिपटे सूरज का गोला लुढ़कता जा रहा था। सूखे नालों में बैठे घायल खाना खा रहे थे। नर्सें घास पर लेटीं मन्द-मन्द स्वर में गा रही थीं। अफ़ोन्का के टोहिये मृतकों और काम के सामान की खोज में मैदान छान रहे थे। अफ़ोन्का मेरे बिल्कुल पास से गुजरा और मेरी ओर सिर मोड़े बिना बोला :

"छित गया हमारा थोबड़ा। बात साफ़ है। डिवीजन कमाण्डर के बारे में सोच रहा हूँ, हटा देंगे उसे। जवानों को शक है..."

हमारे से कोई तीन मील की दूरी पर पोलिश जंगल के पास पहुँचे और उन्होंने कहीं पास ही में मशीनगनें लगा दीं। गोलियाँ रिरिया, सनसना रही थीं। उनका क्रन्दन असहनीय होता जा रहा था। गोलियाँ ज़मीन की छाती में गड़ जातीं और उसे बेसब्री से कुरेदने लगतीं। रेजीमेण्ट कमाण्डर वीत्यागाइचेन्को जो धूप में लेटा खर्राटे भर रहा था, नींद में चिल्लाकर जाग पड़ा। वह घोड़े पर चढ़कर सबसे आगेवाले स्क्वाड्रन की ओर रवाना हो गया। बेआराम नींद के कारण उसका चेहरा कुम्हलाया, लाल-लाल सिलवटों से ढँका था और जेबें उसकी अलूचों से भरी थीं।

"कुत्ते की औलाद," वह गुस्से में बोला और मुँह से गुठली थूक दी, "जीना हराम कर रखा है। तिमोश्का, निकाल झण्डा!"

"चढ़ाई करेंगे क्या?" तिमोश्का ने झण्डे का रकाब में टिका डण्डा निकालते हुए पूछा और उस पर लिपटे झण्डे को खोल दिया। झण्डे पर तारा बना था और तृतीय इण्टरनेशनल के बारे में कुछ लिखा था।

"देखा जायेग वहाँ चलकर," वीत्यागाइचेन्को बोला और अचानक बड़े ज़ोर से चिल्लाया : "लौंडियों, चढ़ो घोड़ों पर! स्क्वाड्रन कमाण्डरों, बुलाओ लोगों को!.."

बिगुलचियों ने संकट-संकेट बजाया। स्क्वाड्रन पंक्तिबद्ध हो गये। नाले से एक घायल निकला और आँखों पर हाथ की छाया करके वीत्यागाइचेन्को से बोला :

"तरास ग्रिगोरीविच, मैं घायलों का प्रतिनिधि हूँ। लगता तो यही है कि हम लोग यहीं रह जायेंगे..."

"कोई बात नहीं, सँभाल लोगे..." वीत्यागाइचेन्को बुदबुदाया और अपने घोड़े को सीखपा किया।

"तरास ग्रिगोरीविच, हमें ऐसी आस है कि नहीं सँभाल पायेंगे," उसे जाते देख घायल बोला।

"चें-चें कर मत," वीत्यागाइचेन्को मुड़कर बोला, "नहीं छोड़ूँगा," और उसने लगाम तौलने का आदेश दिया।

और तत्क्षण मेरे मित्र अफ़ोन्का बीदा की लुगाइयों जैसी रुआँसी आवाज़ गूँजी :

"तरास ग्रिगोरीविच, एक दम सरपट मत दौड़वा घोड़ों को, दुश्मन तक पाँच मील की दूरी है। जब मार-काट का वक्त होगा तो घोड़े हमारे थके होंगे... जल्दी क्या पड़ी है..."

"दुलकी चाल चल!" वीत्यागाइचेन्को ने आँखें उठाये बिना आदेश दिया।

रेजीमेण्ट रवाना हो गयी।

"अगर डिवीजन कमाण्डर के बारे में मेरी सोच सही निकली," अफ़ोन्का ठहरकर फुसफुसाया, "अगर हटाते हैं उसे तो बस रस्सी बटो गले में फन्दा डालने के लिए और झूल जाओ।"

उसकी आँखों से आँसू बह पड़े। मैं चकित होकर अफ़ोन्का को ताकने लगा। वह लट्टू की तरह घूमा और टोपी पकड़कर आह भरी, फिर किलकारकर घोड़े को दौड़ा दिया।

अपनी नामाकूल तचान्का के साथ ग्रीश्चूक और मैं अकेले रह गये और शाम तक गोलीबारी और आग की दीवारों के बीच भटकते रहे। डिवीजन का हेडक्वार्टर ग़ायब हो गया था। परायी टुकड़ियाँ हमें अपने साथ नहीं लेना चाहती थीं। रेजीमेंटें ब्रोदी में घुसी और प्रत्याक्रमण के द्वारा खदेड़ दी गई। हम शहर के कब्रिस्तान के पास पहुँचे। क़ब्रों की आड़ से पोलिश टोह दल निकला और रायफलें तानकर हम पर गोलियाँ चलाने लगा। ग्रीश्चूक ने गाड़ी मोड़ी। उसकी तचान्का के चारों पहिये हाहाकार कर रहे थे।

"ग्रीश्चूक!" मैं गोलियों और हवा की सनसनाहट को भेदते हुए चिल्लाया।

"क्या बला है," उसने दुखित स्वर में कहा।

"बुलावा आ गया मौत का," घातक आवेग से पुलकित होकर मैं चिल्लाया, "आ गया मौत का बुलावा, बुढ़ऊ!"

"लुगाइयाँ किसलिये बच्चे जनती हैं?" वह और भी दुखित स्वर में बोला, "किसलिए मंगनियाँ-शादियाँ होती हैं, क्यों लोग शादी की दावतों में छक्के-मौज उड़ाते हैं..."

आकाश में डूबते सूरज की गुलाबी दुम चमककर बुझ गयी। तारों के बीच आकाशगंगा उभर आयी।

"मुझे हँसी आती है," ग्रीश्चूक उदास स्वर में बोला और उसने सड़क के किनारे बैठे व्यक्ति की ओर चाबुक से इशारा किया, "हँसी आती है मुझे कि क्यों लुगाइयाँ बच्चे जनती हैं..."

सड़क के किनारे बैठा व्यक्ति टेलीफ़ोन आपरेटर दोल्गुशोव था। टाँगे फैलाये व हमें एकटक देख रहा था।

"मेरा हाल देखो," जब हम पास पहुँचे, दोल्गुशोव बोला, "खेल खत्म हो रहा

है... समझे?''

''समझे,'' घोड़ों को रोकते हुए ग्रीश्चूक बोला।

''मुझ पर एक गोली खर्च करनी होगी,'' दोल्गुशोव बोला।

वह पेड़ के तने से पीठ टिकाये बैठा था। बूटों में उसकी टाँगें पसरी थीं। मुझे एकटक देखते हुए उसने सँभलकर क़मीज़ उठाई। उसका पेट फटा था, आँतें घुटनों पर रेंग रही थी और धड़कता दिल दिखायी पड़ रहा था।

''पोलैण्डवाले आ गये तो खिल्ली उड़ायेंगे। यह रहा परिचय-पत्र, माँ को लिख देना, कब और कैसे...''

''नहीं,'' मैं बोला और घोड़े को एड़ लगा दी।

दोल्गुशोव ने ज़मीन पर अपनी नीली हथेलियाँ टिका दीं और उन्हें अविश्वास के साथ ताकने लगा।

''भाग रहा है?'' खिसकते हुए वह बुदबुदाया। ''भाग रहा है, हरामी...''

मेरे रोम-रोम से पसीना फूटने लगा। मशीनगनें अधिकाधिक तेजी से हठी उन्माद में ठक-ठक कर रही थीं। सूर्यास्त के प्रभामण्डल से घिरा अफ़ोन्का बीदा घोड़े को दौड़ाता हमारी ओर आ रहा था।

''चुपचाप खिसक रहे हो,'' वह मस्ती में चिल्लाया। ''क्या तमाशा लगा रखा है यहाँ?''

मैंने दोल्गुशोव की ओर इशारा किया और वहाँ से हट गया।

उन्होंने थोड़ी बात की, शब्द मुझे नहीं सुनाई पड़े। दोल्गुशोव ने प्लाटून कमाण्डर को अपना परिचय-पत्र थमाया। अफ़ोन्का ने उसे अपने ऊँचे बूट में खोंस लिया और दोल्गुशोव के मुँह में गोली मार दी।

''अफ़ोन्का,'' मैं दयनीय मुस्कान के साथ बोला और कज़्ज़ाक के पास गया, ''पर मैं यह नहीं कर सका।''

''भाग यहाँ से,'' वह बोला, उसके चेहरे का रंग उड़ गया, ''मार डालूँगा! तुम चश्मेवाले हमारी बिरादरी पर वैसे ही रहम करते हो जैसे बिल्ली चूहे पर...''

और उसने अपनी पिस्तौल का घोड़ा चढ़ाया।

मैं दुलकी चाल, बिना मुड़कर देखे, अपनी पीठ से ठण्ड और मौत को महसूस करते हुए आगे चल दिया।

''छोड़,'' पीछे ग्रीश्चूक चिल्लाया, ''पागल मत बन!'' और उसने अफ़ोन्का का हाथ पकड़ लिया।

''हरामजादा!'' अफ़ोन्का चिल्लाया, ''मैं उसे नहीं छोड़नेवाला...

मोड़ पर ग्रीश्चूक मेरे पास आ गया। अफ़ोन्का नहीं था। वह दूसरी दिशा में चला गया।

''देखा, ग्रीश्चूक,'' मैं बोला, ''आज मैंने अपने जिगरी यार, अफ़ोन्का को खो दिया...''

ग्रीश्चूक ने सीट के नीचे से पिचका सेब निकाला।

''खा लो,'' वह मुझसे बोला, ''कृपा करके खा लो...''

दूसरी ब्रिगेड का कमाण्डर

रुपहली पट्टियों वाली लाल पतलून पहने बुद्योन्नी पेड़ के पास खड़े थे। अभी कुछ देर पहले दूसरी ब्रिगेड का कमाण्डर मारा गया। उसके स्थान पर सेना कमाण्डर ने कोलेस्निकोव को नियुक्त किया।

एक घण्टे पहले कोलेस्निकोव रेजीमेण्ट कमाण्डर था। एक हफ़्ते पहले वह स्क्वाड्रन कमाण्डर था।

नये ब्रिगेड कमाण्डर को बुद्योन्नी ने बुलवाया था। सेना कमाण्डर पेड़ के पास खड़ा उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। कोलेस्निकोव अपने कोमिसार अलमाजोव के साथ आया।

''स्सालो ने नाक में दम कर रखा है,'' सेना कमाण्डर ने अपनी दमकती मुस्कान के साथ कहा। ''जीतेंगे या मरेंगे। कोई और चारा नहीं। समझे?''

''समझ गया,'' कोलेस्निकोव ने आँखें फाड़कर उत्तर दिया।

''और अगर पीठ दिखायी तो गोली मार दूँगा,'' सेना कमाण्डर यह कहकर मुस्करा दिया और नज़रें सुरक्षा अधिकारी की ओर मोड़ीं।

''जो हुक्म!'' सुरक्षा अधिकारी बोला।

बुद्योन्नी ने एड़ियों पर घूमकर नये बिग्रेड कमाण्डर को सिल्युट दिया। उसने अपनी टोपी के छज्जे के पास अपनी तरुण लाल उँगलियाँ फैलायीं, चेहरे पर पसीना छा गया और मुड़कर वह जुती मेड़ पर चल दिया। कोई सौ गज की दूरी पर घोड़े उसकी प्रतीक्षा में खड़े थे। वह सिर झुकाकर अपनी लम्बी बांडी टाँगों को बेहद धीरे-धीरे हिलाता डग भरता जा रहा था। सूर्यास्त की सिन्दूरी और मुँह बाये खड़ी मौत की तरह असम्भाव्य आभा उसे नहला रही थी।

और अचानक भूमि के विस्तार पर, खेतों की पीली जुती मिट्टी पर हमें सिर्फ़ कोलेस्निकोव की झूलते हाथों और सलेटी टोपी लगे झुके सिरवाली सँकरी पीठ दिखायी पड़ी।

अर्दली उसके लिए घोड़ा लाया।

वह घोड़े पर सवार होकर बिना मुड़े अपनी बिग्रेड की ओर रवाना हो गया। बड़ी सड़क पर, ब्रोदी राजमार्ग पर स्क्वाड्रन उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

हमारे कानों तक हवा के झोंके ''हुर्रा'' के नाद की अंश पहुँचा रहे थे।

दूरबीन लगाकर मैंने घनी धूल के गुबार बिग्रेड कमाण्डर को अपने घोड़े पर लट्टू की तरह नाचते देखा।

''कोलेस्निकोव ने कर दी चढ़ाई अपनी बिग्रेड के साथ,'' ऊपर पेड़ पर बैठा पर्यवेक्षक

बोला।

"ठीक," बुद्योनी ने जवाब दिया और सिगरेट सुलगाकर आँखें मूँद लीं।

"हुर्रा" का नाद थम गया। तोपों की गोलाबारी घुट गयी। बेकार ही किरच का गोला जंगल के ऊपर फटा। और हम सबको मार-काट की महान नीरवता सुनाई पड़ी।

"भला लड़का है," उठकर सेना कमाण्डर बोला।"नाम कमाना चाहता है। मेरे ख़्याल से सम्भाल लेगा।"

और घोड़े मँगवाकर बुद्योन्नी युद्धस्थल की ओर रवाना हो गये। हेडक्वार्टर भी उनके पीछे-पीछे चल पड़ा।

उसी शाम, पोलिशों को नष्ट किये जाने के एक घण्टे बाद मुझे कोलेस्निकोव को फिर से देखने का मौका मिला। वह अपनी बिग्रेड को आगे-आगे अकेला, समन्द घोड़े पर बैठा ऊँघता हुआ जा रहा था। उसकी दायीं बाँह गर्दन पर लटकी पट्टी में झूल रही थी। उससे दस कदम की दूरी पर घुड़सवार कज़्ज़ाक फहराता झण्डा लिये जा रहा था। सबसे आगे वाला स्क्वाड्रन अलसाये स्वर में भद्दी तुकबन्दियाँ गा रहा था। ब्रिगेड मेले को जाते किसानों की बैलगाड़ियों के धूल भरे, अनन्त ताँते की तरह लग रही थी। पीछे-पीछे थके-माँदे बैण्ड फुफकारते चल रहे थे।

उस शाम घोड़े पर बैठने के कोलेस्निकोव के ढंग में मुझे तातार खान के रौब की झलक और विख्यात क्नीगा, मनमौजी पावलीचेन्को और मनमोहक सावीत्स्की की ट्रेनिंग दिखायी दी।

साश्का मसीहा

साश्का उसका नाम था और विनयशीलता के लिये उसे मसीहा नाम दिया गया। वह कज़्ज़ाकों के गाँव का पंचायती चरवाहा था और चौदह साल की उम्र से, जबसे उसे बदनाम बीमारी लगी वह कोई भारी काम नहीं करता था। किस्सा यह था :

साश्का का सौतेला बाप तराकानिच सर्दियों में कुछ कमाने के लिये गोज्नी शहर चला गया और वहाँ मज़दूर टोली मे शामिल हो गया। र्‌याजान के किसानों की टोली का काम अच्छा चल रहा था। तराकानिच उनके लिये बढ़ई का काम करता और उसको खासी आमदनी होने लगी। काम इतना अधिक था कि उसने मदद के लिए लड़के को अपने पास बुलवा लिया, सर्दियों में गाँववाले साश्का के बिना काम चला सकते थे। साश्का ने कठबाप के साथ एक हफ़्ते काम किया। फिर शनिवार का दिन आया। काम करके वे चाय पीने बैठे। अक्टूबर का महीना था, पर हवा सुहानी थी। उन्होंने खिड़की खोल डाली और दोबारा समोवार उबाला। सड़क पर भिखारिन चक्कर लगा रही थी। उसने खिड़की खटकायी और बोली :

"नमस्ते, परदेसी किसानो। मेरे हाल पर दया करो।"

"किस हाल पर?" तराकानिच बोला। "अन्दर आ, लंगड़ी।"

भिखारिन बाहर देर लगाकर कमरे में घुस पड़ी। वह मेज के पास आकर ज़मीन तक झुकी। तराकानिच ने उसके सिर पर बँधा रूमाल खींचकर फेंक दिया और उसके बाल खुजाये। भिखारिन के सलेटी, सफ़ेद चीकट बाल धूल से भरे थे।

"अरे, कैसा तेज-तर्रार जवाँमर्द है," वह बोली, "अखाड़े का पहलवान है... कृपया मुझ बुढ़िया से घिन मत करना," वह जल्दी-जल्दी बुदबुदायी और खाट पर चढ़ गयी।

तराकानिच उसके साथ लेट गया। भिखारिन सिर लुढ़ाकर खिलखिला रही थी।

"बरखा बरसे बुढ़िया पे," वह हँसते हुए बोली, "अन्न उगे धरती पे..."

और यह कहकर उसकी नज़र मेज के पास बैठे साश्का पर पड़ी जो आँखें झुकाये चाय पी रहा था।

"तेरा छोरा है?" उसने तराकानिच से पूछा।

"मेरा ही मानो," तराकानिच ने उत्तर दिया, "बीवी का है।"

"बच्चा है, दीदे फाड़े देख रहा है," भिखारिन बोली, "अरे, आ इधर को।"

साश्का उसके पास गया—और लग गयी उसे बदनाम बीमारी। पर तब बदनाम बीमारी के बारे में किसने सोचा था। तराकानिच ने भिखारिन को खाने की जूठन और चाँदी का चमचमाता पाँच कोपेक का सिक्का दिया।

"इसे रेत से घिस-घिस कर चमका लेना," तराकानिच बोला, "वह और भी चमकने लगेगा, भाग्यवान। अँधेरी रात को भगवान को उधार दे देना तब यह सिक्का चाँद की जगह चमकेगा..."

भिखारिन ने सिर पर रूमाल बाँधा, जूठन उठायी और चली गयी। और दो हफ़्ते बाद मर्दों को सब पता चल गया। बदनाम बीमारी ने उन्हें बड़ा सताया, जाड़े भर वे परेशान रहे, जड़ी-बूटियों से इलाज करते रहे। और बसंत में अपनी किसानी के काम के लिये गाँव रवाना हो गये।

गाँव स्टेशन से नौ मील दूर था। तराकानिच और साश्का खेतों के बीच जा रहे थे। ज़मीन अप्रैल की नमी से सराबोर थी। काले गढ़ों में भरा हरा पानी पन्ने की तरह दमक रहा था। हरी पौध ज़मीन पर पेचीली बखिया की तरह लग रही थी। ज़मीन वैसी ही आतुर थी जैसी मोर्चे पर गये सिपाही की औरत। टीलों से मवेशियों के पहले झुण्ड मैदान में उतर रहे थे, क्षितिज के नील विस्तार पर बछेड़े अठखेलियाँ कर रहे थे।

तराकानिच और साश्का लगभग अगोचर पगडण्डियों पर चल रहे थे।

"तराकानिच, मुझे जाने दो पंचायती गड़रिया बनने के लिए," साश्का बोला।

"क्यों?"

"मुझ से नहीं रहा जाता, गड़रियों की ज़िन्दगी कितनी बढ़िया होती है।"

"मैं राजी नहीं हूँ," तराकानिच बोला।

"भगवान के लिये, जाने दो मुझे, तराकानिच," साश्का ने अपना अनुरोध दोहराया, "सब ईसाई सन्त गड़रिये रहे थे।"

"साश्का-सन्त," कठबाप हो-हो करके हँस पड़ा, "होली मदर से सिफलिस की बीमारी का परसाद लाया।"

क्रास्नी पुल के पास मुड़कर वे झुरमुट और चरागाह से आगे गये और उन्हें गाँव के गिरजे के गुम्बद पर लगा सलीब दिखायी पड़ा।

लुगाइयाँ अभी तक सागबाड़ियों में दौड़-धूप कर रही थीं और मर्द बकाइन की झाड़ियों में बैठे वोद्का पी रहे थे, गीत गा रहे थे। तराकानिच के घर तक अभी आधे मील का रास्ता बाकी था।

"भगवान की दया से सब ठीक-ठाक हो," वह बोला और सलीब का चिह्न बनाया।

घर के पास पहुँचकर वे खिड़की से अन्दर झाँके। घर में कोई नहीं था। साश्का की माँ अस्तबल में गाय दुह रही थी। वे दबे पाँव वहाँ पहुँचे। तराकानिच अपनी लुगाई के पीछे जाकर हँस पड़ा और ज़ोर से बोला :

"मोल्या रानी, मेहमानों का खाना लगाओ..."

उसकी लुगाई ने मुड़कर देखा और हड़बड़ाकर अस्तबल में भाग गयी और अहाते के चक्कर काटने लगी। फिर वह अपनी जगह लौटी और तराकानिच की छाती से चिपटकर छटपटाने लगी।

"तू कितनी पगली और डरपोक है," स्नेह के साथ उसे हटाते हुए तराकानिच बोला। "बच्चे दिखा..."

"बच्चे घर से चले गये," वह बोली, उसके चेहरे का रंग उड़ गया और फिर से भागकर वह अहाते में ज़मीन पर लोट गयी। "अरे, मेरे अल्योशेन्का," वह बुरी तरह चीखी, "चले गये बच्चे हमारे हमें छोड़के..."

तराकानिच खीजकर पड़ोसियों के यहाँ चला गया। पड़ोसियों ने बताया कि लड़का और लड़क पिछले हफ़्ते टाइफस के कारण भगवान को प्यारे हो गये। मोल्या ने उसे चिट्ठी लिखी थी जो शायद अभी रास्ते में होगी। तराकानिच घर लौटा। उसकी बीवी अँगीठी जला रही थी।

"अपना पिण्ड छुड़ा लिया तूने, मोल्या, तेरी चमड़ी उधेड़ने की ज़रूरत है।"

वह मेज पर बैठा और रंज में डूब गया–सोने के वक्त तक वह रंज में डूबा रहा, वोदका पीता और मांस खाता रहा, घरबार की उसने कोई खबर न ली। वह मेज पर बैठा खर्राटे ले रहा था, जागता, फिर खर्राटे लेने लगता। मोल्या ने पलंग पर अपने और पति के लिए बिस्तर बिछाया और साश्का के लिये कोने में बिछौना बिछा दिया। उसने फूँक मारकर लालटेन बुझायी और पति के साथ लेट गयी, साश्का अपने कोने में सूखी घास पर लेटा करवटें बदल रहा था, उसकी आँखें चौड़ी खुली थीं। वह सो नहीं रहा था पर मानो सपने में वह घर, खिड़की में झाँकते तारे, मेज के किनारे और

माँ के पलंग के नीचे रखे जुओं को देख रहा था। यह सपना उस पर बलात् हावी हो गया और वह कल्पनालोक में विचरने लगा, वह जागृत अवस्था में स्वप्न देखकर पुलकित हो उठा। उसे प्रतीत हुआ कि आकाश से चाँदी के धागों से बटी दो डोरें लटकी हैं जिससे एक हिंडोला बँधा है, शीशम की लकड़ी का हिंडोला, बेल-बूटों से सजा। वह ज़मीन से बहुत ऊँचाई पर आसमान के नीचे डोल रहा था और चाँदी की डोरें हिलती हुई चमचमा रही हैं। साश्का हिंडोले में लेटा है और हवा उसे सहला रही है। संगीत की तरह गूँजती हवा खेतों से आ रही है और खेतों में खड़ी हरी फसल के ऊपर इन्द्रधनुष तना है।

साश्का जागृत अवस्था में अपने इस स्वप्न को देखकर पुलकित हो रहा था और माँ के पलंग के नीचे पड़े जुओं को न देखने के लिये वह आँखें मूँद लेता। फिर उसे माँ के बिस्तर से धौंकनी की तरह चलती साँस सुनाई दी। उसने सोचा कि तराकानिच माँ को रौंद रहा है।

"तराकानिच", वह ज़ोर से बोला, "तुमसे एक काम है।"

"रात को क्या काम हो सकता?" गुस्से में तराकानिच ने कहा। "से जा, हरामी..."

"भगवान की कसम, सचमुच एक काम है," साश्का बोला, "बाहर चलो।"

और बाहर अहाते में जगमगाते तारों की छाया में साश्का ने कठबाप से कहा :

"माँ को मत छेड़ो, तराकानिच, तुम बीमार हो।"

"तू मेरा स्वभाव जानता है?" तराकानिच ने पूछा।

"मैं तुम्हारा स्वभाव जानता हूँ, पर तुमने माँ को देखा है, कैसा है उसका शरीर? उसके पैर भी निर्मल हैं और छाती भी। तुम उसे मत छेड़ो, तराकानिच। हमें छूत की बीमारी है।"

"भले आदमी," कठबाप बोला, "खून-खराबे और मेरे स्वभाव से बच। ले बीस कोपेक, रात को सो ले, सुबह जाकर पी लेना, दिमाग़ ठिकाने आ जायेगा..."

"मुझे बीस कोपेक की क्या पड़ी," साश्का बुदबुदाया, "मुझे पंचायती गड़रिया बनने दो..."

"मैं इसके लिये राजी नहीं हूँ," तराकानिच बोला।

"जाने दो मुझे गड़रिया बनने के लिये," साश्का बुदबुदाया, "नहीं तो मैं माँ के सामने सारी पोल खोल दूँगा। वह बेचारी क्यों कष्ट भुगते, ऐसी देह पर..."

तराकानिच मुड़कर कोठरी में गया और कुल्हाड़ी ले आया।

"सन्त कहीं का," वह फुसफुसाकर बोला, "अभी कर देता हूँ तेरा काम तमाम... मैं तेरी बोटी-बोटी काट डालूँगा, साश्का..."

"लुगाई के लिये तुम मुझ पर हाथ नहीं उठा सकते," लड़का बड़ी धीमी आवाज़ में बोला और कठबाप के कान की ओर झुका, "तुम मुझ पर तरस करते हो, जाने दो मुझे गड़रिया बनने को..."

''भाड़ में जा,'' तराकानिच बोला और उसने कुल्हाड़ी पटक दी, ''जा, बन जा गड़रिया।''

और घर के अन्दर लौटकर उसने अपनी बीवी का सम्भोग किया।

उसी सुबह साश्का ने जाकर कज़्ज़ाक किसानों से गड़रिये का काम माँगा और तबसे पंचायती गड़रिया बन गया। पूरे इलाके में वह अपने भोलेपन के लिये मशहूर हो गया, गाँववाले उसे ''साश्का मसीहा'' कहकर पुकारने लगे। इसी तरह वह अनिवार्य सैनिक सेवा का बुलावा आने तक गड़रिये का काम करता रहा। गाँव के निखट्टू बूढ़े जबान लड़ाने के लिये चरागाह में उसके पास आते, लुगाइयाँ मरदों की खब्त से दम लेने उसके पास आतीं और उसके प्यार और बीमारी पर वे गुस्सा नहीं करतीं। प्रथम विश्वयुद्ध के पहले ही साथ साश्का को फ़ौज का बुलावा आ गया। चार साल मोर्चे पर बिताने के बाद जब वह गाँव में लौटा तो वहाँ श्वेत गार्ड मनमानी कर रहे थे। साश्का को प्लातोव्स्का गाँव जाने को राजी कर लिया गया जहाँ श्वेत गार्ड के ख़िलाफ़ दस्ते का गठन किया जा रहा था। रिसाले का सार्जेण्ट मेजर सेम्योन मिखाइलोविच बुद्योन्नी इस दस्ते का कर्ता-धर्ता था और उसके साथ तीन भाई भी थे : येमेल्यान, लुक्यान और देनीस। साश्का प्लातोव्स्काया चला गया और वहीं उसके भाग्य का फ़ैसला हो गया। वह बुद्योन्नी की रेजीमेण्ट में, उनकी ब्रिगेड, डिवीजन और प्रथम अश्व सेना में रहा। वह वीर नगर त्सारीत्सिन की सहायता के लिये गया, वोरोशीलोव की दसवीं सेना से हुए मिलन में शामिल हुआ, वोरोनेज, कोस्तोर्नाया और दोनेत्स पर गेनेराल्स्की पुल की लड़ाइयों में लड़ा। पोलिश अभियान के दौरान साश्का गाड़ीवान था क्योंकि वह घायल था और उसे अपाहिज माना जाता था।

तो यह था किस्सा। कुछ समय से साश्का के साथ मेरी यारी हो गयी और अपनी सन्दूकची मैंने उसके छकड़े पर लाद दी। अक्सर हम एक साथ भोर का स्वागत करते और डूबते सूरज को विदा करते। और जब कभी मनमौजी युद्ध की इच्छा से हम साथ रहते तो शाम को हम किसी झिलमिलाते चबूतरे पर बैठते या जंगलों में अपनी कालिख भरे देगची में चाय बनाते या पैर से अपने भूखे घोड़े को बाँधकर लुने खेतों में अगल-बगल लेटकर सो जाते।

मत्वेई रोदिओनिच पावलीचेन्को की रामकहानी

देशजो, कामरेडो, प्यारे बन्धुओ! मानवजाति के हेतु सुनो लाल जनरल मत्वेई पावलीचेन्को का जीवन चरित। वह जनरल गड़रिया था, जागीरदार निकीतिन्स्की की लीदीनोवाली जागीर में और मालिक के सुअर चराता था। तब तक वह चराता रहा उन्हें जब तक ज़िन्दगी ने उसके कन्धों पर प्रोमोशन के फीते न टाँक दिये। और कन्धों पर इन फीतों को टाँककर मत्वेई दुधारू ढोर चराने लगा। और क्या पता यारो, अगर हमारा मत्वेई वल्द रोदिओन आस्ट्रेलिया में पैदा होता तो हाथियों को चराता,

यह तो बेहद मुमकिन है, उसकी इतनी तरक्की होती, पर दुख तो मुझे इस बात का है कि हमारे स्ताव्रोपोल प्रान्त में हाथी कहा से आयें। सच-सच कहूँ हमारे स्वछन्द स्ताव्रोपोल प्रदेश में भैंस से बड़ा कोई जानवर ही नहीं मिलता। और भैंस से ग़रीब के पल्ले क्या पड़ेगा, रूसी आदमी को भैंसों को सताकर मजा नहीं आता, हम यतीमों को तो घोड़ा दो, घोड़ा, ऐसा कि खेत जोत-जोतकर उसकी जान हाड़-मांस को भेदकर निकल जाये...

हाँ तो मैं अपने ढोर चरा रहा था, चारों ओर से गायों से घिरा, दूध में सराबोर, मेरे बदन सक चिरे थर की बू आती थी, मेरे इर्द-गिर्द चरते बछड़े, चूहों जैसे धूसर रंग के बछड़े बची-खुची कसर पूरी कर रहे थे। मेरे चारों ओर खेतों में स्वच्छन्दता का राज था, घास कुरकुरा रही थी, सिर के ऊपर आसमान का चंदोवा तना था, यारों एक बात बताऊँ, स्ताव्रोपोल प्रान्त में आसमान होता बहुत नीला है। हाँ तो मैं इस तरह ढोर चरा रहा था, काम कोई था नहीं इसलिये हवा से होड़ करता बाँसुरी बजा रहा था कि एक बूढ़ा आकर बोला मुझसे :

''मत्वेई, जा नास्त्या के पास।''

''किसलिये,'' मैंने पूछा, ''या आप, बूढ़े महाराज, मेरी हँसी उड़ा रहे हैं?...''

''जा,'' वह बोला ''उसकी यह इच्छा है।''

और मैं हो गया उपस्थित उसके सामने।

''नास्त्या!'' मैं बोला और मुझे काटो तो खून नहीं। ''नास्त्या, आप मेरी हँसी तो नहीं उड़ा रही हैं?''

पर उसने मुझे अपनी बात सुनने का सुख नहीं दिया और सिर पर पाँव रखकर दौड़ पड़ी, वह पूरी शक्ति बटोरकर दौड़ रही थी, मैं भी उसके साथ दौड़ रहा था, ऐसे दौड़ते-दौड़ते हम चरागाह में पहुँचकर रुक गये, हम दोनों निढाल खड़े थे, चेहरे हमारे लाल और साँस फूली हुई थी।

''मत्वेई,'' वहीं नास्त्या मुझसे बोली, ''दो हफ़्ते पहले इतवार के दिन, जब वसन्त की मछली के शिकार के वक्त मछेरे किनारे पर जा रहे थे आप भी उनके साथ जा रहे थे और आपने सिर झुका रखा था। मत्वेई, आपने क्यों सिर झुकाया था, या कोई बात आपके दिल को तड़पा रही है? जवाब दीजिये मुझे...''

और मैंने उसे उत्तर दिया :

''नास्त्या,'' मैं बोला, ''मुझे आपको जवाब देने के लिये कुछ नहीं, मेरा सिर बन्दूक नहीं, न उस पर मक्खी है कि झट से निशाना लगाया और दे डाला जवाब और मेरे दिल का हाल आप जानती हैं, नास्त्या, वह बिल्कुल सूना पड़ा है, बस उसमें दूध ही शायद भरा है, मुझसे दूध की कितनी बू आती है, बड़ी भयंकर बात है...''

और देखता क्या हूँ कि नास्त्या मेरे इन शब्दों से खिलखिला पड़ी।

''कसम से,'' वह हँसती हुई, ज़ोर-ज़ोर से खिलखिलाती हुई, स्तेपी को ऐसे गुंजारित

करते हुए हँसती बोली मानो ढोल पीट रही हो, "मैं कसम से कहती हूँ कि आप मेमों से दीदे लड़ाते हैं..."

और बस कुछ समय तक उसके साथ इसी तरह की बेवकूफ़ी भरी बातें करके हमने शीघ्र ही शादी कर ली। और हम नास्त्या के साथ जैसे आता था वैसे रहने लगे और आता हमें बहुत कुछ था। रात भर हमें गर्मी लगती, सर्दियों में हमें गरमी लगती। रातों को हम नंग-धड़ंग घूमते एक दूसरे की खाल नोचते। बड़ी मौज की ज़िन्दगी जीते, और यह सिलसिला तब तक चलता रहा जब वही बूढ़ा दूसरी बार मेरे पास न आया।

"मत्वेई," वह बोला, "मालिक अभी तेरी बीवी से छेड़छाड़ कर रहा था, वह, मतलब मालिक, उसे हड़प लेगा..."

और मैं बोला :

"नहीं-नहीं, माफ़ करो बुड्ढे महाराज, मैं अभी यहीं आपका काम तमाम कर दूँगा।"

और बूढ़ा बेशक, सिर पर पाँव रखकर भाग गया। और मैंने उसी दिन अपनी टाँगों से बीस मील ज़मीन नाप डाली, उस दिन में अपने पाँवों से बहुत चला और शाम को लीदीनो में अपने रंगीले मालिक निकीतिन्स्की की हवेली में जा पहुँचा। वह बुढ़ऊ, बड़े कमरे में बैठा तीन जीनों—इंग्लिस्तानी, ड्रेगूनी और कज़्ज़ाकी—में उलझा हुआ था और मैं दरवाज़े पर जंगली घास की तरह एक घण्टे से यों ही खड़ा था। पर बाद में उसने मुझ पर नज़र डाली।

"क्या चाहिये तुझे?" उसने पूछा।

"मेरा हिसाब कर दें।"

"मेरे ख़िलाफ़ साजिश कर रहा है?"

"साजिश कोई नहीं पर मेरा हिसाब कर दें।"

तब उसने नज़रें मोड़ीं, शाहराह से अन्धी गली में मोड़ी, फ़र्श पर उसने सिन्दूरी चारजामे बिछाये, वे जार के झण्डों से भी चटकीले रंग के थे। बूढ़ा उन पर खड़ा हुआ और आग बरसाने लगा।

"मर्जीवाले की मर्जी है," वह आगबबूला होकर बोला, "मैंने तुम सबकी माँओं को, भले ईसाइयों, सवारी करायी है, हिसाब साफ़ करवा सकता है, पर यार मेरे मत्वेई, कहीं तू मेरा थोड़ा-सा देनदार तो नहीं?"

"हो-हो," मैं हँसकर बोला, "आप तो बड़े मजाकिया हैं, कसम से, सचमुच आप बड़े मजाकिया हैं! मेरी कमाई के देनदार तो आप मेरे हैं..."

"कमाई का," मेरे मालिक ने दाँत पीसकर कहा और धक्का देकर मुझे घुटनों पर गिरा दिया, पाँव पटक-पटककर मेरे कानों पर तड़ातड़ घूँसे जड़ने लगा, "अपनी कमाई चाहता है, और जुए के बारे में भूल गया, पिछले साल तूने मेरा बैलोंवाला जुआ तोड़ डाला, कहाँ है वह, मेरा जुआ?"

"जुआ मैं तुम्हें दे दूँगा," मैं अपने मालिक से अपने भोले नैन उठाकर बोला, मैं घुटनों पर ज़मीन से भी नीचे झुककर बैठा था, "मैं तुम्हें जुआ लौटा दूँगा पर तुम, बूढ़े आदमी, मुझ पर कर्ज़ का फन्दा मत कसो, कुछ मोहलत दो..."

और फिर पता है क्या हुआ मेरे स्ताव्रोपोलवासियो, मेरे देशतजो, कामरेडो, भाइयो मेरे! पाँच साल तक मालिक मेरा मुझसे कर्ज वसूलता रहा, पाँच काले सालों तक मैं मरता रहा जब तक सन अठारह का साल हमारे घर मेहमान बनकर न आया। वह अपने चंचल घोड़ों पर, कबर्दा नस्ल के घोड़ों पर सवार होकर आया। अपने साथ वह लम्बा कारवाँ और तरह-तरह के गीत लाया। अरे, सन अठारह मेरे प्यारे, तेरे भी क्या कहने! क्या फिर तेरी बाँह में बाँह डालकर तेरे साथ नाचने का मौका नहीं मिलेगा, सन अठारह मेरे जिगर के टुकड़े... गा डाले हमने तेरे गीत, पी डाली तेरी शराब, तेरी सच्चाई को हमने रोप दिया, बस बाबू लोग ही बचे हैं हमें तेरी याद दिलाने को। अरे, प्यारे मेरे! उन दिनों बाबू लोग नहीं घूमते फिर रहे थे कुबान की धरती पर और एक कदम की दूरी से जनरलों के प्राण-पखेरुओं को हवा में उड़ा रहे थे। तब मत्वेई रोदिओनिच प्रिकूस्क के पास खून की होली खेल रहा था और मत्वेई रोदिओनिच और लीदीनो की जागीर के बीच बस पाँच मील की दूरी बची थी। और मैं अकेला, दस्ते को साथ लिये बिना वहाँ जा पहुँचा और चुपचाप बैठकख़ाने में जा खड़ा हुआ। वहाँ, मतलब बैठकख़ाने में भूमि विभाग के हाकिम-हुक्काम बैठे थे और निकीतिन्स्की उन्हें चाय पिला रहा था, उनकी मिज़ाजपुर्सी कर रहा था पर मुझे देखकर उसका चेहरा लटक गया, मैंने उसके सामने अपनी कुबानी टोपी उतार डाली।

"नमस्ते," मैं लोगों से बोला, "नमस्ते स्वीकार करें मेरी। मालिक, कीजिये मेहमान की आवभगत या कुछ और इरादा है?"

"इरादा नेक है, सब शान्ति से, भले लोगों की तरह होगा," उनमें से एक बोला, आवाज़ से उसकी मैं पहचान गया पटवारी को, "यहाँ सब शान्ति से, भलमनसाहत से होगा, पर कामरेड पावलीचेन्को, तू लगता है बड़ी दूर से घोड़े को दौड़ाता आया है, तेरी छवि कीचड़ से लथपथ है। हम, भूमि विभाग के अधिकारी तेरी ऐसी छवि को देखकर डरते हैं, क्यों गत बना रखी है?"

"इसलिये," मैंने जवाब दिया, "मेरे ज़मीनी और बेरहम हाकिम-हुक्कामो, यह इसलिये कि मेरी छवि में एक गाल पाँच साल तक दहकता रहा, खन्दक में दहकता रहा, लुगाई के सामने दहकता रहा, कयामत के दिन भी दहकता रहेगा। कयामत के दिन भी," मैं बोला और निकीतिन्स्की से मानों हँसी भरी नज़र मिलायी, पर उसकी तो आँखें ही न रहीं, बस चेहरे पर दो कंचे थे, मानो किसी ने माथे के नीचे कंचे लगा दिये हों। वह इन बिल्लौरी कंचों से मुझे भी मानो हँसी-खुशी के साथ टुकुर-टुकुर ताक रहा था, पर उसे काटो तो खून नहीं।

"मत्वेई," वह मुझसे बोला, "एक जमाने में तो हमारी जान-पहचान थी, मेरी

पत्नी, नदेज्दा वसील्येव्ना, आजकल हो रहे बदलाव की वजह से उनका दिमाग़ फिर गया है, वह तुझ पर बड़ी मेहरबान थी औ तू भी उनकी सबसे ज़्यादा इज़्ज़त करता था, क्या अब तू उनसे नहीं मिलना चाहता जब उनकी मति मारी गयी?"

"यह भी किया जा सकता है," मैं बोला और हम दोनों दूसरे कमरे में गये, वहाँ वह मेरे हाथ छूने लगा, कभी दायाँ छूता, कभी बायाँ।

"मत्वेई," वह बोला, "बता, तू मेरे भाग्य का तारा है या नहीं?"

"नहीं," मैं बोला, "छोड़ ये बातें। भगवान ने हम नाचीज़ों से कन्नी काट ली है : हमारी ज़िन्दगी दो कौड़ी की है और भाग्य हमारा फूटा है, छोड़ ये बातें, अगर सुनने की इच्छा है तो सुन लेनिन की चिट्ठी।"

"मेरे नाम, निकीतिन्स्की के नाम है चिट्ठी?"

"तेरे लिये ही है," यह कहकर मैंने आदेशों की पंजी निकाली, कोरा पन्ना खोला और पढ़कर सुनाने लगा हालाँकि मेरे लिये काला अक्षर भैंस बराबर है। "जनता के नाम पर," मैं पढ़ने लगा, "और भावी उज्ज्वल जीवन की स्थापना हेतु, मैं मत्वेई रोदिओनिच पावलीचेन्को को, जैसा वह उचित समझे विभिन्न लोगों को जीवन से वंचित करने का आदेश देता हूँ..." "सुना," मैं बोला, "यही है तेरे नाम लेनिन की चिट्ठी..."

और वह बोला : "नहीं!"

"नहीं," उसने कहा, "मत्वेई, हालाँकि ज़िन्दगी शैतान के इशारे पर नाच रही है, रूस की पाक धरती पर खून मिट्टी के मोल बिक रहा है, पर तुझे जितने खून की प्यास है तू उतना हर हालत में पी लेगा और मेरी मौत की छापवाली आँखों को भूल जायेगा, क्या यह बेहतर न होगा कि मैं तुझे अपना तहखाना दिखा दूँ?"

"दिखा," मैं बोला, "क्या पता यह बेहतर हो।"

औ हम फिर कमरों से होते हुए शराब के तहखाने में उतरे। वहाँ उसने एक ईंट हटायी और उस ईंट के पीछे से पिटारी निकाली। उसमें मतलब पिटारी में थीं अँगूठियाँ, कण्ठहार, तमगे और मोतियों से जड़ी देव प्रतिमा। उसने वह मेरे सामने पटक दी और ठूँठ बनकर खड़ा हो गया।

"यह सब तेरा है," वह बोला, "ले ले निकीतिन्स्की खानदान की लक्ष्मी को और चलता बन, जा, घुस जा प्रिकूम्स्क की अपनी माँद में..."

और मैंने आव देखा न ताव उसके बदन को, उसके गले को, उसके बालों को दबोच लिया।

"पर गाल का क्या करूँ मैं," मैं बोला, "अपने दहकते गाल का मैं क्या करूँ?"

और तब वह अपने आप बड़े ज़ोर से हँस पड़ा और उसने छूटने की कोई कोशिश नहीं की।

"गीदड़ की दुम," वह बोला, पर अपने को छुड़ाने की कोशिश नहीं की। "मैं तेरे साथ रूसी साम्राज्य के एक अफ़सर की तरह बात कर रहा हूँ और तुम गँवारों-उजड्डों ने तो भेड़िये का दूध पिया है... मार दे मुझे गोली, कुतिया की औलाद..."

पर मैंने उसे गोली नहीं मारी, मुझे उसे गोली कतई नहीं मारनी थी, मैं उसे खींचकर हाल में ले गया। हाल में नदेज्दा वसील्येव्ना थीं बिल्कुल पगली, वह तलवार को म्यान से निकाले हाल में टहल रही थीं और रुक-रुककर शीशा देख रही थीं। और जब मैं निकीतिन्स्की को घसीटता हाल में लाया, नदेज्दा वसील्येव्ना दौड़कर धम्म से आरामकुर्सी पर बैठ गयी, उनके सिर पर कलगीवाला मखमली मुकुट था और उन्होंने तलवार से मुझे सलामी दी। और तब मैं अपने मालिक को लातें मारने लगा। मैं एक घण्टे तक उसे लातें मारता रहा, या इससे ज़्यादा देर तक भी हो सकता है, खैर जो भी हो, मुझे ज़िन्दगी का पूरा ज्ञान हो गया। गोली मारकर, मैं तो यही कहूँगा, आदमी से बस पिण्ड छुड़ाया जा सकता है। गोली तो उसके लिये क्षमादान के बराबर है और अपने को घिनौने हल्केपन के अलावा कुछ मिलता नहीं। गोली से उसकी आत्मा को कुरेदा नहीं जा सकता, यह नहीं देखा जा सकता कि उसकी आत्मा कहाँ छिपी बैठी है और कैसे बाहर निकलती है। पर मैं अपने पर रहम नहीं करता, मैं दुश्मन को घण्टे भर या इससे भी अधिक समय तक रौंदता रहता हूँ, मैं तो ज़िन्दगी का पूरा ज्ञान पाने की इच्छा रखता हूँ कि वह कैसी है हमारी ज़िन्दगी...

प्रिश्चेपा

मैं लेश्न्यूव जा रहा था जहाँ डिवीजन के हेडक्वार्टर ने डेरा डाला था। युवा कुबानी–अथक बदतमीज, पार्टी से निष्कासित कम्युनिस्ट, भावी गुदड़िया, लापरवाह रतिजरोगी, गपोड़शंख–प्रिश्चेपा अब भी मेरा हमराही था। वह महीन ऊनी कपड़े का सिंदूरी चेर्केसी अंगरखा डाटे था और रोयेंदार ऊन का बाशलिक* पीठ पर लटका था। रास्ते में वह अपने बारे में बताता चल रहा था...

एक साल पहले प्रिश्चेपा श्वेत गार्डवालों की क़ैद से भागा था। बदले में उन्होंने उसके माँ-बाप को बँधक बना लिया और उनके जासूसी विभाग ने उनको मार डाला। घर का माल-असबाब पड़ोसी लूट ले गये। जब श्वेत गार्डवालों को कुबान से खदेड़ दिया गया प्रिश्चेपा अपने गाँव लौटा।

सुबह का वक्त था, पौ फट रही थी, लोग कमरों की खटास भरी घुटन में अभी सो ही रहे थे। प्रिश्चेपा ने सरकारी छकड़ा साथ लिया और गाँव में अपने ग्रामोफ़ोन, देग-भगौने और अपनी माँ के हाथ के कढ़े तौलिये बरामद करने चल पड़ा। वह काला लबादा ओढ़े सड़कर पर निकला, कमरबन्द में कटार खोंसी हुई थी, छकड़ा पीछे-पीछे आ रहा था। प्रिश्चेपा बारी-बारी से पड़ोसियों के यहाँ जा रहा था, खून में सने तलवों के चिन्ह उसके पीछे छूटते जा रहे थे। उन घरों में जहाँ उसे माँ की चीज़ें या बाप का पाइप मिलता वह बुढ़ियों को घायल कर, कुत्तों को कुओं पर लटकाकर, देव प्रतिमाओं को गू में सानकर चला जाता। गाँववाले गुमसुम पाइपें पीते हुए उसकी युवा कज़्ज़ाक

* बाशलिक–कज़्ज़ाकों का हुड जो टोपी और मफलर का काम देता है।

स्तेपी में बिखरकर गिनती करने लगे। गिनती बढ़ती जा रही थी औ गाँव चुप था। काम पूरा करके प्रिश्चेपा माँ-बाप के लुटे घर में वापस लौटा। उसने बरामद किये गये सामान को उसी तरतीब से रखा जैसे वह बचपन से देखता आया था और वोदका मँगवाई। घर में बन्द होकर वह दो दिन तक पीता, गाता, रोता और तलवार से मेज़ों को काटता रहा।

तीसरी रात गाँव को प्रिश्चेपा के मकान से धुआँ फूटता दिखायी पड़ा। झुलसा, चिथड़ों में लिपटा वह लड़खड़ाते हुए गाय को कोठरी से निकालकर लाया और उसके मुँह में रिवाल्वर ठूँसकर घोड़ा दबा दिया। उसके पाँव तले ज़मीन सुलग रही थी, आग का नीला छल्ला चिमनी से निकलकर घुल गया, अस्तबल मे छूटे बछड़े का आर्तनाद गूँज उठा। मकान होली की तरह धू-धू जल रहा था। प्रिश्चेपा ने घोड़ा खोला, उछलकर जीन पर सवार हो गया, आग में अपने सिर के बालों की लट काटकर फेंकी और ग़ायब हो गया।

क़िस्सा एक घोड़े का

हमारे डिवीजन कमाण्डर सावीत्स्की ने कभी पहली स्क्वाड्रन के कमाण्डर ख़्लेब्निकोव का सफ़ेद घोड़ा ले लिया था। घोड़ा देखने में अच्छा था पर अभी था कच्चा, मुझे तब वह कुछ भारी-भरकम सा लगता था। बदले में ख़्लेब्निकोव को काली घोड़ी मिली सरपट दौड़नेवाली और नस्ल भी बुरी नहीं थी। पर वह घोड़ी का ख़्याल नहीं रखता है, उसके मन में बदले की आग दहक रही थी, वह मौके की ताक में था और मौका उसे मिल गया।

जुलाई की असफल लड़ाइयों के बाद जब सावीत्स्की को पदमुक्त करके चण्डावल रिजर्व में स्थानान्तरित कर दिया गया, ख़्लेब्निकोव ने उसे उसका घोड़ा लौटाने की अर्जी लिखी सेना हेडक्वार्टर को। स्टाफ अधिकारी ने अर्जी पर लिख दिया फ़ैसला : "वर्णित घोड़े को प्रारम्भिक स्थिति में लौटा दिया जाये," और ख़्लेब्निकोव विजयोल्लास में सौ मील दूर सावीत्स्की को ढूँढने के लिये रवाना हुआ जो तब भिखमंगी जैसे लंगड़े-लूले फटीचर कस्बे रादूजीवील्लोव में रहता था। वह, पदच्युत डिवीजन कमाण्डर अलगाव में रहता था, हेडक्वार्टरों के चाटुकार अब उसे नहीं पहचानते थे। हेडक्वार्टरों के चाटुकार अब आर्मी कमाण्डर की चमचागिरी करते थे और उन्होंने सुविख्यात डिवीजन कमाण्डर की ओर से मुँह मोड़ लिया था।

वह यहूदी क्वार्टर मास्टर से छीनी गयी कज़्ज़ाक औरत पावला, बढ़िया नस्ल के उन बीस घोड़ों के साथ अपने बुरे दिन काट रहा था जिन्हें हम उसकी सम्पत्ति समझते थे। अपने बदन पर वह ढेर सारा इत्र छिड़कता और देखने में पीटर महान जैसा लगता। सूरज उसके अहाते पर पूरे ज़ोर से अपनी चौंध भरी किरणें बरसा रहा था, उसके अहाते में बछेड़े ज़ोर-ज़ोर से अपनी माँओं के थन चूस रहे थे, बदरंग छाजों से

गीली पीठोंवाले साईस जौ फटक रहे थे। सत्य से आहत और प्रतिशोध से प्रेरित ख़्लेब्निकोव सीधा दुनिया से कटे इस अहाते की ओर जा रहा था।

"क्या आप मुझे पहचानते हैं?" उसने सूखी घास के ढेर पर लेटे सावीत्स्की से पूछा।

"लगता है कहीं देखा है तुझे," सावीत्स्की ने उत्तर देकर उबासी ली।

"तब स्टाफ अधिकारी का फ़ैसला पढ़ें," ख़्लेब्निकोव दृढ़ता के साथ बोला, "और मैं आपसे, रिजर्व के कामरेड, अनुरोध करता हूँ कि मुझे औपचारिक दृष्टि से देखें..."

"चलो, देख लेते हैं," सुलह के अन्दाज़ में सावीत्स्की बुदबुदाया, क़ागज़ थामा और बड़ी ही देर तक उसे पढ़ता रहा। फिर उसने अचानक ठण्डक में सायबान के तले बैठी बालों में कंघी करती कज़्ज़ाकन को आवाज़ दी।

"पावला," वह बोला, "सुबह से बैठी बाल काढ़ रही हो, कसम से... समोवार ही भिजवा दो..."

कज़्ज़ाकन ने कंघी रख दी और हाथ से बालों को पीठ पर डाल दिया।

"आज तो दिन भर आप चैन नहीं लेने दे रहे," वह सुस्त, मालिकाना मुस्कान के साथ बोली, "कभी आपको यह चाहिये, कभी वह..."

और वह डिवीजन कमाण्डर की ओर चल पड़ी, वह अपनी ऊँची एड़ियों की चप्पलों पर छाती को उठाये चल रही थी, छातियाँ उसकी बोरी में बन्द जानवर की तरह कुलबुला रही थीं।

"दिन भर चैन नहीं लेने देते," वह दमकती हुई फिर से बोली और उसने डिवीजन कमाण्डर की कमीज के छाती पर खुले बटन बन्द कर दिये।

"कभी मुझे यह चाहिये, कभी वह," बैठते हुए डिवीजन कमाण्डर हँस पड़ा, उसने पावला के झुके कन्धे अपनी बाँहों में भर लिये और अचानक ख़्लेब्निकोव की आरे अपना भावशून्य चेहरा मोंड़ा।

"मैं अभी ज़िन्दा हूँ, ख़्लेब्निकोव," कज़्ज़ाकरन को बाँहों में भरते हुए बोला, "अभी मेरे पाँव ज़मीन पर चलते हैं, मेरे घोड़े अभी कुलाँचें भरते हैं, मेरे हाथ अभी तुझे अपनी गिरफ़्त में लेने में समर्थ हैं और मेरी तोप मेरी बगल में गरम हो रही है..."

उसने अपने उघड़े पेट पर लटका रिवाल्वर निकाला और पहली स्क्वाड्रन के कमाण्डर की ओर बढ़ा।

वह एड़ियों पर घूमा, महमेजें उसकी कराह उठीं और वह अहाते से ऐसे दौड़ता निकला जैसे ज़रूरी सन्देश ले जानेवाला अर्दली हो और फिर से उसने सौ मील की दूरी तय की स्टाफ अधिकारी को ढूँढने के लिये पर उसने ख़्लेब्निकोव को धता बता दी।

"तेरा मामला तय हो चुका है," स्टाफ अधिकारी ने कहा। "घोड़ा मैंने तेरा वापस कर दिया है और काम मेरे पास तेरे बिना भी ढेरों हैं।"

उसने ख़्लेब्निकोव की बात नहीं सुननी चाही और इस प्रकार उसने पहली स्क्वाड्रन को उसके फरार कमाण्डर को अन्ततः लौटा दिया। ख़्लेब्निकोव पूरे हफ़्ते ग़ायब रहा

था। इस दौरान हमने दूबेनस्की वन में जाकर पड़ाव डाल दिया था। वहाँ हमने तम्बू गाड़ दिये और मजे में रहते थे। मुझे याद है, ख़्लेब्निकोव इतवार की सुबह लौटा, बारह तारीख़ थी। उसने मुझसे दर्जन से अधिक क़ागज़ और स्याही माँगे। जवानों ने उसके लिए ठूँठ को तराशकर मेज बना दी। ठूँठ पर उसने रिवाल्वर और क़ागज़ रखे और शाम तक बैठा लिखता रहा, ढेरों क़ागज़ उसने खराब कर डाले।

"हूबहू कार्ल मार्क्स लग रहा है," शाम को स्क्वाड्रन का कोमिसार उससे बोला, "अबे, क्या लिख रहा है भूतनी के?"

"शपथ के अनुरूप तरह-तरह के विचारों का वर्णन कर रहा हूँ," ख़्लेब्निकोव ने उत्तर दिया और कोमिसार को बोल्शेविकों की कम्युनिस्ट पार्टी से निकलने का अर्जी थमा दी।

"कम्युनिस्ट पार्टी," अर्जी में कहा गया था, "मेरे अनुमान से अपार हर्ष और अटल सत्य हेतु स्थापित है और उसे छोटी-छोटी बातों पर भी गौर करना चाहिये। अब मैं उस सफ़ेद घोड़े की चर्चा करूँगा जिसे मैंने अपनी प्रतिक्रिया की हद से निकले किसानों से छीना और जो इतना मरियल था कि बहुत से कामरेड बड़ी बेशर्मी से उसकी इस हालत पर खिल्ली उड़ाते, पर मुझमें उनकी यह तीखी हँसी सहने की शक्ति थी और आम ध्येय हेतु दाँत भींचकर मैंने वांछित परिवर्तन तक उसकी सँभाल की, क्योंकि मैं, कामरेडों, कच्चे घोड़ों का बड़ा शौकीन हूँ और मैंने उन पर, साम्राज्यवादी और गृहयुद्धों के बाद कम मात्रा में मेरे पास बची सारी शक्ति लगा दी, और ऐसे घोड़े मेरे लाड़-प्यार को महसूस करते हैं और मैं भी उनकी मूक ज़रूरतों और उनकी माँगों को महसूस करता हूँ, पर अन्यायपूर्ण काली घोड़ी की मुझे ज़रूरत नहीं। मैं न उसको महसूस कर सकता हूँ और न ही सह सकता हूँ, सभी कामरेड इसकी पुष्टि कर सकते हैं, मुझे डर है कि इससे कहीं कोई मुसीबत न आ जाये। और पार्टी, फैसले के अनुसार, मुझे अपनी चीज़ नहीं लौटा सकती, इसलिये मेरे पास आँसुओं के साथ यह अर्जी लिखने के अलावा कोई चारा नहीं, हालाँकि एक सेनानी को आँसू शोभा नहीं देते पर वे बहे ही जा रहे हैं और दिल को बह-बह कर काट रहे हैं, उसे खूनी जख़्मों से ढँक रहे हैं..."

ख़्लेब्निकोव की अर्जी में यह और बहुत-सी अन्य बातें लिखी थीं। वह उसे दिन भर लिखता रहा था और वह बेहद लम्बी थी। कोमिसार और मैं एक घण्टे से ऊपर उस पर मगज खपाते रहे और तभी अन्त तक उसकी बात समझ पाये।

"बड़ा बेवक़ूफ़ है," कोमिसार क़ागज़ को फाड़ते हुए बोला, "डिनर के बाद आना मेरे पास, मैं तेरे साथ बात करूँगा।"

"मुझे तेरी बातों की जरूरत नहीं," ख़्लेब्निकोव काँपता हुआ बोला, "तू मुझे हार गया, कोमिसार।"

वह 'सावधान' की मुद्रा में काँपता खड़ा था और इधर-उधर नज़रें दौड़ा रहा था मानो यह ढूँढ रहा हो कि किस रास्ते भागे। कोमिसार उसके बिल्कुल पास गया पर उससे चूक हो गयी। ख़्लेब्निकोव गोली की तरह छूटकर भाग खड़ा हुआ।

"तू हार गया!" वह बड़े ज़ोर से चीखा और ठूँठ पर चढ़कर अपनी जैकेट फाड़ने लगा और छाती को नोचने लगा।

"मार, सावीत्स्की," वह ज़मीन पर गिरते हुए चिल्लाया, "मार डाल झट से!"

हम उसे घसीटकर तम्बू में ले गये, कज़्ज़ाक जवानों ने हमारी सहायता की। हमने उसके लिये चाय बनायी और सिगरेटें तैयार कीं। वह सिगरेट पी रहा था और थरथर काँपे जा रहा था। शाम को जाकर ही हमारा कमाण्डर शान्त हुआ। बाद में उसने अपनी बेतुकी अर्जी की फिर कभी चर्चा न की पर एक हफ़्ते बाद वह रोव्नो गया, मेडिकल आयोग के समक्ष उपस्थित हुआ और छः बार घायल होने के लिये उसे अपंग का प्रमाण-पत्र देकर उसकी फ़ौज से छुट्टी कर दी गयी।

इस प्रकार हम ख़्लेब्निकोव से वंचित हो गये। मुझे इसका दुख हुआ क्योंकि ख़्लेब्निकोव शान्त व्यक्ति था, उसका स्वभाव मेरे जैसा था। स्क्वाड्रन में केवल उसी के पास समोवार था। लड़ाई में विराम के दिनों हम दोनों गर्मागर्म चाय पीते थे। हम दोनों के एक ही शौक थे। हम दोनों इस दुनिया को वसन्ती शाद्वल की तरह देखते थे, ऐसे शाद्वल की तरह जहाँ नारियाँ और घोड़े अठखेलियाँ करते हैं।

कोन्किन

बेलाया त्सेर्कोव के पास हम पोलैण्डवालों की धज्जियाँ उड़ा रहे थे। जी भरकर हम उनकी धुनाई कर रहे थे, पेड़ तक झुके जा रहे थे। सुबह से मुझे घाव लग चुका था पर तबियत कामचलाऊ थी। याद आता है, दिन साँझ की ओर मुड़ चला था। ब्रिगेड कमाण्डर से मैं बिछुड़ गया था। मेरे साथ सर्वहारा के नाम पर कोई पाँच कज़्ज़ाक रहे होंगे। चारों ओर चिपटकर ऐसी मार-काट हो रही थी जैसे पादरी और उसकी बीवी में गुत्थम-गुत्था होती है, मेरे बदन से लहू धीरे-धीरे टपकता जा रहा था, मेरे घोड़े के मुँह से झाग लटका था... कहने का मतलब, बात साफ़ थी।

स्पीर्का जाबूती के साथ हम जंगल से दूर निकल गये, देखते क्या हैं—बढ़िया हिसाब बैठ रहा है... तीन सौ गज की दूरी पर, इससे ज़्यादा नहीं होगी, पता नहीं उनका हेडक्वार्टर था या रसद का कारवाँ, सड़क पर धूल उड़ाता जा रहा था। हेडक्वार्टर हुआ तो अच्छा है, कारवाँ हुआ तो और भी अच्छा। जवानों के कपड़े-लत्ते फट चुके थे, कमीजें ऐसी छलनी हो गयी थीं कि पोछा लगाने का काम भी न दे सकें।

"जाबूती," मैं स्पीर्का से बोला, "तेरी माँ की ऐसी की तैसी, पेल अपना भाषण, यह तो उनका हेडक्वार्टर भाग रहा है..."

"बात साफ़ है, हेडक्वार्टर ही है," स्पीर्का बोला, "पर हम तो दो हैं और वे आठ

हैं..."

"स्पीर्का, कर हवा से बातें," मैं बोला, "हर हालत में मैं इनकी नकसीर फोड़ दूँगा... मर मिटेंगे खीरे के अचार और विश्व क्रान्ति की खातिर..."

और हम उन पर टूट पड़े। वे आठ थे। दो को तो हमने बन्दूकों से धूल चटा दी तीसरे को, मैं देखता हूँ, स्पीर्का यमराज के दरबार में हाजिर करने को ले जा रहा है। और मैं तुरुप के इक्के को अपना निशाना बनाने लगा। मेरा इक्का यारो, किरमिजी वर्दी पहने थे, सोने की घड़ी लटका रखी थी उसने चेन से। मैं खदेड़कर उसे एक टोले के पास ले गया। टोला वह सेब और चेरी के पेड़ों से घिरा था। इक्का मेरा ऐसे घोड़े पर सवार था कि पूछो मत, घोड़ा क्या सेठ की बेटी थी, पर वह थक गया। तब जनरल साहब ने लगाम पटककर पिस्तौल मेरी ओर मोड़ी और मेरी टाँग में छेद कर डाला।

"ठीक है," मैंने सोचा, "मेरे हाथ आयेगा तो दिला दूँगा तुझे याद छठी का दूध..."

मैंने चाल तेज की और उसके घोड़े पर दो राउण्ड खाली कर दिये। घोड़े का बड़ा दुख है। बोल्शेविक था घोड़ा, खालिस बोल्शेविक। ताँबे के सिक्के की तरह लाल, दुम गोली की तरह तेज़, टाँगें तार की तरह तनीं। सोचा था ज़िन्दा पकड़कर लेनिन को भेंट कर दूँगा, पर बात बनी नहीं। उस घोड़े का मैंने कर डाला निर्मूलन। ढह गया वह दुल्हन की तरह और इक्का मेरा जीन से टपक पड़ा। वह कन्नी काटकर भागा, फिर एक बार और मेरी तरफ़ मुड़ा और मेरी काया में एक छेद और कर डाला आर-पार। मतलब, दुश्मन के ख़िलाफ़ कार्यवाहियों में मेरे बदन पर तीन तमगे जड़ गये।

"हे भगवान," मैंने सोचा, "कहीं यह बात ही बात में मुझे मार ही न डाले..."

"मैं घोड़ी को दौड़ाता उसके पास जा धमका और वह तलवार निकाले खड़ा था, गालों पर उसके आँसू ढुलक रहे थे, माँ के दूध की तरह सफ़ेद।

"दिलवा लाल पताका पदक!" मैं चिल्लाया। "जनाबेआली! डाल दे हथियार जब तक मैं ज़िन्दा हूँ!.."

"साहब, मैं यह नहीं कर सकता," बुड्ढा बोला, "तू मुझे मार डालेगा..."

तभी स्पीर्का मेरे सामने आ धमका। बदन उसका झाग से ढँका था और थोबड़े पर आँखें मानों धागों से लटकी थीं।

"वास्या," वह चिल्लाकर मुझसे बोला, "कहते हुए डर लगता है कि कितने लोगों का मैंने सफाया कर डाला! पर तेरे हाथ तो जनरल आया है, इसकी वर्दी पर जरी का कितना काम है, इसका काम तो मैं तमाम करना चाहता हूँ।"

"भाड़ में जा," मैं गुस्से में जाबूती से बोला, "इसकी जरी का दाम मैंने अपने खून से चुकाया है।"

और अपनी घोड़ी से धकेलकर जनरल को मैं कोठरी में ले गया, वहाँ शायद सूखी घास वगैरह रखी थी। वहाँ शान्ति, अँधेरे और ठण्डक का राज था।

"साहब," मैं बोला, "अपने बुढ़ापे का ख़्याल कर, भगवान के लिये मेरे सामने हथियार डाल दे और फिर हम दोनों कुछ आराम कर लेंगे..."

पर वह दीवार से सटा छाती फुलाकर साँस ले रहा था और अपनी लाल उँगली से माथा रगड़ रहा था।

नहीं कर सकता यह," वह बोला, "तू मुझे मार डालेगा, सिर्फ़ बुद्योन्नी को मैं अपनी तलवार सौंप सकता हूँ..."

देखो तो, उसके लिए बुधोन्नी लाओ! बड़ी मुसीबत खड़ी हो गयी। देखता हूँ कि बुड्ढे की हालत पतली है।

"श्रीमान्," मैं चिल्ला-चिल्लाकर, रोता, दाँत पीसता बोला, "सर्वहारा की कसम, मैं खुद सबसे बड़ा अफ़सर हूँ। तू मेरे पर जरी के काम की वर्दी मत ढूँढ, पर उपाधि मुझे मिली हुई है। मेरी उपाधि है—म्यूजिकल जोकर और नीज्नी शहर का पेटबोला... वोल्गा नदी पर है नीज्नी शहर..."

और मेरे सिर पर भूत सवार हो गया। जनरल की आँखें मेरे सामने बत्तियों की तरह टिमटिमायीं। मेरे सामने लाल समुन्दर हिलोरें लेने लगा। मेरे घावों पर नमक छिड़क गया क्योंकि मैंने देखा कि बुड्ढा मेरी बात पर यकीन नहीं कर रहा। तब यारो, मैंने मुँह बन्द किया, पेट अन्दर खींचा, फेफड़ों में हवा भरी और पुराने जमाने की तरह, हमारे अन्दाज़ में, जवानों के अन्दाज़ में, नीज्नी शहरवालों के अन्दाज़ में पोलैण्डवाले लाट साहब को अपनी पेटबोली सुना दी।

बुड्ढे के होश फाख्ता हो गये, दिल थामकर वह ज़मीन पर बैठ गया।

"अब तो तुझे वास्या-जोकर पर, तीसरी अजेय अश्वारोही ब्रिगेड के कोमिसार पर विश्वास हुआ?.."

"कोमिसार?" उसने चिल्लाकर पूछा। "हाँ कोमिसार।" मैं बोला।

"कम्युनिस्ट हो?" वह चिल्लाया।

"हाँ, कम्युनिस्ट हूँ," मैं बोला।

"मरने से पहले," वह चिल्लाया, "यार मेरे कज़्ज़ाक, मेरी मौत की घड़ी में बता दे मुझे कि तू सचमुच कम्युनिस्ट है या झूठ बोल रहा है?"

"कम्युनिस्ट ही हूँ," मैं बोला।

यह सुनकर मेरा बुड्ढा ज़मीन पर बैठ गया, उसने कोई तावीज चूमा, अपनी तलवार तोड़ डाली और अपनी आँखों के दो दीये जला लिये, अँधेरी स्तेपी में बत्तियों की तरह।

"माफ कर दो," वह बोला, "मैं कम्युनिस्ट के सामने हथियार नहीं डाल सकता," और मुझसे हाथ मिलाकर उसने कहा, "माफ कर दो, और एक सैनिक की तरह मुझे मार डालो..."

यह किस्सा हमें एक पड़ाव पर तीन लाल पताका पदकों से सम्मानित, एक अश्वारोही

ब्रिगेड के कोमिसार कोन्किन ने सदा की तरह अपनी चटपटी जबान से सुनाया था।

"तो वास्या, तुमने उस जनरल के साथ क्या समझौता किया?"

"उसके साथ भला कोई समझौता हो सकता था?.. बड़ा घमण्डी निकला। मैंने माथा टेक-टेक कर उस मनाया पर वह अड़ा रहा। तब हमने उससे क़ागज़ बरामद किये, जो कुछ उसके पास थे, पिस्तौल छीन ली, उस बुद्धू की जीन आज तक मेरे घोड़े पर कसी है। पर बाद में मैं देखता हूँ कि मेरा खून कुछ ज़्यादा तेजी से बहने लगा, मुझे बेहद नींद आने लगी, मेरे बूटों में खून भरा था, उसकी अब कोई परवाह नहीं थी..."

"मतलब, बुड्ढे का कल्याण कर दिया?"

"हाँ, यह पाप भी मत्थे चढ़ाया।"

बेरेस्तेच्को

हम खोतिन से बेरेस्तेच्को की ओर कूच कर रहे थे। अपनी ऊँची जीनों पर बैठे जवान ऊँघ रहे थे। सूखती सरिता की तरह गीत कलकल कर रहा था। हज़ारों वर्ष पुराने क़ब्रों के टीलों पर वीभत्स लाशें पड़ी थीं। सफ़ेद क़मीज़ें पहने किसान हमें देखकर टोपियाँ उतार रहे थे। डिवीजन कमाण्डर पावलीचेन्को का लबादा हेडक्वार्टर की टुकड़ी के ऊपर काले झण्डे की तरह फड़फड़ा रहा था। उसका रोयेंदार बाशलिक लबादे पर लटका था, टेढ़ी तलवार बगल में लटकी थी।

हम कज़्ज़ाक क़ब्रों के टीलों और बोग्दान ख्मेल्नीत्स्की की टेकरी के पास से गुजरे। एक क़ब्र के पत्थर के पीछे से बन्दूरा वाद्य लिये एक वृद्ध निकला और बच्चों जैसी आवाज़ में उसने कज़्ज़ाकों की वीरगाथा गाकर हमें सुनायी। हमने चुपचाप उसका गीत सुना, फिर अपनी पताकाएँ और ध्वज खोले और मार्च धुन की गरज के साथ उमड़कर बेरेस्तेच्को में घुस गये। निवासियों ने लोहे की छड़ों से खिड़कियों के कपाट बन्द कर लिये और निःस्तब्धता, पूर्ण निःस्तब्धता कस्बाई सिंहासन पर बैठकर अपना राज चलाने लगी।

मुझे वैधव्य के दुख में रमी ललौंही विधवा के घर में टिकने का ठिकाना मिला। मैंने हाथ-मुँह धोया और बाहर निकल पड़ा। खम्भों पर इश्तहार लगे थे कि शाम को डिवीजन का सैन्य कोमिसार विनोग्रादोव कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल की द्वितीय कांग्रेस के बारे में भाषण सुनायेगा। मेरी खिड़कियों के ऐन सामने कुछ कज़्ज़ाक जासूसी के लिये रुपहली दाढ़ीवाले बूढ़े यहूदी को गोली मारने की तैयारी रहे थे। बुड्ढा रिरियाकर हाथ-पाँव चला रहा था। तब मशीनगन टीम के कूद्रया ने उसके सिर को पकड़कर अपनी बगल में छिपा लिया। यहूदी शान्त हो गया और उसने अपनी टाँगें चौड़ी कीं। कूद्रया ने दायें हाथ से कटार निकाली और इतनी सावधानी से बूढ़े का गला काट दिया कि उसके कपड़ों पर खून का एक भी छींटा नहीं पड़ा। फिर उसने बन्द

खिड़की की चौखट खटखटायी।

"अगर किसी को दिलचस्पी है," वह बोला, "तो ले जाये समेटकर। इसकी खुली छूट है..."

और कज़्ज़ाक नुक्कड़ पर मुड़ गये। मैं उनके पीछे-पीछे चल पड़ा और बेरेस्तेच्को की सैर करने लगा। यहाँ यहूदियों की बहुतायत थी और शहर के आँचल पर मध्यम वर्गीय रूसी चर्मकार रहते थे। वे सफाई से, हरी खिड़कियों वाले छोटे-छोटे मकानों में रहते। ये लोग वोद्का की जगह बियर या मधुरस पीते, घरों के अगाड़ी तम्बाकू उगाते और गलीसी के किसानों की तरह उसे लम्बी-लम्बी चिलमों में भरकर पीते।

बेरेस्तेच्को की ज़िन्दगानी उजड़ चुकी थी, कभी वह यहाँ बड़ी हरी-भरी थी। तीन सदियों से भी अधिक पुराने अंकुरने वोलीन प्रदेश की कुनकुनी, कदीमी सड़ाँध से अभी तक हरे थे, यहाँ यहूदी मुनाफाखोरी के बँधनों से रूसी किसानों को पोलिश जागीरदारों से बाँधे रखते थे और चेक उपनिवेशी को लोद्ज की फैक्टरी से। ये तस्कर थे, सीमा पर सर्वश्रेष्ठ, और लगभग सदा धर्म के योद्धा होते। भटियारों, खोमचेवालों और दलालों की इस खटपटी आबादी को हसीदीवाद अपने दमघोंटू चंगुल में जकड़े रहता। चोगे पहने बालक अभी तक हसीदी पाठशाला की सदी, पुरानी राह पर पैर घसीटते जाते थे, और पहले की तरह ही बुढ़ियाएँ बहुओं के साथ गोद भरने की जबरदस्त मिन्नतें लेकर सादिक के पास जाती थीं।

यहाँ के यहूदी सफ़ेदी या फीके आसमानी रंग से पुते बड़े-बड़े मकानों में रहते। इस स्थापत्य की परम्परागत कंगाली सदियों से चली आ रही थी। मकान के पिछवाड़े में दो, कभी-कभी तीन मंजिला ऊँची लम्बी कोठरी होती। उसमें कभी भी धूप की एक किरण तक नहीं घुस पाती। ये बेहद मनहूस कोठरियाँ वही काम देतीं जो हमारे अहाते। यहाँ से चोर रास्ते तहखानों और तबेलों को जाते। युद्ध के समय इन भूमिगत भूलभुलैयों में गोलियों और लूट से बचने के लिये शरण ली जाती। कई दिनों में यहाँ मानव के मैले और ढोरों के गोबर का ढेर लग जाता। विषण्णता और भय इन भूमिगत भूलभुलैयों को मल-मूत्र की तीखी दुर्गन्ध और खट्टी सड़ाँध से भर देते।

बेरेस्तेच्का में अक्षुण्ण दुर्गन्ध फैली थी और अब तक सभी लोगों से सड़ी हैरिंग मछली की बू आती थी। शहर नये युग की प्रतीक्षा में बैठा कुबास फैला रहा था ओर उसमें लोगों की जगह सीमावर्ती मुसीबतों के बदरंग बुत चल-फिर रहे थे। दिन ढलते-ढलते मैं उनसे इतना ऊब गया कि शहर की सरहद के बाहर चला गया और पहाड़ी पर चढ़कर हाल तक बेरेस्तेच्को के मालिकों रास्तीबोरस्की काउंटों के वीरान दुर्ग में घुस गया।

सूर्यास्त की शान्त लालिमा ने दुर्ग के पास की घास को नीला कर डाला था। जोहड़ के ऊपर गिरगिट की तरह हरा चाँद उग आया था। खिड़कियों से मुझे रास्तीबोरस्की काउण्टों की जागीर—चरागाहें और लहरियादार पट्टियों जैसे झुटपुटे में

छिपे हॉप के बागान नज़र आ रहे थे।

पहले दुर्ग में नब्बे वर्षीया सिरफिरी काण्उटेस अपने बेटे के साथ रहती थीं उसने इसके लिये बेटे का जीना हराम कर रखा था कि उसने वंश को जारी रखने के लिये कुलदीप नहीं दिया और–किसानों ने मुझे यह बताया था–काउंटेस अपने बेटे को साईस के कोड़े से पीटती थी।

नीचे चौक पर सभा जम चुकी थी। किसान, यहूदी और उपनगर के चर्मकार आये थे। उनके सिरों के ऊपर विनोग्रादेव की जोशीली आवाज़ और उसकी महमेजों की झंकार गूँज रही थीं वह कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल की द्वितीय कांग्रेस के बारे में बता रहा था और मैं प्राचीरों के पास टहल रहा था जहाँ फूटी आँखों वाली वनदेवियाँ प्राचीन नृत्य कर रही थीं। फिर जूतों से गन्दे फ़र्श पर एक कोने में मुझे वक्त के कारण पीली पड़ चुकी चिट्ठी का एक टुकड़ा पड़ा मिला। उस पर बदरंग स्याही से फ्रांसीसी भाषा में लिखा था :

"बेरेस्तेच्को, 1820। मेरे प्रिय पाल, कहते हैं कि सम्राट नेपोलियन की मृत्यु हो गयी, क्या यह सच है? मेरी तबीयत ठीक है, प्रसव की कोई परेशानी नहीं हुई, हमारा नन्हा वीर अब सात सप्ताह का हो रहा है..."

नीचे डिवीजन के कोमिसार का स्वर गूँजता जा रहा है। वह पसोपेश में पड़े शहरियों और लुटे यहूदियों को उत्साह के साथ समझा रहा है :

"आप ही सत्ता हैं। जो सब यहाँ है, आप ही का है। जागीरदार नहीं रहे। तो मैं क्रान्तिकारी समिति का चुनाव शुरू करता हूँ..."

नमक

"प्रिय कामरेड सम्पादक। मैं आपको नासमझ औरतों के बारे में बतलाना चाहता हूँ जो हमारे लिये नुकसानदेह है। मुझे आप पर आशा है कि आप गृहयुद्ध के उन मोर्चों का दौरा करते हुए जिन्हें आपने नोट किया, मामूली से स्टेशन फास्तोव को नज़रअन्दाज़ नहीं किया होगा। स्टेशन यह सात समुन्दर पार, सात पहाड़ों के पीछे, सात घाटियों पार अज्ञात देश में स्थित है, बेशक, मैं वहाँ गया था, ठर्रा-शराब मैंने वहाँ की पी, बस मूँछें ही गीली हुई मुँह में कुछ गया नहीं। हाँ, तो इस स्टेशनके बारे में बहुत कुछ ऐसी बातें हैं जो लिखी जा सकती हैं पर कहते हैं न कि सारा घूरा साफ़ नहीं किया जा सकता। इसलिये मैं आपको सिर्फ़ वही बखान करूँगा जिन्हें मेरी आँखों ने खुद जाकर देखा।

"सात दिन पहले की बात है, बढ़िया, शान्त रात थी जब हमारी अश्वसेना की यशस्वी रेलगाड़ी जवानों से लदी इस स्टेशन पर रुकी। हम सब आम ध्येय में योग देने को तड़प रहे थे और बेर्दीचेव की दिशा में जा रहे थे। पर हम देखते हैं कि

हमारी गाड़ी घाट छोड़ने का नाम ही नहीं ले रही, भेजा हमारा समझ न पाये कि बात क्या है? और सचमुच आम ध्येय के लिये बड़ी ज़्यादा देर तक गाड़ी रुकी थी, वह सब इसलिये कि पोटली-बोरीवाले, ये भयंकर दुश्मन, जिनके बीच स्त्रीलिंग की विराट शक्ति भी थी, ढिठाई से रेलवेवालों के साथ पेश आ रहे थे। बेधड़क होकर उन्होंने डिब्बों के हैंडल पकड़ लिये, हमारे इन भीषण शत्रुओं ने, लोहे की छतों पर चौकड़ियाँ भरने लगे, गड़बड़ मचाने लगे और हर हाथों की हर जोड़ी में दो मन तक की जाने-पहचाने नमक की बोरी थी। पर पोटली-बोरीवालों की पूँजी का राज ज़्यादा नहीं टिका। डिब्बों से उमड़कर निकले जवानों की पहल ने रेलवेवालों की अपमानित सत्ता को छाती फुलाकर साँस लेने का मौका दिया। आस-पास बस जनानी जात ही अपने झोलों के साथ डटी रही। रहम खाकर जवानों ने कुछ औरतों को डिब्बों में बिठा लिया, कुछ को नहीं भी बिठाया। इसी तरह हमारे दूसरे प्लाटून के डिब्बे में भी दो अदद लड़कियाँ नमूदार हो गयीं। और पहली घण्टी के बाद एक अच्छी-खासी औरत बच्चे को गोद में लिये हमारे पास आकर बोली :

"मुझे बिठा लो, प्यारे कज़्ज़ाकों, पूरे युद्ध भर मैं दूध पीते बच्चे के साथ स्टेशनों पर धक्के खा रही हूँ और अब अपने पति से मिलना चाहती हूँ, पर रेलों की गड़बड़ के कारण किसी तरह नहीं जा पा रही, क्या आप कज़्ज़ाक, मुझे अपने डिब्बे में बिठाने के लायक नहीं मानते?"

"'जनानी जी, बात यह है,' मैं बोला, 'जैसी प्लाटून की सहमति होगी आपके भाग्य का भी वैसा ही फ़ैसला हो जायेगा।' और प्लाटून की ओर मुड़कर मैं जवानों को दलीलें देने लगा कि अच्छी-खासी औरत पति के पास जाना चाहती है और सचमुच उसके साथ दूध पीता बच्चा है और आप लोगों की क्या सहमति होगी–उसे चढ़ा लूँ या नहीं?

"'चढ़ा लो,' जवान चिल्लाने लगे, 'हमारे बाद उसे खसम की भी कोई चाह नहीं रहेगी....'

"'नहीं,' मैंने जवानों से काफ़ी शिष्टता के साथ कहा, 'प्लाटून के जवानो, मैं आपके सामने सिर नवाकर कहता हूँ, पर अपनी ऐसी भौंडी बातों से मुझे हैरान मत कीजिए। जवानो मेरे प्लाटून के, याद कीजिये अपने जीवन को और यह कि आप भी बच्चे थे माँओं की अपनी, और तब निष्कर्ष यही निकलेगा कि ऐसी बातें नहीं करनी चाहिये...'

"और कज़्ज़ाक आपस में यह बातें करके कि बालमाशेव, यानी मैं, कितनी ठीक बात कहता है, औरत को डिब्बे में चढ़ाने लगे और वह कृतज्ञता के साथ चढ़ने लगी। और हरेक मेरी सच्चाई से जोश में आकर उसके बैठने के लिये जगह बनाने लगा और एक दूसरे से होड़ करते हुए कहने लगा :

" 'बैठिये, इस कोने में बैठिये, अपने बच्चे से माँ का लाड़-प्यार कीजिये, आपको

इस कोने में कोई परेशान नहीं करेगा, और आप सही-सलामत अपने पति के पास पहुँच जायेगी, जैसाकि आप चाहती हैं, हमें आपसे आशा है कि आप हमारा स्थान लेने के लिये नयी पीढ़ी को पाल-पोसकर बड़ा करेंगी क्योंकि पुराने लोग बूढ़े हो रहे हैं और जवानों की कमी नज़र आती है। जनानी जी, हमने फ़ौजी ज़िन्दगी में मुसीबतों के कड़वे घूँट पिये हैं, भूख ने हमें पीसा, ठण्ड ने हमें जलाया। पर आप यहाँ बेफ़िक्र होकर बैठें...'

"और तीसरी घण्टी बजने पर गाड़ी चल पड़ी। सुहानी रात ने अपना शामियाना तान दिया और शामियाने में लटके थे तारों के दीये। जवान कुबान की रात और कुबान के हरे तारों को याद कर रहे थे। और उड़ चला विचारों का पंछी। गाड़ी के पहिये ठक-ठका-ठक करते जा रहे थे..

"वक्त बीतने पर जब रात ने अपनी ड्यूटी खत्म की और लाल ढिंढोरचियों ने अपने लाल ड्रमों पर भोर की मुनादी लगायी तब यह देखकर कि मैं बेहद उदास बैठा हूँ और आँखों में नींद नहीं कज़्ज़ाक मेरे पास आये।

"'बालमाशेव,' कज़्ज़ाक मुझसे बोले, 'तू क्यों इतना उदास है और सोया भी नहीं?'

"'मैं तुम्हारे सामने सिर नवाता हूँ, जवानो, और थोड़ी माफी चाहता हूँ पर मुझे बस इस औरत से दो बातें कर लेने दो...'

"और सिर से लेकर पाँव तक काँपकर मैं अपने बिछौने से उठा, जिसे देखकर नींद ऐसे भागती थी जैसे खूंख्वार कुत्तों के झुण्ड को देखकर भेड़िया, और औरत के हाथ से उसका बच्चा ले लिया, मैंने उसके पोतड़े खोल डाले और देखता क्या हूँ कि उनमें नमक का तीन धड़ी का डला लिपटा था।

"'बड़ा अजीब बच्चा है, साथियो, जो न चूची माँगता है, न कपड़े गीले करता है और लोगों की नींद खराब नहीं करता...'

"'माफ़ करो, प्यारे कज़्ज़ाको,' औरत ने बेधड़क होकर हमारी बात में टँगड़ी अड़ा दी, 'धोखा मैंने नहीं दिया, मेरी बदकिस्मती ने दिलवाया है धोखा।'

"'बालमाशेव तो तेरी बदकिस्मती को माफ़ कर देगा,' मैं औरत से बोला, 'बालमाशेव का इसमें कुछ नहीं जाता, बालमाशेव जिस दाम खरीदता है उसी दाम बेच देता है। पर औरत, तू कज़्ज़ाकों की ओर मुड़कर देख जिन्होंने गणराज्य की मेहनतकश माँ के रूप में तेरी इतनी इज़्ज़त की। इन दो लड़कियों को देख, जो इस रात की शिकार बनकर रो रही हैं। लहलहाते गेहूँ के प्रदेश कुबान में हमारी बीवियों की तरफ़ नज़र मोड़ जो अपने पतियों के बिना तड़प रही हैं और वे जो भी अकेले हैं, दुर्भाग्य के कारण अपने जीवन के रास्ते में आनेवाली लड़कियों के साथ बलात्कार करते हैं... पर तुझे किसी ने छुआ तक नहीं हालाँकि तुझे ही तो, ऐसी को, छूना चाहिये था। दर्द के पहाड़ से दबे रूस की ओर मुड़कर देख...'

"और वह मुझसे बोलती है :

"'मेरा नमक छिन गया, मैं सच्चाई से नहीं डरती। तुम रूस के बारे में नहीं सोचते, तुम तो यहूदियों को बचा रहे हो...'

"'इस समय यहूदियों की बात नहीं हो रही, बदचलन नागरिकिन। यहूदियों का इससे कोई वास्ता नहीं। पर आप, जहरीली नागरिकिन, उस श्वेत जनरल से भी ज़्यादा प्रतिक्रान्तिकारिणी है जो अपने हज़ारों के घोड़े पर सवार होकर अपनी पैनी तलवार से हमें धमका रहा है... वह जनरल तो सब तरफ़ से साफ़ दिखायी देता है आर हर मेहनतकश उसका सिर कलम करने का सपना देखता है, पर आप जैसियों को, अजीब बच्चोंवालियों को नहीं देखा जा सकता जिनके बच्चे न रोटी माँगते हैं न जिन्हें जंगल-पानी की तलब होती है–आप पिस्सुओं की तरह दिखायी नहीं देती पर बराबर काटती जाती हैं, डंक मारती जाती हैं...'

"'और मैं सचमुच स्वीकार करता हूँ कि इस नागरिकिन को मैंने चलती गाड़ी से धकेल दिया, पर वह इतनी बदतमीज थी कि कुछ देर बैठी रही, फिर लहंगे को झाड़कर अपनी गुमराह पर आगे चल पड़ी। और इस औरत को सही-सलामत देखकर, उसके चारों ओर फैली अद्भुत रूसी धरती, बिना बालियों के खेतों, बलात्कृत लड़कियों और अपने साथियों को देखकर, जो मोर्चे पर तो बहुत जाते हैं पर लौटते कम हैं। मुझे डिब्बे से छलाँग लगाकर अपनी जान गँवाने या उस औरत का काम तमाम करने की इच्छा हुई। पर कज़्ज़ाकों को मुझ पर तरस आ गया और वे बोले :

"रायफल से गोली मार दे उसे।'

"'और दीवार पर लटकी अपनी विश्वसनीय रायफल उतारकर मैंने मेहनतकश धरती और गणराज्य पर लगा कलंक धो डाला।

"और हम, दूसरे प्लाटून के जवान, प्रिय कामरेड सम्पादक, आपके सामने शपथ लेते हैं, आपके सामने भी, प्रिय सम्पादक मण्डल के कर्मचारियों, कि हम सभी गद्दारों के साथ बेरहमी से पेश आयेंगे जो हमें गड्ढे में घसीट रहे हैं और नदी को उल्टा मोड़ना और रूसी धरती को लाशों और मरी घास से पाटना चाहते हैं...

"दूसरे प्लाटून के सभी जवानों की ओर से–निकीता बालमाशेव, क्रान्ति का सैनिक।"

शाम

रूसी कम्युनिस्ट पार्टी के विधान, तुम्हारे भी क्या कहने! तुमने रूसी कहानियों के खट्टे खमीर के पार तूफानी पटरियाँ बिछा दीं। र्याजान के मसीहों के आवेश से परिपूर्ण तीन कुँआरे दिलों को तुमने 'लाल अश्वारोही' समाचार-पत्र का कर्मचारी बना डाला, तुमने उन्हें यह इसलिये बनाया ताकि वे रोज़ वीरता और भौंड़े हास-परिहास से सराबोर बांके अखबार को निकाल सकें।

कंजी आँखवाला गालिन, टी. बी. का मरीज स्लीन्किन, अलसर का मरीज सीचोव–तीनों चंडावल की अनुर्वर धूल फाँकते और अपने पर्चों की बगावत और आग को आराम करते बांके कज़्ज़ाकों की कतारों, पोलिश दुभाषियों के रूप में रिजर्व धोखेबाजों और मास्को से स्वास्थ्यलाभ के लिये राजनीतिक विभाग की हमारी रेलगाड़ी में भेजी गयी युवतियों के बीच ले जाते।

सेना के नीचे लगी सुरंग के पलीते जैसा यह अखबार रात तक ही तैयार होता। आसमान में देहाती सूरज की भेंगी टार्च बुझ जाती, प्रेस की बत्तियाँ मशीन के अनियंत्रित आवेग की तरह झूलती जलने लगतीं। और तब आधी रात को गालिन डिब्बे से निकलता–हमारी रेलगाड़ी की धोबिन इरीना के प्रति अपने ठुकराये प्रेम के डंकों से काँपने के लिये।

"पिछली बार," छोटे कन्धों, पीले चेहरे और कंजी आँख वाला गालिन बोल रहा था, "पिछली बार इरीना हमने निकोलाई खूनी* को गोली मारे जाने की चर्चा की थी जिसे येकातेरिनबुर्ग के सर्वहाराओं ने मृत्युदण्ड दिया। और अब हम दूसरे प्रजापीड़कों की चर्चा करेंगे जो कुत्तों की मौत मरे। पीटर तृतीय को उसकी बीवी के प्रेमी ओर्लोव ने गला घोंटकर मार डाला। पावेल की दरबारियों और अपने ही बेटे ने जान ले ली। निकोलाई लठैत** ने ज़हर खा लिया, उसका बेटा पहली मार्च को मारा गया, उसका पोता शराबखोरी के कारण मर गया... आपको इसके बारे में जानना चाहिये, इरीना..."

और धोबिन को प्रशंसा भाव से परिपूर्ण कंजी आँख से देखता हुआ मारे गये सम्राटों की क़ब्रें उखाड़ रहा था। वह कन्धे झुकाये बैठा था–वहाँ ऊपर आकाश में ढीठ फाँस की तरह अटका चाँद उसे अपनी चाँदनी में नहला रहा था, उसके पास ही प्रेस की मशीनें खड़खड़ रही थीं और वायरलैस स्टेशन निर्मल प्रकाश से आलोकित था। बावर्ची वसीली के कन्धे से कन्धा रगड़ते हुए इरीना प्रेम की धीमी और बेढब बुदबुदाहट सुन रही थी, उसके सिर के ऊपर आकाश के काले खर-पतवार में तारे टिमटिमाते तैर रहे थे, धोबिन उबासियाँ ले रही थी, वह फूले मुँह के आगे सलीब का निशान बना रही थी और आँखें फाड़कर गालिन की ओर देख रही थी...

इरीना के पास बैठा गोल-मटोल चेहरेवाला, सभी बावर्चियों की तरह मानवजाति की उपेक्षा करनेवाला वसीली भी उबासियाँ ले रहा था। बावर्ची–उनका मरे जानवरों के गोश्त और ज़िन्दा लोगों के लालच से अधिक वास्ता पड़ता है, इसलिये राजनीति में बावर्ची उनसे कोई वास्ता न रखनेवाली चीज़ों को खोजते हैं। वसीली भी ऐसा ही था। पतलून को छाती तक खींचकर विभिन्न राजे-महाराजाओं के निजी खर्च के बारे में, जार की बेटी के दहेज के बारे में पूछ रहा था और फिर उबासी लेकर बोला :

---

* निकोलाई खूनी (1868-1918)–अन्तिम रूसी जार निकोलाई द्वितीय।

** निकोलाई लठैत (1796-1855)–रूसी जार निकोलाई प्रथम जो यूरोप का पुलिसमैन कहलाता था।

रात बहुत हो गई, इरीना। कल फिर से दिन होगा। चलो खटमलों का पेट भरने..."

और उन्होंने रसोई का दरवाज़ा बन्द कर लिया, गालिन को वहाँ, ऊपर ढीठ फाँस की तरह अटके चाँद के साथ अकेला छोड़कर... चाँद की ओर मुँह करके सोते जोहड़ के पास मैं चश्मा लगाये, गर्दन पर फुंसियों और पट्टियों में लिपटे पैरों को लिये बैठा था। मैं अपने धुंध भरे कवियोंवाले दिमाग़ से वर्गों के संघर्ष को पचा रहा था जब गालिन अपनी कंजी आँखों को चमकाता मेरे पास आया।

"गालिन," करुणा और एकाकीपन का मारा मैं बोला, "मैं बीमार हूँ, लगता है मेरा अन्त आ गया, मैं हमारी अश्वसेना में रहकर थक चुका हूँ..."

"आप गिलगिले हैं," गालिन ने उत्तर दिया और उसकी पतली कलाई पर बंधी घड़ी ने रात के एक बजे का वक्त दिखाया। "आप गिलगिले हैं, और हमारी किस्मत में आप गिलगिलों को सहना बदा है... हम आपके लिए छिलका तोड़ रहे हैं। कुछ वक्त बाद आप छिलके से निकली गिरी को देख सकेंगे, तब नाक से अपनी उँगली निकालकर असाधारण गद्य से नये जीवन की स्तुति करने लगेंगे, पर तब तक शान्त बैठिये, गिलगिले, चें-चें मत कीजिये।"

वह मेरे और पास आ गया, उसने मेरे खुजलाते फोड़ों पर उतरी पट्टियों को ठीक किया और चूजे जैसी छाती पर अपना सिर लटका लिया। रात भर हमारे दुखों में हमको सान्त्वना दे रही थी, मन्द-मन्द बयार माँ के लहंगे की तरह हमें सहला रही थी और नीचे की घास ताजगी और नमी से चमक रही थी।

रेलगाड़ी में लगी प्रेस की खड़खड़ाती मशीनें चरमराकर चुप गयीं, उषा ने पृथ्वी के आँचल पर रेखा खींच दी, रसोई का दरवाज़ा सिसकारकर थोड़ा-सा खुला। मोटी एड़ियोंवाले दो जोड़ी पैर बाहर की ठण्डक में निकले और हमें इरीना की सलोनी पिण्डलियाँ और टेढ़े व काले नाखूनवाला वसीली का अँगूठा दिखायी दिये।

"वसीली," औरत घुटी-घुटी धड़कन भरी फुसफुसाहट में बोली, "मेरे बिछौने से चले जाइये, शरारती कहीं के..."

पर वसीली सिर्फ़ एड़ी को हिलाकर उससे सट गया।

"अश्वसेना को," तब गालिन ने मुझे बताया, "अश्वसेना को हमारी पार्टी की केन्द्रीय समिति ने सामाजिक बिन्दु बनाया है। क्रान्ति के ज्वार ने बहुत से पूर्वाग्रहों से जकड़े मनमौजी कज़्ज़ाकों को अग्रणी कतार में ला खड़ा किया, पर केन्द्रीय समिति उनको लोहे के ब्रुश से सँवारने की युक्ति ढूँढ निकालेगी..."

और गालिन प्रथम अश्वारोही सेना के राजनीतिक शिक्षण के बारे में बोलने लगा। वह बड़ी देर तक धीरे-धीरे, पूर्ण स्पष्टता के साथ बोलता रहा। उसकी पलक कंजी आँख पर फड़फड़ाती जा रही थी।

अफ़ोन्का बीदा

हम लेश्न्यूव के पास लड़ रहे थे। जिधर देखो दुश्मन के घुड़सवारों की दीवार खड़ी हो जाती। पोलिश समरनीति की मज़बूत हो चुकी कमानी भयंकर फुफकार के साथ खुल रही थी। हमारे पाँव उखड़ते जा रहे थे। सारे अभियान के दौरान पहली बार हमें अपनी पीठ पर अगल-बगल और पीछे से हमलों की राक्षसी प्रचण्डता—उसी अस्त्र के डंकों को महसूस करना पड़ा जो अब तक हमारी इतनी अच्छी सेवा कर रहा था।

लेश्न्यूव के पास मोर्चे को पैदल सेना सँभाले हुए थी, टेढ़ी-मेढ़ी खाइयों में वोलीन के बदरंग, खस्ताहाल किसानों की पाँत झुकी हुई थी। इन लोगों को हल से हटाकर कल यह पैदल सेना बनायी गयी थी अश्वसेना के इन्फेंट्री रिजर्व के रूप में। किसान सहर्ष राजी हो गये। वे बड़े मनोयोग से लड़ रहे थे। उनकी देहाती प्रचण्डता को देखकर बुद्योन्नी के जवान तक हैरान रह गये। पोलिश जमींदारों के प्रति उनकी घृणा किसी अदृश्य पर मजबूत पदार्थ से बनी थी।

युद्ध के दूसरे चरण में जब कज़्ज़ाकों के हल्ले का दुश्मन के दिल पर प्रभाव पड़ना बन्द हो गया और खाइयों में तैनात शत्रु पर घुड़सवारों के हमले असम्भव हो गये यह कामचलाऊ इन्फेंट्री अश्वसेना के लिये बेहद लाभदायक हो सकती थी। पर हमारी दरिद्रता अपार थी। तीन-तीन किसानों को एक रायफल से लैस किया गया और जो गोलियाँ उन्हें दी गयीं वे रायफल में भरी ही नहीं जा सकती थीं। यह झंझट त्यागना पड़ा और इस असली लोक सेना को घर वापस भेजना पड़ गया।

हाँ, तो लेश्न्यूव की लड़ाई की बात करें। प्यादे कस्बे से तीन मील की दूरी पर खाइयों में तैनात थे। उनकी पाँत के सामने झुके कन्धोंवाला चश्मा लगाये तरुण टहल रहा था। उसकी बगल में लटकी तलवार ज़मीन पर घिसटती जा रही थी। वह फुदक-फुदककर ऐसे असन्तुष्ट भाव के साथ चल रहा था मानो उसके जूते पाँवों को काट रहे हों। किसानों का यह सरदार जिसे उन्होंने खुद चुना था और जिसे वे प्यार करते थे, खराब आँखोंवाला यहूदी युवक था जिसका मुरझाया चेहरा तलमूद का अध्ययन करनेवाले शिष्य की तरह गम्भीर लगता था। लड़ाई के समय वह सावधानीपूर्ण वीरता और ऐसी निष्ठुरता दर्शाता जो किसी स्वप्नदर्शी की अन्यमनस्कता जैसी लगती।

जुलाई के लम्बे दिन का तीसरा घण्टा चल रहा था। हवा में तपिश ने अपना इन्द्रधनुषी जाला फैला रखा था। टीलों के पीछे परेड की वर्दियों की पाँत और घोड़ों की रिबन गुँथी अयालें चमकी। तरुण ने इशारे से तैयार होने का आदेश दिया। किसान छाल के जूतों से खिस-खिस करते दौड़कर अपनी-अपनी जगह पर बैठ गये और निशाना साधने लगे। पर ख़तरा झूठा निकला। मस्लाक* के रंगबिरंगे स्क्वाड्रन लेश्न्यूव राजमार्ग की ओर आ रहे थे। उनके दुबले पर चुस्त घोड़े दुलकी चाल चल रहे थे। सुनहरे रंग से पुते डण्डों पर मखमली झारों से भारी बड़े-बड़े ध्वज, ललौंही

धूल के गुबारों में लहलहा रहे थे। सवार भव्य और धृष्ट निष्ठुरता के साथ आ रहे थे। फटेहाल प्यादे अपनी खाइयों से निकलकर मुँह बाये घुड़सवारों की इस मन्थर धारा की तड़क-भड़क को देख रहे थे।

रेजीमेण्ट के आगे-आगे अपने बांडे स्तेपी नस्ल के घोड़े पर ब्रिगेड कमाण्डर मस्लाक अपने मदमस्त शरीर को टिकाये चल रहा था। उसकी तोंद मोटे बिल्ले की तरह जीन के चाँदी से मढ़े हरने पर पसरी थी। प्यादों को देखकर मस्लाक का चेहरा खुशी से लाल हो गया और उसने उँगली के इशारे से प्लाटून कमाण्डर अफ़ोन्का बीदा को अपने पास बुलाया। प्लाटून कमाण्डर को हमारे "मख्नो" कहकर बुलाया जाता था क्योंकि वह शक्ल से उसके जैसा लगता था। पल भर के लिये उन्होंने आपस में कानाफूसी की—कमाण्डर और अफ़ोन्का ने। फिर अफ़ोन्का पहली स्क्वाड्रन की ओर मुड़ा और झुककर उसने धीरे से आदेश दिया : "लगाम तौल!" कज़्ज़ाकों के प्लाटून एक-एक करके घोड़ों को सरपट दौड़ाने लगे। वे घोड़ों को उकसाते खाइयों की ओर दौड़ाते चले आ रहे थे जहाँ से खुश खड़े प्यादे इस तमाशे को देख रहे थे।

"हमले के लिए तैयार हो!" अफ़ोन्का की मातमी और दूरी से आती लगती आवाज़ गूँजी।

मस्लाक नाक को घर्र-घर्र चलाता, खाँसता और आनन्द लेता एक ओर हट गया, कज़्ज़ाकों ने धावा बोल दिया। बेचारे प्यादे भाग खड़े हुए पर तब तक देर हो चुकी थी। कज़्ज़ाकों के कोड़े उनके फटे-पुराने गाढ़े के कोटों पर टपक चुके थे। घुड़सवार मैदान में फिरकियों की तरह घूम रहे थे और असाधारण कौशल के साथ हाथों में चाबुकों को घुमा रहे थे।

"क्यों कर रहे हो शैतानी?" मैंने चिल्लाकर अफ़ोन्का से पूछा।

"मजा लेने के लिये," उसने मुझे जीन पर हिलकर, झाड़ी में छिप तरुण को बाहर खींचते हुए उत्तर दिया।

"मजा लेने के लिये!" वह बेसुध तरुण को गुदगुदाते हुए चिल्लाया।

तमाशा तब समाप्त हुआ जब थुलथुल और रोबीले मस्लाक ने अपना फूला हाथ हिलाया।

"प्यादो, आँखें खोलकर रखो!" अफ़ोन्का ने चिल्लाकर कहा और घमण्ड के साथ अपनी दुबली देह को ताना। "भाग गये प्यादे पिस्सुओं का शिकार करने..."

कज़्ज़ाक हँसते हुए कतारें बना रहे थे। प्यादों का कोई नामोनिशान न रहा। खाइयाँ खाली पड़ी थीं। बस झुके कन्धोंवाला यहूदी पहले की जगह खड़ा था और अपने चश्मे से कज़्ज़ाकों को बड़े ध्यान और अभिमान के साथ घूर रहा था।

लेश्न्यूव की ओर से गोलीबारी शान्त नहीं हो रही थी। पोलैण्डवाले हमें घेर रहे

---

* मस्लाक—चौथी डिवीजन की पहली ब्रिगेड का कमाण्डर मास्ल्याकोव, मनमौजी छोपेमार जिसने शीघ्र ही सोवियत सत्ता के साथ गद्दारी की।

थे। दूरबीन से घुड़सवार टोहियों की आकृतियाँ अलग नज़र आ रही थीं। वे कस्बे से तेजी से निकलतीं और कहीं ग़ायब हो जातीं। मस्लाक ने स्क्वाड्रन को कतारबद्ध करके राजमार्ग के दोनों ओर बिखेर दिया। लेश्न्यूव के ऊपर दमकता, हमेशा की तरह ख़तरे की घड़ी में बेहद शून्य आकाश लटका था। यहूदी सिर पीछे को झुकाकर हताशा के साथ ज़ोर-ज़ोर से धातुई बाँसुरी बजा रहा था। और प्यादे, कोड़ों की मार खाये प्यादे अपनी-अपनी जगह पर लौट रहे थे।

हमारी ओर गोलियों की घनी बौछार उड़कर आ रही थी। ब्रिगेड का हेडक्वार्टर मशीनगन की गोलीबारी की पहुँच में आ गया। हम राजमार्ग की दायीं ओर के जंगल में घुसकर झाड़ियों को चीरते दौड़ रहे थे। गोलियों की मार से हमारे सिरों के ऊपर टहनियाँ कराह रही थीं। जब हम झाड़ियों के पार निकले कज़्ज़ाक वहाँ से जा चुके थे। डिवीजन कमाण्डर के आदेश पर वे ब्रोदी की ओर पीछे हट रहे थे। बस किसान ही अपनी खाइयों से बन्दूकों की इक्की-दुक्की गोलीबारी से जवाब दे रहे थे और पीछे छूटा अफ़ोन्का अपने प्लाटून की ओर जा रहा था।

वह अपने घोड़े पर बैठा इधर-उधर नज़रें दौड़ाता और हवा को सूँघता सड़क के ऐन किनारे जा रहा था। पल भर के लिये गोलीबारी मन्द हुई। उसने इसका फायदा उठाने की सोची और घोड़े को सरपट दौड़ा दिया। उसी क्षण एक गोली ने उसके घोड़े की गर्दन को बींध दिया। अफ़ोन्का कोई सौ कदम तक घोड़े पर आगे गया और हमारी कतारों में पहुँचकर घोड़े की अगली टाँगें टूटकर मुड़ीं और वह ज़मीन पर ढह गया।

अफ़ोन्का ने आराम से रकाब से अपना दबा पैर निकाला। वह उकड़ूँ बैठा और लाल उँगली से घाव को कुरेदने लगा। फिर बीदा सीधा खड़ा हुआ और उसने अपनी भारी नज़र को चमकते क्षितिज पर दौड़ाया।

"अलविदा स्तेपान," वह दम तोड़ते घोड़े के पास से कुछ पीछे हटा और उसे सिर नवाकर भर्राये स्वर में बोला, "तेरे बिना कैसे अपने प्यारे गाँव को लौटूँगा?.. तेरी बढ़िया काम की जीन का मैं क्या करूँगा? अलविदा स्तेपान," इस बार वह जरा ज़ोर से बोला, उसका दम घुटने सा लगा, गले से बिल्ली के चंगुल में आये चूहे जैसी आवाज़ निकली और वह फूट-फूटकर रो पड़ा। उसके फूट-फूटकर रोने की आवाज़ हमारे कानों तक पहुँची और हमने अफ़ोन्का को गिरजे में पगली भक्तिन की तरह झुक-झुककर सिर नवाते देखा। "मैं हरामी भाग्य के सामने सिर नहीं झुकानेवाला हूँ," वह अपने निर्जीव-से चेहरे से हाथ हटाकर चिल्लाया, "मैं बेरहमी से पोलैण्ड के घिनौने जमींदारों का गला काटूँगा! छाती चीरकर उनका दिल उखाड़ लूँगा, उनके खून में नहाऊँगा... मैं तुझसे वादा करता हूँ इसका, स्तेपान, अपने गाँववालों के सामने, अपने भाइयों के सामने..."

अफ़ोन्का घोड़े के घाव का चेहरा टिकाकर शान्त हो गया। घोड़ा अपने मालिक

पर अपनी चमकती गहरी बैंगनी आँख टिकाये उसकी सिसकियों को सुन रहा था। उसने मीठी तन्द्रा में ज़मीन पर पड़े अपने सिर को हिलाया और लाल फीतों की तरह खून की दो धाराएँ सफ़ेद माँसपेशियों से ढकी उसकी छाती पर टप-टप बह रही थी।

अफ़ोन्का बिना हिले-डुले औंधा पड़ा था। अपनी मोटी-मोटी टाँगों से छोटे-छोटे डग भरता मस्लाक घोड़े के पास आया, घोड़े के कान में अपनी रिवाल्वर घुसेड़ी और गोली चला दी। अफ़ोन्का ने उछलकर मस्लाक की ओर अपना चेचकरू चेहरा मोड़ा।

"अफ़ोन्का, साज उतारो," मस्लाक स्नेहपूर्ण स्वर में बोला, "और जाओ अपनी टुकड़ी में..."

और हमने टेकरी से अफ़ोन्का को जीन-काठी के बोझ से झुककर जाते देखा, उसका नम चेहरा ताजे मांस की तरह लाल था। वह अपने स्क्वाड्रन को जाता खेतों की धूल भरी, दहकती वीरानी में बेहद एकाकी लग रहा था।

उस शाम कारवाँ में मैंने उसे देखा। वह उस छकड़े में सो रहा था जिस पर उसका माल—तलवारें, वर्दी के कोट और छेद किये सोने के सिक्के लदे थे। प्लाटून कमाण्डर अफ़ोन्का का निर्जीव-से टेढ़े मुँहवाला चिक्कट सिर जीन पर ऐसे पड़ा था मानो वह सलीब पर ठुका हो। बगल में मारे गये घोड़े का साज, कज़्ज़ाक घोड़े की पेचीदा भड़कीली सज्जा—काले फुँदनोंवाले पेशबन्द, रंगीन पत्थरों से जड़ी पिछाड़ी की मुलायम पेटियाँ और चाँदी के कामवाली लगाम पड़ी थी।

अँधेरा गहराता जा रहा था। कारवाँ मन्थर गति से ब्रोदी की सड़क पर रेंग रहा था; सीधे-सादे तारे आकाश गंगा में तैर रहे थे, रात की शीतल गहराई में दूरी पर गाँव जल रहे थे। नायब स्क्वाड्रन कमाण्डर ओर्लोव और लम्बी मूँछोंवाला बीत्सेन्को यहीं, अफ़ोन्का के छकड़े पर बैठे उसके दुख पर विचार-विमर्श कर रहे थे।

"घर से लाया था घोड़े को," लम्बी मूँछोंवाला बीत्सेन्को बोला, "ऐसा घोड़ा अब कहाँ मिलेगा?"

"घोड़ा तो दोस्त की तरह होता है," ओर्लोव ने उत्तर दिया।

"घोड़ा तो बाप की तरह होता है," बीत्सेन्को ने उसाँस छोड़कर कहा, "असंख्य बार जान बचाता है। घोड़े के बिना बीदा कहीं का न रहेगा..."

और सबेरे अफ़ोन्का लापता हो गया। ब्रोदी की लड़ाइयाँ शुरू होकर खत्म हो गयीं। पराजय अस्थायी विजय में बदल गयी, हमने डिवीजन कमाण्डर की बदली झेली पर अफ़ोन्का नहीं लौटा। बस गाँवों में भयानक बुड़बुड़, अफ़ोन्का के वीभत्स, हिंस्र चिह्न हमें उसकी कठिन राह का अन्दाज़ दिलाते थे।

"घोड़ा खोज रहा है अपने लिये," स्क्वाड्रन में अफ़ोन्का के बारे में कहा जाता, हमारी यायावरी की अनवरत शामों को मैं इस मूक, भयंकर खोज के बारे में एक नहीं, अनेक किस्से सुन चुका था।

हमारी तैनाती के स्थान से दर्जनों मील की दूरी पर दूसरी टुकड़ियों के जवानों की

अफ़ोन्का से भिड़तें होती। वह अपनी सेवा से पीछे छूटे पोलिश घुड़सवारों की घात में बैठा होता या किसानों के घोड़ों के छिपे झुण्डों की तलाश में जंगलों को छानता होता। वह गाँवों को जला डालता और पोलिश गाँवों के चौधरियों को घोड़े छिपाने के लिये गोली मार देता। एक आदमी के इस प्रचण्ड युद्ध की अनुगूँज, झुण्ड पर अकेले भेड़िये के डकैताना हमलों की अनुगूँज हमारे कानों तक भी पहुँच रही थी।

एक सप्ताह और बीत गया। दैनन्दिन की कड़वी ज़िन्दगी ने हमारी जबानों से अफ़ोन्का के मनहूस बाँकेपन के किस्सों को उतार दिया और लोग "मख्नो" को भूलने लगे। फिर यह अफ़वाह उड़ी कि कहीं जंगलों में गलीसी के किसानों ने उसे मार डाला। और उस दिन जब हम बेरेस्तेच्को में प्रवेश कर रहे थे पहली स्क्वाड्रन का येमेल्यान बुद्‌याक डिवीजन कमाण्डर के पास अफ़ोन्का की पीले चारजामेवाली जीन माँगने चला गया। येमेल्यान परेड में नयी जीन पर बैठकर जाना चाहता था, पर उसकी किस्मत में यह नहीं बदा था।

हमने 6 अगस्त को बेरेस्तेच्को में प्रवेश किया। हमारी डिवीजन के आगे-आगे नये डिवीजन कमाण्डर का एशियाई अंगरखा और लाल जैकेट चलते दिखायी दे रहे थे। ल्योव्का, शातिर चाटुकार डिवीजन कमाण्डर के पीछे-पीछे बढ़िया नस्ल की घोड़ी की लगाम पकड़े चल रहा था। धमकी की तरह गूँजती मार्च धुन आडम्बरपूर्ण और दरिद्र सड़कों-गलियों में भर रही थी। कस्बे में फटेहाल गलियों, फूलकारी वाली लकड़ी की जर्जर बाड़ों का जाल बिछा था। उसके केन्द्र को समय की दीमक ने कुतरकर खोखला कर डाला था और सड़ांध ने हमारा वहाँ स्वागत किया। तस्कर और धर्मान्ध अपने बड़े-बड़े अँधेरे घरों में दुबककर बैठे थे। बस, अकेले श्रीमान ल्यूदोमीर्स्की, हरा कोट डाले घड़ियाली ने कैथोलिक गिरजे के सामने हमारी अगवानी की।

हमने नदी को पार करके मध्यम वर्ग के लोगों के मुहल्ले में प्रवेश किया। हम कैथोलिक पादरी के घर के पास पहुँच रहे थे कि नुक्कड़ के पीछे से कद्दावर घोड़े पर सवार अफ़ोन्का निकला।

"पालागन," वह भूँकते स्वर में बोला और जवानों को धकेलते हुए कतारों के बीच अपना स्थान ग्रहण कर लिया।

मस्लाक बदरंग क्षितिज को ताकने लगा और बिना पीछे देखे उसने फटी आवाज़ में पूछा :

"घोड़ा कहाँ से लिया?"

"मेरा अपना है," अफ़ोन्का ने उत्तर दिया, क़ागज़ में तम्बाकू लपेटकर सिगरेट बनायी और हल्के से जीभ निकालकर उसके किनारे को थूक से गीला करके जोड़ दिया।

एक के बाद एक कज़्ज़ाक उसके पास आकर दुआ-सलाम कर रहे थे। उसके झुलसे चेहरे पर बायीं आँख की जगह वीभत्स गुलाबी फोड़ा था।

और अगली सुबह बीदा पीकर मौज मना रहा था। गिरजे में उसने सन्त वलेंत के अस्थि-पात्र को फोड़ दिया और आर्गन बजाने की कोशिश की। वह आसमानी रंग के कालीन को काटकर बनायी गयी जैकेट पहने था जिसकी पीठ पर कुमुदिनी का फूल कढ़ा था और चिपचिपी लट को कंघी करके उसने उससे अपनी फूटी आँख को ढक रखा था।

दोपहर के खाने के बाद वह घोड़े पर सवार हुआ और रात्सीबोरस्की काउण्टों के दुर्ग की फूटी खिड़कियों पर रायफल से गोलियाँ चलाने लगा। कज़्ज़ाक तीन तरफ़ से उसे घेरे खड़े थे... वे घोड़े की पूँछ उठाकर उसकी टाँगों को छूकर देख रहे थे और उसके दाँत गिन रहे थे।

"सुन्दर घोड़ा है," नायब स्क्वाड्रन कमाण्डर ओर्लोव बोला।

"घोड़ा बढ़िया है," लम्बी मूँछोंवाले बील्तेन्को ने पुष्टि की।

सन्त वलेन्त के गिरजे में

कल शाम को हमारी डिवीजन ने बेरेस्तेच्को पर अधिकार किया था। हेडक्वार्टर ने कैथोलिक पादरी तूज़ीन्केविच के घर में डेरा डाला। हमारी सेना के आगमन से पहले जनाना कपड़े पहनकर तूज़ीन्केविच बेरेस्तेच्को से भाग गया। उसके बारे में मैं यह जानता हूँ कि वह पैंतालीस साल तक बेरेस्तेच्को में भगवान की मिज़ाजपुसी करता रहा और अच्छा पादरी था। जब निवासी यह चाहते हैं कि यह हमारी समझ में आ जाये, तो वे कहते हैं : यहूदी उससे प्यार करते थे। तूज़ीन्केविच के जमाने में प्राचीन गिरजे का नवीनीकरण किया गया। मरम्मत का काम गिरजे की तीन सौवीं वर्षगाँठ के दिन सम्पन्न हुआ। तब झीतोमीर से बिशप यहाँ आया था। रेशमी चागों में धर्माधिकारियों ने गिरजे के सामने पूजा की। तोंदल और तुष्ट धर्माधिकारी ऐसे खड़े थे जैसे ओस से नम घास में रखे घण्टे आसपास के गाँवों से श्रद्धालुओं की धाराएँ आ रही थीं। देहाती घुटने टेककर धर्माधिकारियों के हाथ चूम रहे थे और उस दिन आकाश में दिव्य बादल दमक रहे थे। आकाशी पताकाएं पुराने गिरजे के सम्मान में फहरा रही थीं। स्वयं बिशप ने तूज़ीन्केविच के माथे को चूमकर उसे बेरेस्तेच्को का पिता कहा था।

यह क़िस्सा मैंने सवेरे हेडक्वार्टर में सुना जहाँ मैं हमारे बर्तन कालम की रिपोर्ट देख रहा था जो राद्‌ज़ीखोव के इलाके में ल्वोव नगर की दिशा में टोह ले रहा था। मैं क़ागज़ात पढ़ रहा था, मेरी पीठ के पीछे गूँजते हरकारों के खर्राटे मुझे हमारी अनन्त यायावरी का बखान कर रहे थे। पूरी नींद न सोने के कारण कुम्हलाये क्लर्क डिवीजन के आदेश लिख रहे थे, खीरे चबा रहे थे और छींक रहे थे। मैं दोपहर तक ही फारिग हुआ। मैं खिड़की के पास गया और मुझे बेरेस्तेच्को का भव्य और शुभ्र कैथीड्रल दिखायी पड़ा। वह सुहावनी धूप में चीनीमिट्टी के बुर्ज की तरह दमक रहा था। दोपहर की

धूप की बिजलियाँ उसकी चमकीली बगलों पर कौंध रही थी। उनकी उत्तल रेखाएँ प्राचीन हरे गुम्बदों से शुरू होकर सहजता से नीचे की ओर जा रही थीं। अग्रभाग के सफ़ेद पत्थर में गुलाबी नसें-सी दमक रही थीं और शिखर पर मोमबत्तियों की तरह सुडौल स्तम्भ खड़े थे।

फिर आर्गन बाजे की आवाज़ सुनकर मैं चकित हो गया, तभी हेडक्वार्टर के दरवाज़े पर पीले-से खुले बालोंवाली बुढ़िया प्रकट हुई। वह टूटी टाँगवाले कुत्ते की तरह डोलती-झुकती चल रही थी। उसकी पुतलियाँ अन्धेपन की सफ़ेद नमी से भरी थीं और आँसुओं से डबडबायी थीं। आर्गन की कभी बोझिल तो कभी द्रुत स्वर लहरियाँ उड़कर हमारे कानों तक पहुँच रही थीं। उनमें संगीत की सहजता न थी और उनकी करुण गूँज देर तक भटकती रहती। बुढ़िया ने पीले बालों से अपने आँसू पोंछे, ज़मीन पर बैठी और घुटनों पर मेरे ऊँचे बूट चूमने लगी। आर्गन चुप हो गया और फिर कुछ देर बाद मानो हो-हो करके हँसने लगा। मैंने बुढ़िया का हाथ पकड़ा और मुड़कर देखा। क्लर्क टाइपराइटरों पर ठकठक कर रहे थे, हरकारे और भी ज़ोर-ज़ोर से खर्राटे भर रहे थे, उनकी महमेजें मखमली सोफ़ों के अन्दर भरे नमदे को काट रही थीं। बुढ़िया मेरे ऊँचे बूटों को बच्चे की तरह बाँहों में भरकर स्नेह के साथ चूम रही थी। मैं उसे घसीटकर बाहर ले गया और निकलकर दरवाज़ा बन्द कर दिया। हमारे सामने गिरजा रंगमंच के दृश्य की तरह जगमगा रहा था। उसका बगल का फाटक खुला था, पोलिश फ़ौजी अफ़सरों की क़ब्रों पर घोड़ों की खोपड़ियाँ पड़ी थीं।

हम दौड़े-दौड़े अहाते में घुसे अँधियारे गलियारे को पार किया और वेदी से सटे चौकोर कमरे में पहुँचे। वहाँ 31वीं रेजीमेण्ट की नर्स साश्का रेशमी कपड़ों के ढेर को उलट-पलट रही थी जिन्हें किसी ने फ़र्श पर पटक दिया था। किमखाब और झड़े फूलों, सुवासित गलन की सुगन्ध उसके फड़कते नथुनों में घुसकर गुदगुदी कर रही थी, उनमें जहर घोल रही थी। फिर कमरे में कज़्ज़ाकों ने प्रवेश किया। उन्होंने ठहाका लगाकर साश्का का हाथ पकड़ा और झट से खींचकर कपड़ों और किताबों के ढेर पर पटक दिया। साश्का की फलती-फूलती और ताजा कटी गाय के मांस की तरह बदबूदार देह उघड़ गयी, लहंगे ने उठकर स्क्वाड्रन की इस लेडी की ढली सुडौल टाँगों को खोल दिया और पगला-सा लड़का कुदर्युकोव साश्का पर घोड़े की तरह सवार होकर कूदने लगा। वह ऐसा दिखावा कर रहा था मानो उसे पगलेपन का दौरा पड़ा हो। वह उसे पटककर दरवाज़े की ओर दौड़ गयी। और तभी हम वेदी को पार करके गिरजे में घुसे।

उसमें, अर्थात इस गिरजे में लबालब रोशनी भरी थी, वह नाचती किरणों, हवा के स्तम्भों, किसी शीतल आह्लाद से परिपूर्ण था। दायीं भित्ति पर लटके और अपोलेक की कूँची से बने चित्र को मैं कैसे भूल सकता हूँ? इस चित्र में बारह गुलाबी सुसमाचारक फीतों से गुँथे पालने में गोल-मटोल बाल यीशु को झुला रहे थे। उसके

पैरों की उँगलियाँ फैली थीं, बदन सुबह की गर्मी के पसीने से चमक रहा था। मांसल पीठ पर लेटा जिस पर बल पड़े थे, हाथ-पाँव मार रहा था, बारह अपोस्टल पालने पर झुके थे, उनके सिरों पर कार्डिनलोंवाले मुकुट लगे थे। उनके सफाचट चेहरों पर दाढ़ी की खूँट की नीलिमा छायी थी, आग की लपटों जैसे लबादे पेटों पर खुले थे। अपोस्टलों की आँखों में बुद्धि, दृढ़ता और आह्लाद की चमक थी, उनके होंठों के कोनों पर मुस्कान खेल रही थी, दोहरी ठोड़ियों पर अंगारों जैसे लाल मस्से बने थे, विलायती मूली जैसे किरमिजी मस्से।

बेरेस्तेच्को के इस गिरजे में आदम के बेटों की भीषण यातनाओं के प्रति खास अपना, सम्मोहक दृष्टिकोण था। इस कैथीड्रल में संत इटालियन आपेरा गायकों की अदा में शहादत के लिए जाते थे और जल्लादों के काले बाल ओलोफर्न* की दाढ़ी की तरह चिक्कट थे। यहीं गर्भगृह के द्वार के ऊपर मैंने योहन्ना का ईश-निन्दक चित्र देखा जो अपोलेक की अधर्मी और लम्पट की तूलिका का काम था। इस चित्र में योहन्ना बपतिस्मादाता की सुन्दरता ऐसी अर्थपूर्ण, ऐसी अभिव्यंजनापूर्ण थी जिसकी ख़ातिर राजे-महाराजों की रखैलें अपनी रही-सही इज़्ज़त और फलती-फूलती ज़िन्दगी को भी धूल में मिला देती हैं।

शुरू में मुझे गिरजे में तोड़-फोड़ के चिह्न नहीं नज़र आये या वे मुझे मामूली लगे। बस सन्त वलेंत का अस्थि-पात्र ही टूटा हुआ था। गली रूई के चिथड़े और संत की हास्यास्पद अस्थियाँ ही उसके नीचे पड़ी थीं जो देखने में मुर्गी की हड्डियों से ज़्यादा मिलती-जुलती थीं। हाँ, यह और कि अफ़ोन्का बीदा अभी तक आर्गन बजाये जा रहा था। पी रखी थी अफ़ोन्का ने, वह वहशी था और घायल भी। कल ही वह किसानों से छीनकर लाये गये घोड़े के साथ हमारे पास लौटा था। अफ़ोन्का आर्गन पर मार्च धुन निकालने का हठी प्रयास कर रहा था और कोई उसे उनींदी आवाज़ में मना रहा था : "छोड़ अफ़ोन्का, चल खाना खाने।" पर कज़्ज़ाक अफ़ोन्का नहीं छोड़ रहा था : गीत अफ़ोन्का के ढेरों थे। हर सुर अपने आपमें गीत था और सभी सुर एक दूसरे से टूटे थे। गीत, मतलब उसकी ज़ोरदार धुन पलभर को गूँजकर दूसरी में बदल जाती... मैं सुनता हुआ इधर-उधर नज़रें दौड़ा रहा था, तोड़-फोड़ के चिह्न मुझे मामूली लग रहे थे। पर सन्त वलेंत गिरजे के घड़ियाली और अन्धी बुढ़िया के पति श्रीमान् ल्यूदोमीर्स्की का खयाल यह न था।

ल्यूदोमीर्स्की न जाने कहाँ से प्रकट हुआ। उसने सिर झुकाये, सधे कदम रखते हुए गिरजे में प्रवेश किया। बूढ़े को सन्त के बिखरे फूलों पर चादर डालने का साहस न हुआ क्योंकि सामान्य आदमी को पवित्र वस्तुएँ छूने का अधिकार नहीं। घड़ियाली फ़र्श की नीली टाइलों पर गिर पड़ा, फिर उसने सिर उठाया और उसकी नीली नाक

* ओलोफर्न–यहूदियों का शत्रु जिसका पौराणिक यहूदी वीरांगना जूडिथ ने शराब पिलाकर सिर काट दिया था।

ऐसी लग रही थी जैसे मुर्दे के ऊपर गड़ी झण्डी। नीली नाक फड़क रही थी और तभी वेदी के पास टँगा मखमली परदा हिला और फड़फड़ाकर खुल गया। उसके पीछे के ताक में मेघों से घिरे आकाश की पृष्ठभूमि में नारंगी लबादा पहने, नंगे पाँव दौड़ती एक दाढ़ीवाली आकृति थी, उसके चिरे मुँह से खून टपक रहा था। कर्कश चीख ने हमारे कानों को भेद दिया। घृणा नारंगी लबादेवाले का पीछा कर रही थी और पीछा करनेवाले बिल्कुल पास आ गये थे। उसने प्रहार से बचने के लिये कोहनी मोड़ रखी थी, हाथ से सिन्दूरी धारा की तरह खून फूट पड़ा। मेरे पास खड़ा कज़्ज़ाक छोकरा चिल्ला पड़ा और सिर झुकाकर भाग खड़ा हुआ हालाँकि भागने की ज़रूरत न थी, आले में बस ईसामसीह की ही तो मूर्ति थी—पर अब तक ज़िन्दगी में मैंने कभी भी भगवान की इतनी विलक्षण मूर्ति न देखी थी।

श्रीमान् ल्यूदोमीर्स्की का मसीहा चिथड़े जैसी दाढ़ी और छोटे, बल पड़े माथे, घुँघराले बालों वाला यहूदी था। उसके पिचके गाल किरमिज से रंगे थे, दर्द के मारे बन्द हुई आँखों पर पतली धनुष की तरह मुड़ी ललौंहीं भौंहें थीं।

उसका मुँह घोड़े के होंठ की तरह चिरा था, उसका पोलिश लबादा कमर पर बहुमूल्य कमरबन्द से कसा था, और लबादे के नीचे रंग से पुते, रुपहली कीलों से घायल चीनीमिट्टी के नंगे पाँव अकड़े हुए थे।

श्रीमान ल्यूदोमीर्स्की अपने हरे कोट में मूर्ति के चरणों में खड़ा था। उसने हमारी ओर अपना सूखा हाथ उठाया और हमें शाप दिया। कज़्ज़ाकों की आँखें फटी की फटी रह गयीं और पुआल जैसी उनकी लटें लटक गयीं। सन्त वलेंत कैथीड्रल के घड़ियाली ने गरजती आवाज़ में हमें शुद्ध लैटिन भाषा में शाप दे दिया। फिर वह मुड़कर घुटनों पर गिरा और मसीहा के चरण-कमलों से लिपट गया।

हेडक्वार्टर में लौटकर मैंने डिवीजन कमाण्डर के नाम स्थानीय जनता की धार्मिक भावनाओं को पहुँचायी गयी ठेस के बारे में रिपोर्ट लिखी। गिरजे को बन्द करने और दोषियों के ख़िलाफ़ अनुशासनात्मक कार्यवाही करके उन्हें फ़ौजी अदालत के सुपुर्द करने का आदेश दिया गया।

स्क्वाड्रन कमाण्डर त्रुनोव

दोपहर को जब हम अपने स्क्वाड्रन कमाण्डर त्रुनोव के गोलियों से छलनी शव को सोकाल लाये। वह सुबह दुश्मन के हवाई जहाजों से हुई लड़ाई में मारा गया था। त्रुनोव को सभी गोलियाँ मुँह पर लगी थीं, गाल उसके घावों से भरे थे, जीभ कटी थी। जैसे-तैसे हमने मृतक का मुँह धोया ताकि वह इतना भयंकर न लगे, हमने शव पेटिका के सिरहाने पर उसकी काकेशियाई जीन रखी और धूमधाम के स्थान पर—शहर के बीच में, सार्वजनिक बाग में जंगले के बिल्कुल पास उसके लिये क़ब्र खोदी। वहाँ घोड़ों पर पर सवार होकर हमारा स्क्वाड्रन, रेजीमेण्ट के सदर दफ़्तर के अधिकारी और

डिवीजन का सैन्य कोमिसार पहुँचे। और जब कैथीड्रल की घड़ी ने दो बजाये हमारी जर्जर तोप ने पहला फायर किया। वह अपनी तीन इंची पुरानी नाल से पूरे जतन के साथ कमाण्डर को सलामी दे रही थी। जब उसने पूरी सलामी दे डाली तो हम शव पेटिका को खुदी क़ब्र के पास उठाकर ले गये। शव पेटिका का ढक्कन खुला था, दोपहर की चटकीली धूप लम्बे शव, उसके टूटे दाँतों से भरे मुँह और सावधान की मुद्रा में एड़ियाँ जोड़े पालिश किये बूटों को आलोकित कर रही थी।

"जवानो!" मृतक की ओर देखते हुए रेजीमेण्ट कमाण्डर पुगाचोव बोला और जाकर गड्ढे के किनारे खड़ा हो गया। "जवानो!" वह कँपकँपाया और तनकर बोला। "हम पाशा त्रुनोव को, विश्व के वीर को दफ़ना रहे हैं, पाशा को अन्तिम सम्मान दे रहे हैं..."

और अनिद्रा के कारण लाल आँखों को आकाश की ओर उठाकर पुगाचोव ने चिल्ला-चिल्लाकर प्रथम अश्वसेना के मारे गये जवानों के बारे में, भावी सदियों की निहाई पर इतिहास के हथौड़े से कूट-कूटकर नये जीवन को गढ़नेवाले इस गौरवशाली जत्थे के बारे में भाषण दिया। पुगाचोव ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर भाषण दे रहा था, बोलते समय वह अपनी टेढ़ी चेचेनी तलवार की मूठ को कसकर पकड़ रहा था और फटीचर बूटों पर लगी रुपहली महमेजों से ज़मीन कुरेद रहा था। उसके भाषण के बाद बैण्ड ने 'इण्टरनेशनल' धुन बजायी और कज़्ज़ाकों ने पाशा त्रुनोव से विदा ली। सारा स्क्वाड्रन घोड़ों पर चढ़कर हवा में गोली चलाकर सलामी देने लगा, हमारी तीन इंची तोप फिर से भूँकी और हमने तीन जवानों को पुष्पहार लाने को भेजा। वे घोड़ों को सरपट दौड़ाते हवा में गोलियाँ चलाते, कलाबाजियाँ दिखाते गये और पूरी अंजलियाँ भरकर लाल फूल लाये। पुगाचोव ने इन फूलों को क़ब्र के पास बिखेर दिया और हम त्रुनोव के पास जाकर अन्तिम चुम्बन लेने लगे। मैंने उसके जीन से घिरे स्वच्छ माथे को होंठों से छुआ और शहर में, नीली धूल और गलीसिया की नीरसता में लिपटे गॉथिक शैली में निर्मित सोकाल में चला गया।

बाग की बायीं ओर बड़ा चौक, प्राचीन सिनागागों से घिरा चौक फैला था। फटे-पुराने चोगे पहने यहूदी इस चौक में तू-तू, मैं-मैं और हाथापाई कर रहे थे। उनमें से एक पक्ष—सनातनी—बेल्ज के रब्बी अदासिया के विचारों की बड़ाई कर रहे थे और इसके लिए गुस्यातिन के रब्बी यहूदा के चेले, नरमपंथी हसीदी सनातनियों की धज्जियाँ उड़ा रह थे। यहूदी रहस्यवादी मत कब्बाला पर बहस कर रहे थे और बहस में बार-बार हसीदीवादियों के उत्पीड़क बिलनों के मुख्य यहूदी ग्रन्थी इलिया का नाम ले रहे थे...

युद्ध और तोपों की गरज को भूलकर हसीदी विलनो के मुख्य यहूदी धर्माधिकारी इलिया को गालियाँ दे रहे थे और मैं, त्रुनोव के शोक में डूबा, मैं भी उनके बीच धक्के खा रहा था और अपना मन हल्का करने के लिये उनके साथ तब तक गला फाड़कर चिल्लाता रहा जब तक मुझे अपने सामने डॉन क्विगजोट जैसा मरियल और लम्बू एक गलीसी न दिखायी दिया।

यह गलीसी टखनों तक लम्बा गाढ़े का सफ़ेद जामा पहने था। उसकी पोशाक ऐसी लग रही थी मानो वह क़ब्र में लेटने जा रहा हो या गिरजे में यूखारिस्त पाने के लिये जा रहा हो। वह रस्सी से बँधी व्याकुल गाय को ले जा रहा था। उसके भीमकाय धड़ पर छोटा-सा, चपल, साँप के कुचले फन जैसा सिर टिका था; देहाती पुआल के बने चौड़े हैट से ढका सिर हिलता जा रहा था। रस्सी से बँधी बिचारी गाय गलीसी के पीछे-पीछे चल रही थी। वह उसे रौब के साथ ले जा रहा था।

परेड की तरह दो कदम रखते हुए उसने चौक को पार किया और बदबूदार घने धुएँ से झुलसी टेढ़ी-मेढ़ी गली में प्रवेश किया। कालिख से ढके घरों की दरिद्र रसोइयों में बूढ़ी हब्शिनों जैसी लगती यहूदिनें, बेहद बड़ी छातियों वाली यहूदिनें खटपट कर रही थीं। गलीसी उनके पास से होकर गुजरा और गली के सिरे पर खण्डित इमारत के सामने रुक गया।

वहाँ, उस इमारत के अग्रभाग में टेढ़े-मेढ़े सफ़ेद स्तम्भ के पास बैठा जिप्सी लोहार घोड़ों की नालें जड़ रहा था। हथौड़े से सुम ठोंकता जिप्सी कभी अपनी चिकनी जुल्फों को झटकता, सीटी बजाता और मुस्करा देता। अपने घोड़ों के साथ कई कज़्ज़ाक उसे घेरे खड़े थे। मेरा गलीसी लोहार के पास गया और चुपचाप उसे कोई दर्जन भर भुने आलू थमाकर और किसी की ओर देखे बिना उल्टे पाँव लौट पड़ा। मैं उसके पीछे-पीछे चलने ही वाला था पर एक कज़्ज़ाक ने मुझे रोक लिया। इस कज़्ज़ाक का नाम सेलीवेर्स्तोव था। एक जमाने में वह मख्नो के गिरोह को छोड़कर आया था और 33वीं कैवेलरी रेजीमेण्ट में था।

"ल्यूतोव," मेरे साथ हाथ मिलाकर वह बोला, "तू सब लोगों को सताता है, तुझ में शैतान बैठा है, ल्यूतोव, तूने आज सबेरे त्रुनोव को क्यों पीटा?"

और पराये बेसिरे शब्दों का प्रयोग करते हुए सेलीवेर्स्तोव चिल्ला-चिल्लाकर यह निहायत बकवास करने लगा मानो आज सुबह मैंने त्रुनोव की, अपनी स्क्वाड्रन कमाण्डर की पिटाई की हो। सेलीवेर्स्तोव इसके लिये तरह-तरह से मुझे उलाहने देने लगा, वह सभी कज़्ज़ाको के सामने मुझे उलाहने दिये जा रहा था पर इस किस्से में तनिक भी सच्चाई न थी। यह सच है कि उस दिन सुबह त्रुनोव से मेरी झड़प हो गयी थी क्योंकि त्रुनोव युद्धबन्दियों के साथ हमेशा कोई न कोई लफड़ा खड़ा कर देता था, मेरी उससे झड़प हुई थी पर वह तो मर गया, अब कोई उसे कुछ कहनेवाला नहीं रहा, मैं ही था आख़िरी। हमारा झगड़ा यों हुआ।

आज हमने जावोदी स्टेशन पर पौ फटने के समय युद्धबन्दी बनाये थे। वे दस लोग थे। जब हमने उन्हें क़ैद किया तो वे सब कच्छे-बनियानों में थे। पोलैण्डवालों के पास ही वर्दियों का ढेर पड़ा था, यह उनकी चाल थी ताकि हम अफ़सरों और जवानों का भेद न कर पायें। उन्होंने खुद अपने कपड़े उतारकर डाल दिये थे पर इस बार त्रुनोव ने सच्चाई का पता लगाने की ठान ली।

"अफ़सरों, आगे निकलो!" उसने बन्दियों के पास जाकर आदेश दिया और रिवाल्वर निकाली।

उस सुबह त्रुनोव को सिर में घाव लग चुका था, उसका सिर कपड़े में लिपटा हुआ था, उससे खून ऐसे ही ढुलक रहा था जैसे गांज से वर्षा का पानी।

"बोलो कौन है अफ़सर?" उसने फिर से पूछा और रिवाल्वर की मूठ से पोलिशों को धक्के मारने लगा।

तब झुण्ड से एक दुबला और बूढ़ा आदमी निकला। उसकी पीठ की हड्डिया उभरी थीं, कपोल पीले और मूँछें लटकी थीं।

"खत्म हुई यह लड़ाई," बूढ़ा अजब उल्लास के साथ पोलिश भाषा में बोला, "अफ़सर सब भाग गये, खत्म हुई यह लड़ाई..."

और पोलिश ने स्क्वाड्रन कमाण्डर के सामने अपने नीली नसों से ढके हाथ फैलाये। ये पाँच उँगलियाँ हैं," वह रोता हुआ और अपने विशाल झुर्रीदार हाथ को घुमाते हुए बोला, "इन पाँच उँगलियों से मैंने अपने घरवालों की रोजी-रोटी कमाता था..."

बूढ़े की साँस उखड़ गयी, लड़खड़ाकर उल्लास के आँसू छलकाता वह त्रुनोव के सामने घुटनों पर गिर गया, पर त्रुनोव ने उसे तलवार से धकेल दिया।

"अफ़सर तुम्हारे बिच्छू हैं," स्क्वाड्रन कमाण्डर बोला, "अफ़सरों ने तुम्हारे यहाँ कपड़े उतारकर फेंक दिये... जिनके नाम में निकलेंगे उसको जान से हाथ धोना पड़ेगा, मैं पहनवाकर देखूँगा..."

और स्कवाड्रन ने झट से कपड़ों के ढेर से अफ़सरोंवाली टोपी उठायी और बूढ़े को पहना दी।

"नाप सही है," त्रुनोव बुदबुदाया और उसके निकट जाते हुए फुसफुसाया, "नाप बिल्कुल सही है..." और उसने बन्दी के हलक में अपनी तलवार घुसेड़ दी। बूढ़ा गिर पड़ा, उसकी टाँगें फड़कीं और गले से मूँगे के रंग की फेनिल धार फूट पड़ी। तब अपने एक कान में पड़े छल्ले और गोल देहाती गर्दन को चमकाता अंद्रूश्का वोस्मीलेतोव उसके पास गया। अन्द्रूश्का ने पोलिश बूढ़े की पतलून के बटन खोले, उसको हल्के से झटका और दम तोड़ते आदमी की पतलून उतारने लगा। उसने पतलून को अपनी जीन पर लटकाया, ढेर से वर्दी के दो कोट और लिये, फिर घोड़े पर सवार होकर हमसे कुछ दूर हटा और चाबुक से खेलने लगा। उसी क्षण बादलों के पीछे से सूरज निकला। धूप तेजी से अन्द्रूश्का के घोड़े, उसकी चंचल चाल, लापरवाही से झूलती उसकी छितरी दुम को नहलाने लगी। अन्द्रूश्का पगडण्डी से जंगल की ओर जा रहा था, जंगल में हमारा कारवाँ खड़ा था, कारवाँ के गाड़ीवान धमाचौकड़ी मचाते हुए सीटियाँ बजा रहे थे और वोस्मीलेतोव को इशारे कर रहे थे मानो वह गूँगा हो।

वह आधा रास्ता पार कर चुका था पर तभी त्रुनोव ने अचानक घटनों पर गिरकर कर्कश स्वर में उसे पुकारा :

"अन्द्रूश्का," स्क्वाड्रन कमाण्डर ज़मीन पर नज़र गड़ाकर बोला। "हमारा सोवियत जनतंत्र अभी ज़िन्दा है, उसका बँटवारा करने की जल्दी मत कर, माल पटक दे, अन्द्रूश्का।"

पर वोस्मीलेतोव ने मुड़कर तक न देखा। वह अद्‌भुत कज़्ज़ाक ढंग से घोड़े को दौड़ाता जा रहा था, उसका घोड़ा अपनी टाँगों के बीच से दुम को ऐसे उछाल रहा था मानो कह रहा हो हम से, छोड़ो हमारा पिण्ड।

"गद्दारी!" तब हैरान होकर त्रुनोव बुदबुदाया। "गद्दारी!" यह कहकर उसने जल्दी से कन्धे पर कारबाइन टिकायी और गोली चला दी, हड़बड़ी के कारण उसका निशाना चूक गया। पर इस बार अन्द्रूश्का रुक गया। उसने हमारी ओर घोड़ा मोड़ा और जीन पर लुगाइयों की तरह फुदकने लगा, उसका चेहरा क्रोध से तमतमा गया, वह टाँगे हिलाने लगा।

"सुनता है गबरू," वह पास आते हुए चिल्लाया और अपनी ही गहरी, शक्तिशाली आवाज़ को सुनकर एकदम शान्त हो गया, "कहीं मैं तेरी ही चटनी न बना दूँ, गबरू. .. दस बन्दी पकड़ लिये तो क्या किला फतह कर लिया, हम तो सौ-सौ पकड़ चुके हैं—हमने तुझे लौटाया नहीं था... कर चुपचाप अपना काम।"

और अपनी जीन से पतलून और दो फ़ौजी कोट पटककर अन्द्रूश्का ने स्क्वाड्रन कमाण्डर की ओर से मुँह फेरा और नाक से सुड़सुड़ करने लगा। वह बाकी बन्दियों की सूची बनाने में मेरी मदद करने लगा। वह साथ लगा हुआ था और बड़ी ज़ोर-ज़ोर से सुड़सुड़ कर रहा था। अन्द्रूश्का को देखकर क़ैदी चीखकर दौड़ पड़ते, वह पीछा करके उनको ऐसे बाँहों में भर लेता जैसे शिकारी भोर में नदी किनारे सरकण्डों को अपनी बाँहों में गट्ठर की तरह भरकर पानी पीने के लिये आते पशुओं के झुण्ड को देखता है।

बन्दियों से पूछताछ करते-करते गालियों का मेरा भण्डार खत्म हो चुका था, जैसे-तैसे मैंने आठ आदमियों के नाम, उनकी यूनिटों के नम्बर और नाम दर्ज किये ओर नौंवें से पूछताछ करने लगा। यह नौवाँ तरुण था, देखने में किसी अच्छे सर्कस के जर्मन कलाबाल जैसा, जर्मनों जैसी गोरी-चिट्टी छाती और गलमुच्छों वाला तरुण, बुना बनियान और लेगिंग पहने। उसने अपनी ऊँची छाती की दो चूचियाँ मेरी ओर मोड़ीं, अपने सुनहले पसीने से तर बालों को माथे से झटका और अपनी यूनिट का नाम बताया। तब अन्द्रूश्का ने उसकी लेगिंग पकड़कर सख्ती से पूछा :

"कहाँ से लाया है?"

"माँ ने बुनी है," बन्दी ने उत्तर दिया और लड़खड़ा गया।

"तेरी माँ होजरीवाली लगती है," अन्द्रूश्का उसका मुआयना करते हुए बोला और उसने उँगलियों के पोरों से पोलैण्डवाले के करीने से कटे नाखूनों को छुआ, "तेरी माँ होजरी जैसी है, हम लोगों ने ऐसी कभी नहीं पहनीं..."

उसने एक बार और बुनी लेगिंग को छूकर देखा और नौवें का हाथ पकड़ा उसे उन बाकी बंदियों के पास ले जाने के लिये जिनके नाम दर्ज किये जा चुके थें पर उसी क्षण मैंने टेकरी के पीछे से निकलते त्रुनोव को देखा। स्क्वाड्रन कमाण्डरके सिर से खून बह रहा था जैसे गाँज से बारिश का पानी, सिर पर बँधा कपड़ा खुलकर लटका था, वह पेट के बल रेंग रहा था, हाथों में कारबाइन थी। यह जापानी कारबाइन थी, चमचमाती, जबरदस्त मार करनेवाली बीस कदम की दूरी से पाशा ने तरुण की खोपड़ी को चकनाचूर कर दिया और पोलैण्डवाले के भेजे के लोथड़े मेरे हाथों पर गिरे। तब त्रुनोव ने कारबाइन से कारतूस निकालकर फेंक दिये और मेरे पास आया।

"एक का नाम मिटा दो," उसने सूची की ओर इशारा करके कहा।

"नहीं मिटाऊँगा," मैंने उत्तर दिया। "पाशा, लगता है कि आदेश तेरे लिये नहीं जारी किये जाते..."

"मिटा दे एक का नाम!" त्रुनोव ने फिर से कहा और क़ागज़ पर अपनी काली उँगली चुभोयी।

"मैं नहीं मिटानेवाला!" मैं गला फाड़कर चिल्लाया। "दस थे, आठ रह गये, हेडक्वार्टर में तेरी तारीफ़ नहीं करेंगे, पाशा..."

"तारीफ करें न करें पर हेडक्वार्टर वाले भी हमारी अभागी ज़िन्दगी को देखते हैं," त्रुनोव ने जवाब दिया और मेरी ओर बढ़ने लगा, वह सिर से पाँव तक कटा-फटा था, गला उसका बैठा था और आग-बबूला हो रहा था, पर फिर रुक गया। उसने आकाश की ओर अपना खून से लथपथ सिर उठाया और कटु उलाहना भरे स्वर में बोला : "करता रहा भिन-भिन, देख उसे, वह भी भिन-भिन करता आ रहा है..."

और स्क्वाड्रन कमाण्डर ने हमें आकाश में चार बिन्दु, हंसों जैसे सफ़ेद बादलों में घुसते चार बमवर्षक दिखाये। ये मेजर फाउण्ट-ले-रो के हवाई दस्ते के विमान थे, बड़े-बड़े और बख्तरबन्द।

"सवार हो!" उनको देखकर प्लाटून कमाण्डर चिल्लाये और घोड़ों को सरपट दोड़ाते हुए स्क्वाड्रन को जंगल में ले गये, पर त्रुनोव अपने स्क्वाड्रन के साथ नहीं गया। वह स्टेशन की इमारत के पास रह गया, उसकी दीवार से सटकर शान्त हो गया। अन्द्रूश्का वोस्मीलेतोव और दो मशीनगन चालक, किरमिजी पतलूनें पहने दो नंगे पाँव जवान, उसके पास खड़े घबरा रहे थे।

"रफूचक्कर हो जाओ, जवानो," त्रूनोव ने उनसे कहा और उसका चेहरा पीला पड़ने लगा, "पुगाचोव के नाम मेरी रिपोर्ट लेते जाओ..."

और बड़े-बड़े देहाती अक्षरों में त्रुनोव ने क़ागज़ के आड़े फटे टुकड़े पर लिख डाला :

"आज की तारीख में मरते हुए," उसने लिखा, "मैं दो लोगों को दुश्मनों को गिराने के लिये नियत करना अपना कर्त्तव्य मानता हूँ और साथ ही प्लाटून कमाण्डर

सेम्योन गोलोव को कमान सौंप रहा हूँ..."

उसने चिट्ठी बन्द की, ज़मीन पर बैठा और ज़ोर लगाकर उसने अपने बूट उतार डाले।

"पहनकर घूमो," मशीनगन चालकों को चिट्ठी और बूट देते हुए वह बोला, "बूट नये ही हैं, पहनकर घूमो..."

"भाग्य तुम्हारा साथ दे, कमाण्डर," जवाब में मशीनगन चालक बुदबुदाये, वे वहीं पैर बदलते खड़े थे, जाने की जल्दी नहीं कर रहे थे।

"तुम्हारा भी भला हो," त्रुनोव बोला, "कोई बात नहीं, यारों, देख लेंगे किसी तरह..." और स्टेशन की गुमटी से कुछ दूर छोटे-से टीले पर लगी मशीनगन के पास चला गया। वहाँ अन्द्रूश्का वोस्मीलेतोव, गुदड़िया, उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

"देख लेंगे किसी तरह," त्रुनोव उससे बोला और मशीनगन से निशान तानने लगा। "तू क्या मेरे साथ रहेगा?.."

"हे यीशु प्रभु," डरकर अन्द्रूश्का ने सहमकर उत्तर दिया, सुबकी ली, उसके चेहरे का रंग उड़ गया और वह हँस पड़ा, "यीशु प्रभु की माँ की जै!.."

और एरोप्लेन की ओर दूसरी मशीनगन तानने लगा।

हवाई जहाज स्टेशन की सीध में ऊपर उड़ रहे थे, वे ऊँचाई पर शोर मचाते तड़तड़ कर रहे थे, नीचे आकर वे मंडराने लगते और सूरज की गुलाबी किरणें उनके चमचमाते डैनों पर बिछ जातीं।

उस समय हम, चौथी स्क्वाड्रन के लोग जंगल में छिपे बैठे थे। वहीं, जंगल में बैठे हमने पाशा त्रुनोव और अमरीकी सर्विस के मेजर रेजीनाल्ड फाउंट-ले-रो के बीच बेसानी की लड़ाई देखी। मेजर और उसके तीन बमवर्षकों ने इस लड़ाई में अपना जौहर दिखाया। वे तीन सौ मीटर की ऊँचाई तक उतर आये और अपनी मशीनगनों से पहले उन्होंने अन्द्रूश्का को और फिर त्रुनोव को भून दिया। हमारेवालों की गोलियों से अमरीकियों को कोई क्षति न पहुँची; एरोप्लेन चले गये, उन्हें जंगी में छिपी स्क्वाड्रन नहीं दिखायी दी। इसलिये कोई आधे घण्टे रुककर हम शव लाने जा सके। अन्द्रूश्का वोस्मीलेतोव का शव उसके दो रिश्तेदार ले गये जो हमारी ही स्क्वाड्रन के थे, और अपने मृत कमाण्डर त्रुनोव को हम गाथिक स्थापत्यवाले सोकाल शहर ले गये और वहाँ धूमधामाले स्थान पर—शहर के केन्द्र में सार्वजनिक बाग में, फुलवारी में दफना दिया।

दो इवान

गिरजे का डीकन अग्गेव दो बार मोर्चे से भागा था। इसके लिये उसे मास्को दण्डित रेजीमेण्ट में भेज दिया गया। मोर्चों पर भेजने से पहले सर्वोच्च सेनापति सेर्गेई सेर्गेइविच कामेनेव ने मोझाइस्क में रेजीमेण्ट का मुआयना किया।

"मुझे इन लोगों की ज़रूरत नहीं," सर्वोच्च सेनापति बोले, "वापस भेज दो इन्हें मास्को, शौचालय साफ़ करने के लिये..."

मास्को में ले-देकर दण्डितों की मार्च कम्पनी गठित की गयीं उसमें भरती किये गये लोगों में डीकन भी आ गया। वह पोलिश मोर्चे पर पहुँचा और बहरा होने का ढोंग करने लगा। मेडिकल दस्ते का कम्पाउण्डर बार्सूत्स्की हफ़्ते भर उससे झक मारता रहा पर उसकी हठ को न तोड़ पाया।

"भाड़ में जाये बहरा," बार्सूत्स्की मेडिकल अर्दली सोइचेन्को से बोला, "कारवाँ में कोई छकड़ा ढूँढ़, डीकन को जाँच के लिये रोव्नो भेज देंगे..."

सोइचेन्को कारवाँ से एक नहीं तीन छकड़े ले आया। उनमें से पहले का गाड़ीवान इवान अकीन्फीयेव था।

"इवान," सोइचेन्को उससे बोला, "बहरे को रोव्नो ले जाना।"

"ले जाने में कोई मुश्किल नहीं," अकीन्फीयेव ने उत्तर दिया।

"और मुझे पहुँचाने की रसीद लाकर देना..."

"ठीक है," अकीन्फीयेव बोला, "पर उसके बहरेपन की वजह क्या है?..."

"अपनी चमड़ी सभी को प्यारी होती है," सोइचेन्को, मेडिकल अर्दली बोला। "बस वजह यही है। ढोंगी है वह, बहरा नहीं..."

"ले जाने में कोई मुश्किल नहीं," अकीन्फीयेव फिर बोला और बाकी छकड़ों के पीछे उसने अपना छकड़ा भी हाँक दिया।

मेडिकल केन्द्र के सामने कुल जमा तीन छकड़े जमा हुए। पहले पर पृष्ठ प्रदेश को स्थानान्तरित नर्स को बिठा दिया गया, दूसरा गुर्दे की बीमारी से पीड़ित जवान को दे दिया गया और तीसरे पर डीकन इवान अग्गेव बैठ गया।

सब प्रबन्ध करके सोइचेन्को ने कम्पाउण्डर को बुलाया।

"जा रहा है हमारा ढोंगी," वह बोला, "रसीद समेत कोर्ट मार्शल को रवाना कर दिया। बस अभी चलनेवाले हैं..."

बार्सूत्स्की खिड़की से झाँका, छकड़ों को देखकर वह तमतमाकर, नंगे सिर ही घर से बाहर दौड़ता निकला।

"अरे, तू तो इसकी जान ही ले लेगा!" वह चिल्लाकर अकीन्फीयेव से बोला। "डीकन को दूसरे छकड़े पर बिठाओ।"

"कहाँ बिठायें," पास में खड़े कज़्ज़ाक बोले और हँस पड़े। "हमारे इवान के हाथ बड़े लम्बे हैं..."

अकीन्फीयेव वहीं अपने घोड़ों के पास हाथ में कोड़ा लिये खड़ा था। उसने टोपी उतारी और विनम्रता के साथ बोला :

"नमस्ते, कामरेड कम्पाउण्डर।"

"नमस्ते, दोस्त," बार्सूत्स्की ने उत्तर दिया, "तू तो हैवान है, डीकन को दूसरे

छकड़े पर बिठा देना चाहिये..."

"मैं जानना चाहूँगा," तब अकीन्फीयेव चीककर बोला, उसका ऊपरवाला होंठ काँपकर सरका और उसकी श्वेत दन्तावली के ऊपर फड़कने लगा, "मैं जानना चाहूँगा, हमारे लिये यह चोखा है या नहीं चोखा, जब दुश्मन हम पर कहर बरपा रहा है, जब वह हमारी गर्दन मरोड़ रहा है, मन-मन के पत्थरों की तरह पाँवों पर लटका है और नागों से उसने हमारे हाथ बाँध रखे हैं, क्या हमारे लिये यह चोखा है कि ऐसे विकट समय हम अपने कानों में रूई ठूँसकर बहरे हो जायें?"

"इवान हमारा कोमिसारों का हिमायती हैं," पहले छकड़े का गाड़ीवान कोरोत्कोव चिल्लाकर बोला, "कसम से, पक्का हिमायती है..."

"मालूम है कैसा हिमायती है!" बार्सूत्स्की ने बुदबुदाकर कहा और मुँह फेर लिया। "हम सब हिमायती हैं। पर काम नियम-कानून से करना चाहिये..."

"अरे, हमारे बहरे को सब सुनाई देता है," अचानक अकीन्फीयेव बीच में बोल पड़ा, उसने अपनी मोटी उँगलियों में चाबुक मरोड़ा और हँसकर डीकन को आँख मारी। वह छकड़े पर अपने चौड़े कन्धों को झुकाये बैठा था और सिर हिला रहा था।

"अच्छा, जाओ भगवान के लिये!" कम्पाउण्डर हताश होकर चिल्लाया। "इवान, सारी ज़िम्मेदारी तेरी होगी..."

"जिम्मेदारी के लिये मैं राजी हूँ।" ख़यालों में डूबे हुए अकीन्फीयेव बोला और सिर झुका लिया। "आराम से बैठ," वह बिना मुड़कर देखे डीकन से बोला, "और भी आराम से बैठ," कज़्ज़ाक फिर से बोला और बागडोर सँभाल ली।

छकड़े एक पाँत में राजमार्ग पर दौड़ने लगे। आगे-आगे कोरोत्कोव था, अकीन्फीयेव तीसरा था, वह सीटी बजाता गीत की धुन निकाल रहा था और लगाम को घुमा रहा था। इसी तरह उन्होंने कोई पन्द्रह मील का सफ़र तय किया और शाम को दुश्मन के आकस्मिक सैलाब ने उन्हें पलट दिया।

उस दिन, बाईस जुलाई को, पोलैण्डवालों ने तीव्र परिचालन करके हमारी सेना के चण्डावल को अस्त-व्यस्त कर डाला और झपटकर कोजिन कस्बे में घुस गये और वहाँ उन्होंने ग्यारहवीं डिवीजन के बहुत से जवानों को बन्दी बना लिया। छठी डिवीजन की स्क्वाड्रनों को कोजिन के इलाके में दुश्मन से लोहा लेने के लिये भेजा गया। टुकड़ियों के बिजली की गति से परिचालन ने काफ़िलों की आवाज़ाही को तहस-नहस कर डाला, दो दिन तक क्रान्तिकारी कोर्ट मार्शल के छकड़े लड़ाई की घनघोर लहरों के थपेड़े खाते रहे और तीसरी रात को ही वे उस सड़क पर पहुँचे जिस पर से चण्डावल के हेडक्वार्टर पीछे हट रहे थे। इसी सड़क पर आधी रात को वे मुझे मिले।

खोतिन के पास लड़ाई के बाद मैं निराशा से चूर था जब वे मुझे मिले। खोतिन की लड़ाई में मेरा घोड़ा मारा गया। उसे खोकर मैं एम्बुलेंस की टमटम पर बैठ गया और शाम तक घायलों को उठाता रहा। फिर भले-चंगों को टमटम से खदेड़ दिया

गया और मैं टूटी फूटी झोंपडी के पास मुँह ताकता रह गया। चंचल घोड़ों को रथ में जोतकर रात मेरे पास आ रही थी। कारवाँओं काफ़िलों की चिल्लपों से सारा ब्रह्माण्ड गूँज रहा था। हाहाकार से घिरी पृथ्वी पर से सड़कें ओझल हो रही थीं। रात के शीतल उदर से तारे बाहर निकल आये थे और क्षितिज पर उजाड़ गाँव धूँ-धूँ जल रहे थे। अपने सिर ऊपर जीन-काठी लादकर मैं टूटी-फूटी मेढ़ पर चल पड़ा और मोड़ पर अपनी लघु शंका मिटाने के लिये रुका। अपनी शंका दूर करके मैंने बटन बन्द किये और मुझे हाथों पर छींटे महसूस हुए। मैंने टार्च जलाई और मुड़कर देखा, ज़मीन पर मुझे अपने मूत्र से भीगी एक पोलिश लाश दिखायी पड़ी। एक डायरी और पिलसूदस्की के आह्वानों के परचे लाश के पास खड़े। पोलैण्ड वाले की डायरी में जेब खर्च का हिसाब, क्राकोव के ड्रामा थियेटर के नाटकों का कार्यक्रम और मरीया-लुईजा नाम की किसी औरत का जन्मदिन लिखे हुए थे। मार्शल और सर्वोच्च सेनापति पिलसूदस्की के आह्वान से मैंने अपने अज्ञात भाई के कपाल से दुर्गन्ध युक्त द्रव पोंछा और जीन-काठी के बोझ से झुककर आगे चल पड़ा।

तभी कहीं पास में पहियों की चरमराहट गूँजी।

"रुक!" मैं चिल्लाया। "कौन है?"

रात तीव्र घोड़ों को रथ में जोतकर मेरी ओर आ रही थी, क्षितिज पर आगे रेंग रही थी।

"क्रान्तिकारी कोर्ट मार्शल वाले हैं," अंधकार से दबे स्वर में कोई बोला।

मैं आगे दौड़ा और छकड़े से टकरा गया।

"मेरा घोड़ा मारा गया," मैं ज़ोर से बोला, "लावरिक था मेरे घोड़े का नाम..."

कोई कुछ नहीं बोला। मैं छकड़े पर चढ़ गया, जीन को सिर के नीचे रखकर सो गया और बासी घास और संयोग से मिले सहयात्री इवान अकीन्फीयेव के बदन से गर्मी पाता हुआ पौ फटने तक सोता रहा। सुबह कज़्ज़ाक अकीन्फीयेव मेरे बाद सोकर उठा।

"सुबह हो गयी, भगवान का शुक्र है," वह बोला, सन्दूकची के नीचे से उसने रिवाल्वर निकाली और डीकन के कान के पास रखकर गोली चला दी। वह उसके ऐन सामने बैठा घोड़े हाँक रहा था। उसकी विशाल झड़ते बालोंवली खोपड़ी पर हल्के सलेटी बाल उड़ रहे थे। अकीन्फीयेव ने दूसरे कान के पास गोली चलायी और रिवाल्वर कबूर में रख लिया।

"गुड मार्निंग, इवान!" आह-ओह करके बूट पहने हुए वह डीकन से बोला। "कुछ खा-पी लें, क्यों?"

"ओ छोरे," मैं चिल्लाया, "तू क्या कर रहा है?"

"जो कर रहा हूँ वह भी कम है," खाना निकालते हुए अकीन्फीयेव ने उत्तर दिया, "वह तीन दिन और तीन रातों से मेरे सामने ढोंग रच रहा है..."

तब पहले वाले छकड़े से कोरोत्कोव ने मुझे आवाज़ दी जिसे मैं 31वीं रेजीमेण्ट से जानता था और शुरू से लेकर आख़िर तक डीकन का पूरा क़िस्सा सुना दिया। अकीन्फ़ीयेव कान मोड़कर ध्यान के साथ उसकी बात सुन रहा था और फिर उसने सीट के नीचे से बैल की भुनी टाँग निकाली। वह गाढ़े के टुकड़े से ढकी थी और उस पर पुआल चिपकी थी।

डीकन गाड़ीवान के बक्से से उतरकर हमारे पास आकर बैठा, चक्कू से उसने हरे गोश्त के टुकड़े काटे और सबको एक-एक टुकड़ा बाँट दिया। नाश्ता खत्म करके अकीन्फीयेव ने बैल की टाँग को बोरी में बन्द किया और सूखी घास के ढेर में ठूंस दिया।

"इवान," वह डीकन अग्गेव से बोला, "चल भूत झाड़ने। वैसे भी रुकना है ही, घोड़ों को पानी पिला रहे हैं..."

उसने जेब से दवाई की बोतल और घाव धोने की पिचकारी निकाली और उन्हें डीकन को थमा दिया। वे छकड़े से उतरकर खेत में कोई बीस कदम की दूरी पर चले गये।

"सिस्टर," अगले छकड़े पर बैठा कोरोत्कोव चिल्लाकर नर्स से बोला, "अपनी नज़रों के तीर कहीं और मोड़, नहीं तो अकीन्फ़ीयेव कामाल देखते ही अन्धी हो जायेगी तू।"

"भाड़ में जाओ, थूकती हूँ मैं उस पर," नर्स ने बड़बड़ाकर अपना मुँह फेर लिया।

तब अकीन्फ़ीयेव ने अपनी क़मीज़ उठायी। डीकन उसके सामने घुटनों के बल बैठकर उसके माल को पिचकारी से धोने लगा। फिर उसने पिचकारी को कपड़े से पोंछा और उसे सूरज की तरफ़ करके देखा। अकीन्फ़ीयेव ने पतलून चढ़ायी और मौका देखकर डीकन के पीछे गया और फिर से उसके कान के बिलकुल पास गोली चला दी।

"इवान को हमारा नमस्कार," पतलून के बटन बन्द करता हुआ वह बोला। डीकन ने दवाई की बोतल घास पर रखी और घुटनों से उठकर खड़ा हो गया। उसक झीने बाल उड़कर खड़े हो गये।

"सबसे ऊँची अदालत मेरा फ़ैसला करेगी," वह भारी स्वर में बोला, "इवान, तू कोई नहीं होता मेरा फ़ैसला करनेवाला..."

"अब तो हरेक हरेक का फ़ैसला करता है," शरारती कुबड़े जैसे दिखते दूसरे छकड़े के गाड़ीवान ने उसे टोका। "और मौत का फ़ैसला भी चट से हो जाता है..."

"बेहतर तो यही होगा कि," अग्गेव बोला और तनकर खड़ा हो गया, "तू मुझे मार डाल, इवान..."

"पगला मत बन, डीकन," पुराने ज़माने से मेरा परिचित करेरोत्कोव उसके पास जाकर बोला। "तू सोच तो कि कैसे आदमी के साथ जा रहा हैं दूसरा तो तुझे बत्तख़ की तरह हलाल कर डालता कि चूँ भी न करता, पर यह तो तेरे से सच्चाई उगलवा रहा है, तुझे पाखण्डी पुजारी को सीख दे रहा है..."

"बेहतर तो यही होगा कि तू मूझे," डीकन फिर हठ के साथ बोला और आगे बढ़ा, "मार डाल, इवान।"

"तू ख़ुद अपने को मार डालेगा, साँप कहीं का," अकीन्फ़ीयेव सिसकारकर बोला, उसके चेहरे का रंग उड़ गया, "तू ख़ुद अपनी क़ब्र खोदेगा, ख़ुद उसमें अपने को गाड़ेगा..."

उसने हाथ फड़फड़ाये, अपना गरेबान फाड़ डाला और ज़मीन पर ढह गया, उसे दौरा पड़ गया था।

"अरे, मेरे जिगर के टुकड़े!" वह पागलों की तरह चिल्लाया और मुँह पर मिट्टी डालने लगा। "अरे, मेरे ख़ून के कतरे, मेरे जिगर के टुकड़े, सत्ता मेरी सोवियत..."

"इवान," कोरोत्कोव उसके पास गया और कन्धे पर हाथ रखकर स्नेह क साथ बोला, "यार मेरे रहने दे, मन छोटा मत कर। चलने का वक्त हो गया है, इवान..."

कोरोत्कोव ने मुँह में पानी भरा और उसे अकीन्फ़ीयेव पर छिड़क दिया, फिर उसने इवान को उठाकर छकड़े पर लिटा दिया। डीकन फिर से गाड़ीवान के स्थान पर बैठ गया और हम चल पड़े।

वेर्बी कस्बे तक हमें ज़्यादा से ज़्यादा और दो मील की दूरी तय करनी थी। उस सुबह इस कस्बे में असंख्य काफ़िले जमा हो गये थे। यहाँ ग्यारहवीं डिवीजन थी और चौदहवीं भी, और चौथी भी यहीं थी। वास्केटें पहने, कन्धे उचकाये यहूदी अपनी ड्योढ़ियों पर पंख नुचे परिंदों की तरह खड़े थे। कज़्ज़ाक घर-घर जाकर तौलिये जमा कर रहे थे और हरे अलूचे खा रहे थे। जैसे ही हम वहाँ पहुँचे अकीन्फ़ीयेव सूखी खास के ढेर पर जाकर सो गया और मैं उसके छकड़े से कम्बल लेकर छाया में स्थान खोजने चल पड़ा। पर सड़क की दोनों ओर मैदान मैले से पटा पड़ा था। एक ओर बैठकर अख़बार पढ़ते दाढ़ीवाले, आँखों पर ताँबे के फ्रेम का चश्मा और सिर पर टाइरोल हैट लगाये देहाती ने मेरी आँखों में आसमंजस को देखकर कहा :

"कहने को तो आदमी कहलाते हैं पर गन्दगी गीदड़ों से भी ज़्यादा फैलाते हैं। धरती से शर्म आती है..."

और मुँह फेरकर वह फिर से अपने बड़े फ्रेम के चश्में से अख़बार पढ़ने लगा।

तब मैं जंगल की ओर बायीं तरफ़ मुड़ा और मुझे अपने पास आता डीकन दिखायी पड़ा।

"किधर फूट रहा है, यार?" पहले छकड़े से कोरोत्कोव चिल्लाकर उससे पूछ रहा था।

"जंगल-पानी के लिए," डीकन बुदबुदाया, लपककर मेरा हाथ पकड़ा और उसे चूमा। "श्रीमान्, आप नेक आदमी हैं," वह फुसफुसाकर, काँपते, हवा को निगलते हुए बोला। "फ़ुर्सत के पल कसीमोव शहर दो पंक्तियाँ लिख दें मेरी बीवी को, ताकि

मना ले वह मेरा मातम...''

''आप बहरे हैं, फ़ादर डीकन,'' मैंने ज़ोर चिल्लाकर पूछा, ''या नहीं?''

''माफ़ कीजिये,'' वह बोला, ''माफ़ कीजिये,'' और मेरी ओर कान करके वह बोला।

''आप बहरे हैं या नहीं, अग्गेव?''

''जी हाँ, बहरा हूँ,'' वह हड़बड़ाकर बोला। ''परसों तक मैं बिलकुल अच्छी तरह सुन सकता था पर कामरेड अकीन्फ़ीयेव ने गोलियाँ चला-चलाकर मेरी श्रवण-शक्ति को नष्ट कर दिया। उन्हें, कामरेड अकीन्फ़ीयेव का मुझे रोव्नो पहुँचाना था, पर मेरा अनुमान है कि वे शायद ही मुझे पहुँचायें...''

और डीकन घुटनों केबल गिरकर छकड़ों के बीच रेंगने लगा, उसका चेहरा पादरियोंवाले लम्बे लहराते बालों से ढका था। फिर वह खड़ा हुआ कोरोत्कोव के पास पहुँचा। उसके डीकन को तम्बाकू दिया और उन्होंने क़ागज़ लपेटकर सिगरेटें बनायीं और उन्हें सुलगा लिया।

''यह हुई न बात,'' कोरोत्कोव बोला और उसने पास बैठने की जगह खाली की। डीकन उसके पास बैठ गया और वे दोनों चुप हो गये।

फिर अकीन्फ़ीयेव जागा। उसने बोरी पलटकर बैल की टाँग निकाली, चाकू सेहरा मांस खुरचकर काटा और हरेक को एक-एक टुकड़ा बाँट दिया। इस सड़ी टाँग को देखकर मुझ पर मतली और हताशा हावी हो गयीं और मैंने मांस का अपना टुकड़ा वापस कर दिया।

''अलविदा, यारो,'' मैं बोला, ''खुश रहो...''

''अलविदा,'' कोरोत्कोव ने उत्तर दिया।

मैंने छकड़े से अपनी ज़ीन-काठी उठायी और चल पड़ा। जाते-जाते मुझे इवान अकीन्फ़ीयेव की अनन्त बड़बड सुनाई दे रही थी।

''इवान,'' वह डीकन से कह रहा था, ''तू ने बड़ी भारी भूल कर डाली, इवान। तुझे तो मेरे नाम से ही काँपना चाहिए था पर तू मेरे ही छकड़े पर बैठ गया। चल, मुझसे मिलने से पहले तक तो तू उछल-कूद कर सकता था पर अब मैं तुझ पर ज़ुल्म, सच कहता हूँ, ढा दूँगा तुझ पर ज़ुल्म, मेरे लिए यह मामूली बात हैं...''

एक घोड़े के किस्से का सिलसिला

चार महीने पहले हमारे भूतपूर्व डिवीजन कमाण्डर सावीत्स्की ने पहली स्क्वाड्रन के कमाण्डर ख़्लेब्निकोव को घोड़ा ले लिया था। तब ख़्लेब्निकोव फौज छोड़कर चला गया था और आज सावीत्स्की को उसकी चिट्ठी मिली।

सावीत्स्की को ख़्लेब्निकोव से

''मैं बुद्यान्नी की फ़ौज पर अब और ख़ार नहीं खा सकता, उस फ़ौज के बीच मैंने जो कष्ट भुगते उन्हें मैं समझता हूँ और उन्हें परम-पावन चीज़ की तरह दिल में सँजोकर रखता हूँ। और आपको, कामरेड सावीत्स्की, वीत्येबस्क ज़िले के मेहनतकश जनसाधारण, जहाँ मैं, ज़िला क्रान्तिकारी समिति का अध्यक्ष हूँ, विश्वव्यापी वीर के रूप मे, 'विश्व क्रान्ति जल्दी लाओ!' का नारा भेज रहे हैं, और कामना करते हैं कि वह सफ़ेद घोड़ा अनेक सालों तक हम सभी को प्यारी आज़ादी और बन्धु जनतंत्रों के हित में आपकी सवारी बना रहे, जिनमें हमें स्थानीय सत्ता पर ओर प्रशासनिक दृष्टि से प्रान्तीय इकाइयों पर ख़ास नज़र रखनी चाहिए...''

ख़्लेब्निकोव को सावीत्स्की से

''स्थायी कामरेड ख़्लेब्निकोव! जो चिट्ठी तुमने मेरे लिये लिखी, तो वह आम ध्येय के लिये बड़ी प्रशंसनीय है, खास तौर से तुम्हारी बेवकूफी के बाद जब तुमने अपनी चमड़ी से आँखें बन्द कर लीं, बोल्शेविकों की हमारी कम्युनिस्ट पार्टी से निकल गये। हमारी कम्युनिस्ट पार्टी, कामरेड ख़्लेब्निकोव, सेनानियों की लोहे की पाँत है जो सबसे आगे बढ़कर खून बहाते हैं और जब लोहे से खून निकलता है तो, कामरेड मेरे, यह मज़ाक नहीं बल्कि जीत या मौत का सवाल है। आम ध्येय के बारे में यही कहूँगा जिसकी सिद्धि की मैं बाट नहीं जोहता क्योंकि लड़ाइयाँ घमासान हो रही हैं और हर दो हफ़्तों में एक बार कमाण्डरों को बदलता हूँ। तीस दिन और रातों से अजेय प्रथम अश्वसेना को ओट देने के लिये चण्डावल में दुश्मनों की बन्दूकों, तोपों और एरोप्लेनों की आग की वर्षा में लड़ रहा हूँ। तारदी मारा गया, लुखमान्निकोव मारा गया, लीकोशेन्को मारा गया, गुलेवोई मारा गया, त्रुनोव मारा गया और सफ़ेद घोड़ा भी अब मेरे नीचे नहीं रहा, इसलिये, कामरेड ख़्लेब्निकोव, लड़ाई में भाग्य के पलटने के कारण प्यारे डिवीजन कमाण्डर सावीत्स्की से मिलने की बाट मत देखना, बल्कि अब तो सीधे परलोक में मिलेंगे, पर अफ़वाह तो यही है कि आसमान पर रहनेवाले बुड्ढे ने परलोक को बाकायदा रण्डीखाने में बदल दिया है, पर सूजाक के मरीज तो ज़मीन पर भी ढेरों हैं, इसलिये शायद हम न भी मिलें। अब कामरेड ख़्लेब्निकोव, विदा लेता हूँ।''

विधवा

एम्बुलेंस की टमटम पर रेजीमेण्ट कमाण्डर शेवेल्योव दम तोड़ रहा है। औरत उसके पैताने बैठी है। तोपखाने की चमक से कौंधती रात मरणासन्न के ऊपर लटकी हुई थी। डिवीजन कमाण्डर का कोचवान ल्योव्का देगची में खाना गर्म कर रहा था। ल्योव्का की लट अलाव के ऊपर लटकी थी, छंदे घोड़े झाड़ियों में चर रहे थे। ल्योव्का टहनी से देगची चलाते हुए एम्बुलेंस की टमटम पर चित्त लेटे शेवेल्योव को बता

रहा था :

"मैं काम करता था त्यूमरेक शहर में, कामरेड मेरे, घुड़सवारी का हुनर दिखाता था और पहलवानी भी करता था। शहर छोटा था, औरतों का मन बहलता नहीं था, मेमों की नज़र पड़ गयी मुझ पर, बस दिवानी हो गयीं मेरी... होटल में डिनर के न्योतों का ताँता लग गया, कहतीं मना मत कीजियेगा, आपको वक्त की बरबादी का पछतावा नहीं होगा... तो एक के साथ मैं होटल गया। दो प्लेट बछड़े का मांस मंगवाया और एक अद्धा भी मँगवाया। उस औरत के साथ बैठे पी रहे थे आराम से, चुपचाप. .. देखता क्या हूँ—एक मिस्टर मेरे पास आया, कपड़े ठीक-ठाक पहने था, साफ़-सुथरा था, पर उसका चेहरा-मोहरा कुछ जँचा नहीं मुझे और था भी वह नशे में...

'माफ कीजिये,' वह बोला, 'आप हैं किस जाति के?'

"मैं पूछता हूँ,' 'श्रीमान, आप क्यों मेरी जाति को छेड़ रहे हैं, खासकर जब एक औरत मेरे साथ है?'

"...और वह बोला :

"आप भी कैसे पहलवान हैं... फ्रेंच कुश्ती में ऐसों की चटनी बना दी जाती है। अपनी जाति मुझे बताइये...'

"...पर मैंने कुछ नहीं किया।

"'आप क्यों, मुझे आपका नाम-वाम नहीं पता, ऐसी गलतफहमी पैदा कर रहे हैं कि यहाँ अभी किसी को अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा, दूसरे शब्दों में आख़िरी साँस तक धूल चाटनी पड़ेगी? धूल चाटनी पड़ेगी...'" ल्योव्का ने पुलकित होकर यह बात दोहरायी और रात से अपने को प्रभामण्डल की तरह घेरते हुए उसने आकाश की ओर हाथ उठाये। बेचैन पवन, रात्रि की निर्मल पवन अपना गीत गाती मनों को आलोड़ित कर रही थी। अँधेरे में मँगनी के छल्लों की तरह तारे दमक रहे थे, वे टूटकर गिरते और ल्योव्का के विकीर्ण सिर के बालों में उलझकर बुझ जाते।

"ल्योव्का," अचानक शेवेल्योव नीले होंठों से फुसफुसाकर उससे बोला, "इधर आ। जो सोना है वह साश्का को," घायल बोला, "अँगूठियाँ, घोड़े का साज सब उसको मिले। जैसा बन बड़ा वैसे रहते थे साथ... इसका इनाम देता जा रहा हूँ। कपड़े-लत्ते और आत्मत्यागी वीरता के लिये पदक माँ के नाम छोड़ रहा हूँ। चिट्ठी के साथ तेरेक भिजवा देना और चिट्ठी में लिखना : 'कमाण्डर ने पाँव छूने को और न रोने को कहलवाया है। मकान तुझ बुढ़िया के नाम कर रहा हूँ, चैन से रहना। कोई परेशान करे तो सीधे बुद्योन्नी के पास जाकर कहना : "मैं शेवेल्योव की माँ हूँ..."' अपना घोड़ा अब्राम्का रेजीमेण्ट को दान कर रहा हूँ, घोड़े को अपनी आत्मा की शान्ति के लिये दान कर रहा हूँ..."

"घोड़े के बारे में समझ गया," ल्योव्का हाथ हिलाते हुए बुदबुदाया। "साश्का," वह औरत से चिल्लाकर बोला, "सुना तूने, क्या कह रहा है?.. इसके सामने कसम खा कि बुढ़िया को उसका हिस्सा देगी या नहीं?.."

"भाड़ में जाओ तुम दोनों," यह कहकर साश्का उठी और अन्धों की तरह ताबड़तोड़ झाड़ियों में घुस गयी।

"अनाथ को उसका हिस्सा देगी?" ल्योव्का ने उसका पीछा करके गला दबोचकर पूछा। "इसके सामने बोल..."

"दे दूँगी। अब छोड़ मुझे!"

और तब वचन लेकर ल्योव्का ने आग पर से देगची उतारी और दम तोड़ते के अकड़े मुँह में खाना उंड़ेलने लगा। बन्दगोभी का शोरबा शेवेल्योव के मुँह से बह रहा था, चम्मच उसके निर्जीव दाँतों से टकराकर बज रहा था और रात के घने अँधेरे में गोलियों की मनहूस सनसनाहट तेज होती जा रही थी।

"स्साले रायफलों से मार कर रहे हैं," ल्योव्का बोला।

"बेकार की बातें हैं," शेवेल्योव बोला। मशीनगनों से हमारा दाहिना बाजू तोड़ रहे हैं..."

और मेज पर लेटे मुर्दे की तरह शेवेल्योव अपने बड़े-बड़े मोम के जैसे बने कानों से लड़ाई का शोर सुनने लगा। उसके पास बैठा ल्योव्का हड़बड़ी में चपड़-चपड़ मांस चबा रहा था। मांस खाकर ल्योव्का ने होंठ चाटे और साश्का को खींचकर छोटे से खड्ड में ले गया।

"साश्का," वह काँपते हुए, डकारें लेता हाथ नचाता बोला, "साश्का, कसम से हम पापी ही पापी हैं... जीना एक बार होता है, मरना भी एक ही बार। पट जा साश्का, मान जा, चाहे तो खून से बदला चुका दूँगा... उसका जमाना तो बीत चुका पर भगवान के पास दिनों की कोई कमी थोड़े ही है..."

वे ऊँची घास पर बैठ गये। आलसी चाँद घटाओं के पीछे से रेंगता निकला और साश्का के उघड़े घुटने पर रुक गया।

"आग ताप रहे हो," शेवेल्योव बुदबुदाया, "और उसने, देखो, चौथी डिवीजन के पाँव उखाड़ दिये..."

ल्योव्का झाड़ियों में चटचट करता हाँफ रहा था। धुँधला चाँद भिखमंगे की तरह आकाश में भटक रहा था। दूरी पर होती गोलीबारी की आवाज़ हवा पर तैरती आ रही थी। आक्रान्त धरती पर घास सरसरा रही थी और अगस्त के तारे उसमें टूट-टूटकर गिर रहे थे।

फिर साश्का अपनी जगह पर लौट आयी। वह घायल की पट्टियाँ बदलने लगी और उसने सड़ते घाव पर टार्च से रोशनी डाली।

"कल चले जाओगे," ठण्डे पसीने से ढके शेवेल्योव का बदन पोंछते हुए साश्का बोली। "कल तक चले जाओगे, तुम्हारी अंतड़ियों में बैठी है वह, मौत तुम्हारी..."

और तभी समवेत गरज के साथ धरती पर धम्म से आघात हुआ। दुश्मन की

संयुक्त कमान द्वारा लड़ाई में झोंकी गयी चार ताजी ब्रिगेडों ने बूस्क पर पहला गोला छोड़ा और हमारे संचार मार्गों को काटते हुए बूग नदी के जलविभाजक को आग लगा दी। क्षितिज पर दावानल की तरह तोपखाने की आग फैल गयी, भारी-भरकम पक्षियों की तरह इस आग से गोले उड़ते। बूस्क धू-धू जल रहा था और ल्योव्का छठी डिवीजन के कमाण्डर की बग्घी पर जंगल में उड़ा जा रहा था। वह किरमिजी बागडोर को ताने था, बग्घी के रोगनदार पहिये पेड़ों के ठूँठों से टकरा रहे थे। शेवेल्योव की टमटम उसके पीछे-पीछे उड़ी आ रही थी, सावधान साश्का जोत से निकलने को आतुर घोड़ों को हाँक रही थी।

ऐसे ही वे वनांचल पर पहुँचे जहाँ मेडिकल केन्द्र स्थित था। ल्योव्का ने घोड़ों को खोला और इन्चार्ज के पास झूल माँगने चला गया। वह छकड़ों से पटे जंगल में जा रहा था। नर्सों की देहें छकड़ों के नीचे से बाहर निकली थीं, जवानो के भेड़ के खालों के ओवरकोटों पर उषा की सहमी-सहमी चमक पड़ रही थी। सोते लोगों के बूट इधर-उधर फैले थे, पुतलियाँ आकाश की ओर टिकी थीं, मुँहों के काले विवर तिरछे खुले थे।

इन्चार्ज के पास झूल मिल गयी। ल्योव्का शेवेल्योव के पास लौटा उसका माथा चूमा और सिर से लेकर पाँव तक उसे झूल से ढक दिया। तब साश्का टमटम के पास आयी। उसने अपनी ठोड़ी पर रूमाल गाँठ बाँधी और कपड़ों से पुआल झाड़ी।

''पावेल,'' वह बोली, ''मेरे मसीहा,'' और मृतक की बगल में उसे अपने गदराये बदन से ढाँपकर लेट गयी।

''ग़म में तड़प रही है,'' तब ल्योव्का बोला ''क्यों नहीं, बढ़िया ज़िन्दगी जीते थे। अब इसे फिर से सारी स्क्वाड्रन रौंदेगी। ख़तम हो गयी मीठी ज़िन्दगी...''

और वह बूस्क के लिये आगे चल पड़ा जहाँ छठी कैवेलरी डिवीजन का हेडक्वार्टर स्थित था।

वहाँ शहर से कोई दस मील की दूरी पर साविन्कोव के कज़्ज़ाकों के साथ लड़ाई हो रही थी। गद्दार पोलैण्डवालों के साथ जा मिले कज़्ज़ाक कप्तान याकोवलेव की कमान में लड़ रहे थे। वे शौर्य के साथ लड़ रहे थे। दो दिन से डिवीजन कमाण्डर सेना के बीच था और उसे हेडक्वार्टर में न पाकर ल्योव्का उस घर में लौटा जहाँ वह टिका था। उसने घोड़ों को साफ़ किया, बग्घी के पहिये धोये और भूसे की कोठरी में जाकर सो गया। कोठरी में ताजी, इत्र की तरह तीखी सुगन्धवाली घास भरी थी। नींद पूरी करके ल्योव्का उठा और खाना खाने बैठा। घर की मालकिन ने उसे ऊपर से दही डालकर उबले आलू परोसे। ल्योव्का मेज पर बैठ चुका था जब उसे सड़क पर बिगुलों का मातमी क्रन्दन और ढेरों सुमों की टाप सुनायी पड़ी। बिगुलचियों और ध्वजों के साथ स्क्वाड्रन टेढ़ी-मेढ़ी गलीसी सड़क पर चल रही थी। तोपगाड़ी पर रखा शेवेल्योव का शव झण्डे से ढका था। शव पेटिका के पीछे-पीछे साश्का शेवेल्योव के घोड़े पर बैठी चल रही थी, पिछली कतारों से कज़्ज़ाकों का गीत गूँज रहा था।

मुख्य सड़क से होकर स्क्वाड्रन नदी की ओर मुड़ गयी। तब ल्योव्का नंगे पाँव और टोपी के बिना ही जाते दस्ते के पीछे दौड़ पड़ा और जाकर उसने स्क्वाड्रन कमाण्डर के घोड़े की लगाम पकड़ ली।

न चौराहे पर रुका और मृत कमाण्डर को सलामी देता डिवीजन कमाण्डर और न ही उसके स्टाफ के अधिकारी यह सुन सके कि ल्योव्का ने स्कवाड्रन कमाण्डर से क्या कहा।

''कपड़े...'' हवा हमारे कानों तक अलग-अलग शब्द ही पहुँचा रही थी, ''तेरेक में माँ...'' हमें ल्योव्का की अण्ट-सण्ट चीख-चिल्लाहट सुनाई पड़ी। स्क्वाड्रन कमाण्डर ने उसकी बात पूरी सुने बिना अपनी लगाम छुड़ायी और साश्का की ओर हाथ से इशारा किया। औरत ने सिर हिलाया और आगे चल दी। तब ल्योव्का उछलकर उसकी जीन पर चढ़ गया, उसके बाल खींचकर सिर पीछे को झुकाया और साश्का के मुँह पर घूँसा मार दिया। साश्का ने लहंगे की किनारी से खून पोंछा और आगे चल दी। ल्योव्का उसके घोड़े से उतरा, अपनी लट को झटका दिया और कूल्हों पर लाल मफलर बाँधा। और मातमी क्रन्दन करते बिगुलची स्क्वाड्रन को आगे, बूग नदी की चमकती रेखा की ओर ले गये।

ल्योव्का शीघ्र ही हमारे पास लौटा और आँखों में चमक के साथ चिल्लाकर बोला : ''स्साली की चटनी बना दी... बोली जब ज़रूरी होगा भेज दूँगी। उसकी बात, वह बोली, मुझे याद है। अगर याद है तो बिच्छू की दुम, मत भूल... और अगर भूलेगी तो हम फिर याद दिला देंगे। दूसरी बार भूलेगी तो दूसरी बार याद दिला देंगे।''

जामोस्त्ये

जामोस्त्ये से कोई तीन मील की दूरी पर डिवीजन कमाण्डर और उसके स्टाफ के अधिकारी कटी घासवाले मैदान में लेटे थे। सेनाओं को शहर पर रात को हमला करना था। सेना के आदेश में माँग की गयी थी कि हम रात जामोस्त्ये में बितायें और डिवीजन कमाण्डर विजय की सूचना की प्रतीक्षा कर रहा था।

बारिश हो रही थी। पानी से ढकी ज़मीन के ऊपर हवा और अँधेरा तैर रहे थे। स्याही जैसी उमड़ती घटाओं ने तारों को बुझा दिया था। अंधकार में निढाल खड़े घोड़े उसाँसे ले रहे थे, टाँगें बदल रहे थे। उन्हें देने को कुछ न था। मैंने घोड़े की लगाम अपने पैर से बाँधी और बरसाती में लिपटकर पानी से भरे गड्ढे में लेट गया। गीली मिट्टी ने मुझे अपनी, क़ब्र जैसी शान्तिदायक बाँहों की शरण में ले लिया। घोड़े ने लगाम खींची और मेरी टाँग घसीटता चल पड़ा उसे घास का गुच्छा मिला और वह उसे नोचने लगा। तब मुझे नींद आ गयी और मुझे सपने में घास की कोठरी दिखायी दी। कोठरी के ऊपर अनाज की कुटाई की सुनहरी धूलि छायी हुई थी। आकाश में

गेहूँ की सुनहरी पूलियाँ उड़ रही थीं, जुलाई का दिन शाम में बदल रहा था, गाँव के ऊपर सूर्यास्त की लालिमा बरस रही थी।

मैं अपनी शान्त शय्या पर पसरा पड़ा था और गुद्दी पर घास की गुदगुदी से मैं मदहोश हो रहा था। फिर सीटी की सी आवाज़ के साथ कोठरी के कपाट खुले। नाच की पार्टी के लिये सजीले कपड़े पहने एक महिला मेरे पास आयी। उसने अपनी चोली की काली लेसों में से अपना स्तन निकाला और उसे उसी तरह सावधानी से मेरे पास लायी जैसे धाय बच्चे को दूध पिलाती है। उसने अपना स्तन मेरी छाती से लगाया। क्लान्त उष्मा ने मेरे अंग-प्रत्यंग को झकझोर दिया और हमारी चूचियों के बीच पसीने की, सजीव, चलायमान पसीने की बूँदें खौलने लगीं।

"मार्गो," मैं चिल्लाना चाहता था, "धरती अपनी विपदाओं की रस्सी से बाँधकर मुझे अड़ते कुत्ते की तरह घसीटे ले जा रही है पर फिर भी मैंने आपको देख ही लिया, मार्गो..."

मैं चिल्लाकर यह कहना चाहता था पर अचानक ठण्ड से अकड़ा मेरा जबड़ा खुल ही नहीं रहा था।

तब वह महिला मेरे पास से हटकर घुटनों पर गिर गयी।

"हे प्रभु यीशु," वह बोली, "अपने दिवंगत दास की आत्मा को शान्ति दो..."

उसने मेरी आँखों को दो घिसे सिक्कों से ढँक दिया और मुँह में सुगन्धित घास ठूँस थी। मेरे अकड़े जबड़े के बाहर निकलने का निष्फल प्रयास करता चीत्कार भटक रहा था, ताँबे के सिक्कों से ढकी मेरी बुझती पुतलियाँ घूमीं, मैं अपने हाथों की उँगलियों को खोल न पाया और... मेरी आँख खुल गयी।

मेरे सामने मुसी दाढ़ीवाला एक देहाती लेटा था। वह हाथ में बन्दूक थामे था। घोड़े की पीठ काली बल्ली की तरह आसमान की पृष्ठभूमि में दिखायी दे रही थी। ऊपर उठी मेरी टाँग पर लगाम का फन्दा कसा हुआ था।

"नींद आ गयी थी, यार," देहाती बोला और उसकी काली अनिद्रापूर्ण आँखें मुस्कायी, "घोड़ा तुझे कोई आधा मील घसीटता लाया..."

मैंने टाँग से लगाम का फन्दा उतारा और खड़ा हो गया। काँटों से छिले चेहरे से खून रिस रहा था।

वहीं, दो कदम की दूरी पर अग्रिम पाँत तैनात थी। मुझे जामोस्त्ये की चिमनियाँ, उसके यहूदी मुहल्ले की तंग गलियों में लुकी-छिपी बत्तियाँ और फूटी सर्चलाइटवाला बुर्ज दिखायी दे रहे थे। नम सुबह क्लोरोफार्म की वाष्प की तरह हमें घेर रही थी। पोलिश शिविर के ऊपर हरे भभूके छूट रहे थे। वे हवा में फड़फड़ाते, चाँदनी में गुलाबों की तरह छितराते और बुझ जाते।

और निस्तब्धता में मुझे कहीं दूर से आती हाहाकार की हल्की सी भनक सुनाई पड़ी। हमारे इर्द-गिर्द गुप्त हत्याकाण्ड का धुआँ भटक रहा था।

"किसी को मार रहे हैं," मैं बोला। "यह किसको मार रहे हैं?"

"पोलैण्डवाले बेचैनी मचाये हुए हैं," देहाती ने मुझे उत्तर दिया, "पोलैण्डवाला यहूदियों की मारकाट कर रहा है..."

देहाती ने बन्दूक को दायें हाथ से ले बायें हाथ में थाम लिया। उसकी दाढ़ी मुड़कर बगल में आ गयी, उसने मेरी ओर स्नेह के साथ देखकर कहा :

"अगली पाँत में लेटे-लेटे रात बड़ी लम्बी लगती है, लगता है कि रात कभी खत्म ही न होगी। तब आदमी का जी किसी के साथ दो बात करने को चाहता है पर दूसरे आदमी को लाये कहाँ से?.."

देहाती ने मुझे उसकी माचिस से ही सिगरेट सुलगाने को विवश किया।

"यहूदिया हर तरह से कुसूरवार है," वह बोला, "वह किसी का नहीं होता, तेरी भी करेगा, मेरी भी। लड़ाई के बाद वे बहुत थोड़े रह जायेंगे। दुनिया में कितने यहूदिये हैं?"

"कई करोड़ हैं," मैंने उत्तर दिया और घोड़े की लगाम कसने लगा।

"दो लाख बचेंगे," देहाती चिहुँककर बोला और उसने मेरा हाथ छुआ इस डरसे कि मैं चला न जाऊँ। पर मैं घोड़े पर सवार होकर उस ओर चल दिया जहाँ हेडक्वार्टर था।

डिवीजन कमाण्डर जाने की तैयारी कर रहा था। अर्दली उसके सामने तनकर खड़े थे, वे खड़े-खड़े ही सो रहे थे। स्क्वाड्रनें घोड़ों से उतरकर गीले टीलों पर रेंग रही थी।

"पिट गया हमारा पत्ता," डिवीजन कमाण्डर फुसफुसाकर बोला और वहाँ से रवाना हो गया।

सीतानेत्स जानेवाली सड़क पर हम उसके पीछे-पीछे चल रहे थे।

फिर से बारिश होने लगी। मरे चूहे रास्तों पर बह रहे थे। पतझड़ ने घात लगाकर हमारे दिलों को घेर लिया और पाँवों पर खड़ी नंगी लाशों की तरह चौराहों पर पेड़ डोल रहे थे।

सीतानेत्स हम सुबह पहुँचे। मैं हेडक्वार्टर के क्वार्टर-मास्टर वोल्कोव के साथ था। उसने गाँव के आँचल पर हम दोनों के लिये घर ढूँढ लिया।

"शराब," मैंने मालकिन से कहा, "शराब, गोश्त और रोटी लाओ!"

बुढ़िया फ़र्श पर बैठी अपने हाथ से पलंग के नीचे छिपी बछिया के खिला रही थी।

"कुछ भी नहीं है," वह लापरवाही के साथ बोली। "और वह ज़माना भी याद नहीं जब घर में यह सब होता था..."

मैं मेज पर बैठा, रिवाल्वर उतारी और सो गया। कोई पन्द्रह मिनट बाद मैंने आँखें खोलीं और मुझे खिड़की के दासे पर झुका वोल्कोव दिखायी पड़ा। वह अपनी मंगेतर

को चिट्ठी लिख रहा था।

"परमपूज्य वाल्या," वह लिख रहा था, "क्या आपको मेरी याद है?"

मैंने पहली पंक्ति पढ़ी, फिर जेब से माचिस निकाली और फ़र्श पर पड़े पुआल के ढेर को आग लगा दी। दियासलाई की क़ैद से मुक्त लपट चमककर मेरी ओर लपकी। बुढ़िया ने छाती के बल लेटकर उसे बुझा दिया।

"तुम कर क्या रहे हो, जनाब?" बुढ़िया बोली और डरकर पीछे हट गयी।

वोल्कोव ने मुड़कर मालकिन पर भावशून्य दृष्टि डाली और फिर से चिट्ठी लिखने लगा।

"मैं तेरे घर में आग लगा दूँगा, बुढ़िया," नींद में डूबते हुए मैं बुदबुदाया, "तुझे भी और चोरी की बछिया को भी जला दूँगा।"

"ठहरो!" मालकिन ज़ोर से बोली। वह गलियारे में दौड़ी-दौड़ी गयी और दूध की हण्डिया और रोटी लेकर लौटी।

हम आधा भी न खा पाये थे कि बाहर गोलियों की धाँय-धाँय होने लगी। ढेरों गोलियाँ चल रही थीं। बड़ी देर से तक ठाँय-ठाँय हो रही थी और हमें उससे ऊब हो रही थी। हमने दूध खत्म किया और वोल्कोव यह पता करने बाहर गया कि बात क्या है।

"मैंने तुम्हारे घोड़े की जीन कस दी है," उसने खिड़की से मुझे बताया, "मेरेवाले को तो ऐसा छलनी किया है कि पूछो मत। सौ क़दम की दूरी पर पोलैण्डवाले मशीनगनें लगा रहे हैं।"

और हम दो जनों के लिये एक घोड़ा रह गया। वह बड़ी मुश्किल से हमें सीतानेत्स से निकालकर ले गया। मैं ज़ीन पर बैठा था और वोल्कोव पीछे बैठ गया।

काफिलों में भगदड़ और कोहराम मच गया, छकड़े कीचड़ में डूबने लगे। सुबह की हमारी बेहोशी ऐसे ग़ायब हुई जैसे आपरेशन के बाद क्लोरोफार्म की।

"ल्यूतोव, तुम शादीशुदा हो?" पीछे बैठे वोल्कोव ने अचानक पूछा।

"मेरी बीवी मुझे छोड़कर चली गयी," मैंने उत्तर दिया और कुछ क्षणों के लिये मुझे नींद आ गयी। मुझे सपना आया कि मैं पलंग पर सो रहा हूँ।

सन्नाटा।

घोड़ा हमारा लड़खड़ा रहा था।

"दो मील बाद घोड़ा गिर पड़ेगा," पीछे बैठा वोल्कोव बोला।

"सन्नाटा।

"हम यह अभियान हार गये," यह बुदबुदाकर वोल्कोव खर्राटे लेने लगा।

"हाँ," मैं बोला।

विश्वासघात

"कामरेड जाँचकर्त्ता बुर्देन्का। आपके सवाल के जवाब में सूचित करता हूँ कि मेरी पार्टी नम्बर चौबीस शून्य शून्य है जो निकीता बालमाशेव को क्रास्नोदार की पार्टी समिति ने दिया है। 1914 तक की मेरी जीवनी घरेलू है जिसमें मैं माँ-बाप के साथ किसानी करता था और किसानी से मैं साम्राज्यवादियों की कतारों में आ गया नागरिक पुआंकरे* और जर्मन क्रान्ति को खून में डुबोनेवाले जल्लाद एबर्ट-नोस्के** की रक्षा करने के लिये जो दिन-रात यही सपना देखते थे कि कुबान प्रदेश के मेरे जन्म गाँव इवान स्यातोई की कैसे मदद करें। बस इसी तरह यह रस्सी बटती गयी तब तक, जब तक कामरेड लेनिन ने मेरी खूँख्वार संगीन को न मोड़ा और उसे वे अंतड़ियाँ और वह आरामदेह तोंद न दिखायी जो खास तौर से मेरी संगीन के लिये ही है। तब से अपनी आँखोंवाली संगीन के सिरे पर चौबीस शून्य शून्य नम्बर लगाकर मैं घूमता हूँ अ ौर अब, कामरेड जाँचकर्त्ता बुर्देन्को, आपसे अमुक अज्ञात अस्पताल के बारे में ये कोरी गप्प सुनकर मुझे काफ़ी शर्म और बेहद हँसी आती है। इस अमुक अस्पताल पर मैंने गोली नहीं चलायी और न ही हमला किया, यह हो भी नहीं सकता था। घायल होने के कारण हम तीनों यानी—जवान गोलोवील्सीन, जवान कुस्तोव औ मैं हड्डियों में दर्द की वजह से हमला नहीं कर रहे थे, हम तो बस अस्पताल के लबादे पहने, चौक पर यहूदी जाति की सिविलियन आबादी के बीच खड़े रो ही रहे थे। और जहाँ तक तीन टूटे शीशों का सम्बन्ध है जिन्हें अपनी अफ़सरोंवाली पिस्तौल से हमने नुकसान पहुँचाया तो मैं अपने तहे दिल से कहता हूँ कि शीशे ठीक जगह नहीं लगे थे चूँकि वे स्टोर में लगे थे जहाँ उनका क्या काम। और डाक्टर यावैन हमारी इस असहाय गोलीबारी को अस्पताल की खिड़की से देखता बस तरह-तरह की मुस्कराहटों से हमारी हँसी उड़ा रहा था, कोजिन कस्बे के उपरोक्त सिविलियन यहूदी इसकी गवाही दे सकते हैं। कामरेड जाँचकर्ता, डाक्टर यावैन के बारे में मैं आपको कुछ और ज़रूरी सूचना दे रहा हूँ, वह यह कि जब हम तीन घायल यानी : जवान गोलीवील्सीन, जवान कुस्तोव और मैं पहली बार इलाज के लिए भरती हो रहे थे वह हमारी हँसी उड़ा रहा था और छूटते ही बेहद रुखाई के साथ बोला : आप घायलों, हरेक टब में नहाओ, अपने हथियार और अपने कपड़े फौरन उतार डालो, मुझे उनसे जरासीम फैलने का डर है, इन्हें मैं स्टोर में भेजकर रहूँगा... और तब अपने सामने इन्सान नहीं, हैवान को देखकर जवान कुस्तोव ने अपनी टूटी टाँग आगे बढ़ायी और अपनी बात प्रकट की कि उसमें मतबल, कुबान की पैनी तलवार में

* रायमोन पुआंकरे—1913-1920 में फ्रांस का राष्ट्रपति।

** फ्रीडरिख़ एबर्ट—1919 में जर्मनी का राष्ट्रपति।

गुस्टाव नोस्के—जर्मनी में श्वेत आतक का आयोजक, देश का युद्ध मंत्री।

कैसे जरासीम हो सकते हैं, हमारी क्रान्ति के दुश्मन के सिवा वे किसी को नहीं लगेंगे और उसने यह जानने का भी कौतुक दिखाया कि स्टोर का पहरा क्या सचमुच पार्टी का जवान देता है या उल्टे, ढेरों गैरपार्टियों में से कोई एक। बस तभी, लगे तो ऐसा है, डाक्टर यावैन ने देख लिया कि हम विश्वासघात को अच्छी तरह समझ सकते हैं। उसने पीठ मोड़ ली और कुछ कहे बिना उसने हमें वार्ड में भेज दिया, और अब की बार भी तरह-तरह की मुस्कराहटों के साथ, हम भी उधर चल दिये अपनी टूटी टाँगों को घसीटते हुए, लूले हाथों को हिलाते हुए और एक दूसरे का सहारा लेते हुए क्योंकि हम तीनों एक ही गाँव इवान स्यातोई के हैं मतबल : कामरेड गोलोवीत्सीन, कामरेड कुस्तोव और मैं, हम एक ही गाँव के हैं और हमारा भाग्य भी एक है और जिसकी टाँग नहीं वह साथी का हाथ पकड़ता है और जिसका हाथ नदारद है वह साथी के कन्धे का सहारा लेता है। मिले आदेश के अनुसार हम वार्ड की ओर चल दिये जहाँ हम सांस्कृतिक कार्य और ध्येय में आस्था को देखने की आशा करते थे पर पता है हमने आखिर क्या देखा वार्ड में प्रवेश करके? हमने लाल सैनिकों को देखा, सिर्फ़ इंफेंट्री वाले थे, बिस्तरों पर बैठे वे ड्राफ्ट का खेल खेल रहे थे और वहीं लम्बे कद की, गदराये बदनोंवाली नर्सें खिड़कियों के पास खड़ी उनसे दीदे लड़ा रही थीं। यह देख हम ऐसे खड़े हो गये जैसे हम पर पराजय की बिजली गिरी हो।

"'हो गयी तुम्हारी लड़ाई खत्म, यारो?' मैंने घायलों से पूछा।

"'हमारे लिये हो गयी खत्म,' घायलों ने जवाब दिया और रोटी के टुकड़ों से बनी गोटियाँ चलने लगे।

"'बड़ी जल्दी,' मैं घायलों से बोला, 'बड़ी जल्दी तुम प्यादों ने लड़ाई खत्म कर दी, जब कस्बे से पन्द्रह मील की दूरी पर दुश्मन दबे पाँव चल रहा है और जब 'लाल अश्वारोही' अखबार में हमारी अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति के बारे में पढ़ा जा सकता है कि यह तो कितनी खतरनाक है और खितिज पर ढेरों घटाएँ छायी हैं।' पर मेरी बातों का उन पर वही असर हुआ जो बकरी की मेंगनी का रेजीमेण्ट के ढोल पर होता है। और हुआ यह कि रहमदिल नर्सें हमें खाटों के पास ले गयीं और फिर हमसे हथियार सौंप देने की बीन बजाने लगीं मानो हम हारे हुए क़ैदी हों। इसकी वजह से उन्होंने कुस्तोव को इतना परेशान कर दिया कि कहना मुश्किल है, उसने अपने घाव की पट्टियाँ खोलनी शुरू कर दीं जो उसके बायें कन्धे पर योद्धा और सर्वहारा के खून से रिसते दिल के ऊपर था। यह हाल देखकर नर्सें चुप हो गयीं, पर शान्त हुईं वे बहुत थोड़ी देर के लिये और बाद में फिर से गैरपार्टी जनता की अपनी खिल्ली चालू कर दी और सोते वक्त हमारे कपड़े उतारने के इच्छुकों को भेजनी लगीं या सांस्कृतिक कार्य के लिये औरत की पोशाक में नाटक का रोल अदा करने के लिये मनाने लगीं जो कि हमें शोभा नहीं देता।

"बेरहमदिल नर्सें... हमारे कपड़े-लत्तों की खातिर उन्होंने एक नहीं कई बार नींद

की दवा देने की कोशिश की, और हम बारी-बारी से आराम करते-करते एक आँख खोलकर सोते और जंगल पानी को भी पूरी वर्दी में पिस्तौलें लटकाकर जाते चाहे छोटा काम ही करना हो। और इस तरह एक हफ़्ता एक दिन कष्ट झेलकर, हम बेसुधी में बड़बड़ाने लगे, हमें तरह-तरह के बुरे सपने सताने लगे और 4 अगस्त की मुलजिम सुबह को जागकर हमने यह परिवर्तन पाया कि हम काले पानी की सजायाफ्ताओं की तरह नम्बरोंवाले लबादों में बिना हथियारों के और हमारी माताओं, कुबान की कमताकत बुढ़ियों द्वारा बुने कपड़ों के बिना पड़े हैं... और देखते हैं कि सूरज भी खूब चमक रहा है, पर ज़मीन पर रेंगने वाले प्यादे, जिनके बीच तीन लाल घुड़सवार दर-दर की ठोकरें खा रहे थे, हमारी खिल्ली उड़ा रहे थे और साथ ही वे बेरहमदिल नर्सें भी थीं जिन्होंने रात को हमें नींद की गोली खिला दी, अब वे अपनी जवान चूचियों को हिलाती हमारे लिये प्लेटों में रखकर कोको ला रही थीं और इस कोको में बस दूध ही दूध था! इस हँसी-मजाक के दौरे में इन्फेंटरीवाले अपनी बैसाखियाँ ज़ोर-ज़ोर से पटक-पटककर आसमान सिर पर उठा रहे थे और हमारी बगलें ऐसे नोच रहे थे मानो हम बिकाऊ लौण्डियाँ हों और यह इशारा कर रहे थे कि बुद्योन्नी की पहली अश्वसेना भी अपनी लड़ाई लड़ चुकी। नहीं-नहीं, सुन्दर-सलोने कामरेडों, बड़ी-बड़ी तोंदें पालनेवालो और रातों को ऐसी धाँय-धाँय करनेवालों मानों मशीनगनें चल रही हों : उसकी लड़ाई खत्म नहीं हुई, बस हम तो यह कहकर मानो शंका दूर करने के लिये बाहर जा रहे हैं, तीनों के तीनों अहाते में निकले और अहाते से ऐसे दौड़े कि सीधे नागरिक बोइदेरमान के सामने हाजिर हो गये जो जिला क्रान्तिकारी समिति का अध्यक्ष है और जिसके बिना, कामरेड बुर्देन्को, यह गोलीबारी की गलतफहमी, सम्भव बात है, हुई ही न होती, मतलब उस जिला क्रान्तिकारी समिति के अध्यक्ष के बिना जिससे हम बिल्कुल हक्के-बक्के रह गये। और हालाँकि हम नागरिक बोइदेरमान के ख़िलाफ़ कोई पक्की जानकारी नहीं दे सकते आपको, पर जिला क्रान्तिकारी समिति के अध्यक्ष के कमरे में घुसकर ही हमने अधेड़ उम्र के, भेड़ की खाल का कोट पहने यहूदी जाति के नागरिक पर गौर किया जो मेज कुर्सी पर बैठा था, मेज पर उसकी, क़ागज़ों का इतना ढेर लगा था कि देखकर मतली आ रही थी... नागरिक बोइदेरमान अपनी आँखें कभी इधर करता तो कभी उधर, साफ़ था कि वह इन क़ागज़ों को खाक समझ रहा था, इन क़ागज़ों से उसका सिर चकरा रहा था, ऊपर से अनजान पर नामी जवान नागरिक बोइदेरमान की छाती पर चढ़कर राशन माँग रहे थे, बीच-बीच में स्थानीय कर्मचारी उसे आसपास के गाँवों में प्रतिक्रान्तिकारियों का ध्यान दिला रहे थे, वहीं केन्द्र के साधारण कर्मचारी भी आ धमके जो ज़िला समिति में झटपट और बिना किसी टालमटोल के शादी रजिस्टर करना चाहते थे... इसी तरह हमने भी ऊँची आवाज़ में अस्पताल में विश्वासघात की वारदात बखान कर दी, पर नागरिक बोइदेरमान बस हमें आँखें फाड़कर देखने लगा

और फिर से वह उन्हें कभी इधर डालता तो कभी उधर ओर हमारे कन्धे थपथपाने लगा, यह कोई सत्ता हुई? यह सत्ता के प्रतिनिधि को शोभा नहीं देता, वह कोई फैसला नहीं कर रहा था, बस यही कह रहा था : कामरेड जवानों, अगर आपको सोवियत सत्ता पर रहम आता है तो यह कमरा खाली कर दीजिए, जिसके लिए यानी कमरा खाली करने के लिए हम राज़ी नहीं हो सकते थे और हमने उससे उसके हुलिये का पहचान-पत्र माँगा जिसे न पाकर हम बेहोश हो गये। और बेहोशी ही हालत में चौक पर निकले, अस्पताल के सामनेवाले पर, जहाँ हमने एक घुड़सवार की संख्या में पुलिस का निहत्था किया और आँखों में आँसुओं के साथ उपरोक्त स्टोर के तीन अवांछनीय शीशों को भंग कर दिया। इस आवंछित तथ्य के वक्त डाक्टर यावैन तरह-तरह क मुँह बना रहा था ओर हँसी उड़ा रहा था और वह भी उस क्षण जब चार दिन बाद कामरेड कुस्तोव को अपनी बीमारी से मरना था!

"अपनी छोटी-सी लाल ज़िन्दगी में कामरेड कुस्तोव विश्वासघात के अपार चिंतित होता था, जो वह देखो, खिड़की से हमें आँख मार रहा है, जो अनगढ़ सर्वहारा की हँसी उड़ा रहा है, पर कामरेडो, सर्वहारा खुद जानता है कि वह अनगढ़ है, हमें इससे पीड़ा होती है, आत्मा जलती है और अपनी आग से काया की जेल को तोड़ती है...

"विश्वासघात, मैं आपसे कहता हूँ, कामरेड बुर्देन्को, खिड़की के अन्दर झाँककर हँस रहा हे, विश्वासघात नंगे पाँव हमारे घर में घूम रहा है, विश्वासघात ने अपनी चप्पलें उतारकर कन्धे पर डाल जी हैं ताकि उस घर के फ़र्श पर आहट न हो जिसमें यह चोरी कर रहा है..."

चेस्निकी

छठी डिवीजन चेस्निकी के पासवाले जंगल में जमा थी और धावा बोलने के संकेत की प्रतीक्षा कर रही थीं पर छठी डिवीजन का कमाण्डर पावलीचेन्को दूसरी ब्रिगेड का इंतज़ार कर रहा था और संकेत नहीं दे रहा था। तब वोरोशीलोव डिवीजन कमाण्डर के पास आये। उन्होंने अपने घोड़े की थूथनी से कमाण्डर की छाती को धकेला और बोले :

"टाल-मटोलकर रहे हो, डिवीजन कमाण्डर, टालमटोल कर रहे हो।"

"आपके आदेश के अनुसार," पावलीचेन्को ने अस्फुट स्वर में कहा, "दूसरी ब्रिगेड घोड़ों को सरपट दौड़ाती घटना-स्थल पर आ रही है।"

"टालमटोल कर रहे हो, डिवीजर कमाण्डर टालमटोल कर रहे हो।" वोरोशीलोव बोले और झटके से उन्होंने अपनी छाती पर कसी पेटियों को खींचा।

पावलीचेन्को एक कदम पीछे हट गया।

"ईमान की ख़ातिर," वह चिल्लाया और अपनी नम उँगलियाँ चटकाने लगा, "ईमान

की ख़ातिर मुझे जल्दबाज़ी के लिए मजबूर न करें, कामरेड बोरोशीलोव..."

"जल्दबाज़ी न करें," क्रान्तिकारी सैन्य-परिषद के सदस्य क्लीम वोरोशीलोव बुदबुदाये। वह घोड़े पर बैठे थे, आँखें उनकी मुँदी थीं, वह चुपचाप होंठ हिला रहे थे। छाल के जूते और सिर पर हैट लगाये एक कज़्ज़ाक उन्हें असमंजस के साथ ताक रहा था। अपने घोड़ो को दौड़ाती स्क्वाड्रनें जंगल में हवा की तरह शोर करती, टहनियाँ तोड़ती आ रही थीं। वोरोशीलोव रिवाल्वर की नाल सेअपने घोड़े की अयाल सँवार रहे थे।

"आर्मी कमाण्डर," बुद्योन्नी की ओर मुड़कर वह चिल्लाये, "फ़ौज को हमले से पहले कुछ कहो। वह देखो, टीले पर पोलैण्डवाला खड़ा है, मूरत की तरह खड़ा है और तुम्हारी खिल्ली उड़ा रहा है..."

पोलैण्डवाले सचमुच दूरबीन से दिखायी दे रहे थे। आर्मी के स्टाफ़ अधिकारी घोड़ों परसवार हो गये और कज़्ज़ाक चारों ओर से आकर उनके पास जमा होने लगे।

इवान अकीन्फ़ीयेव, क्रान्तिकारी कार्ट मार्शल का भूतपूर्व गाड़ीवान, अपनी रकाब से मुझे धकेलते हुए मेरे पास से गुज़रा।

"इवान, तू क्या लड़ाका फ़ौज में है?" मैं बोला। "तेरी तो पसलियां ही नहीं हैं..."

"थूक दिया मैंने इस पसलियों पर..."घोड़े पर आड़े बैठे अकीन्फ़ीयेव ने उत्तर दिया। "सुनने दे, आदमी क्या कह रहा है।"

वह आगे चला गया और बुद्योन्नी से सट गया। वह सिहरकर धीरे से बोले:

"जवानों," बुद्योन्नी बोले, "हमारा हालत पतली है, जोश दिखाओ, जवानो..."

"वार्सा लेकर रहेंगे!" छाल के जूते पहने और सिर पर हैट लगाये कज़्ज़ाक चिल्लाया और आँखें फाड़कर उसने हवा में तलवार घुमायी।

"वार्सा लेकर रहेंगे!" वोरोशीलोव चिल्लाये और घोड़े को सीखपा करके झट से स्क्वाड्रनों के बीच पहुँच गये।

"जवानो और कमाण्डरो!" वह आवेग में बोले। "मास्कों में, हमारी प्राचीन राजधानी में अब तक अनदेखी सत्ता संघर्ष कर रही है। दुनिया में पहली, मज़दूरों और किसानों की सरकार, जवानों और कमाण्डरों, आपको दुश्मन पर टूट पड़ने और विजय पाने का आदेश देती है।"

"तलवारें निकाल..."आर्मी कमाण्डर के पीछे से पावलीचेन्को की गाती-सी आवाज़ गूँजी। वह कहीं दूर से आती लगी, उसके किरमिजी मुड़े होंठो पर झाग चमक रहा था। डिवीजन कमाण्डर की लाल जैकेट फटी थी, उसका मांसल चेहरा विकृत था। अपनी नामी-गिरामी तलवार से उसने वोराशीलोव को सलामी दी।

"क्रान्तिकारी शपथ के अनुसार," छठी डिवीजन का कमाण्डर भर्राये स्वर में, इधर-उधर नज़रें दौड़ाते हुए बोला, "मैं पहली अश्वारोही सेना की क्रान्तिकारी सैन्य-परिषद को रिपोर्ट देता हूँ : दूसरी अजेय ब्रिगेड घोड़ो को सरपट दौड़ाती घटना-स्थल पर

पहुँच रही है।"

"ठीक है, करो काम," वोरोशीलोव ने हाथ हिलाकर उत्तर दिया। उन्होंने लगाम खींची, बुद्योन्नी भी उनके साथ-साथ चल दिये। वे लम्बी-लम्बी ललछौंही घोड़ियों पर बैठे साथ-साथ जा रहे थे, वे एक जैसे फौजी कोट और रुपहली गोटोंवाली चमकती पतलूने पहने थे। जवान जयजयकार करते उनके पीछे-पीछे चल रहे थे, पीब जैसी शरत्कालीन धूप में फ़ौलाद झिलमिला रहा था। पर कज़्ज़ाकों का जयजयकार मुझे समवेत नहीं लगा और धावे की प्रतीक्षा में मैं जंगल में उसकी गहराई में, केन्टीन के पड़ाव में चला गया।

वहाँ घायल लाल सैनिक बेहोशी में पड़ा बड़बड़ा रहा था और झगड़ालू कज़्ज़ाक लड़का स्त्योप्का दुप्लीश्चेव ब्रुश से रोस्तोव की नामी घोड़ी की सन्तान, डिवीज़न कमाण्डर के नसली घोड़े तूफ़ान की सफ़ाई कर रहा था। घायल जल्दी-जल्दी शूया शहर के बारे में, सन की ओटाई के बारे में कुछ बड़बड़ा रहा था ओर दुप्लीश्चेव उसकी करुण बड़बड़ को दबाते हुए जनरल की मोटी बीवी और अर्दली के बारे में ज़ोर-ज़ोर से गीत गाता, ब्रुश चलाता, घोड़े को सहला रहा था। पर साश्का ने, फूल कर सूजी साश्का ने, सभी स्क्वाड्रनों की रानी साश्का ने उसके इस काम में विघ्न डाल दिया। वह अपनी घोड़ी पर सवार लड़के के पास आयी और कूदकर ज़मीन पर उतरी।

"मिला दें जोड़ी, क्यों?" साश्का बोली।

"नाप रास्ता," दुप्लीश्चेव ने उत्तर दिया और उसकी ओर पीठ मोड़कर तूफ़ान की अयाल में फीते गुँधने लगा।

"तू अपनी बात का मालिक है या," साश्का बोली, "थाली का बैंगन है?"

"नाप अपना रास्ता," स्त्योप्का ने उत्तर दिया, "अपनी बात का मैं मालिक हूँ।"

उसने आयाल में सारे फीते गुँथे और अचानक ज़ोर से चिल्लाकर मुझसे बोला : "देखो, किरील वसीलयेविच, तनिक ध्यान तो दो कि यह मुझे कितना सता रही है। महीने भर से इसने मेरी नाक में दम कर रखा हैं जिधर जाऊँ यह मुझसे पहले वहाँ होती है, मेरी राह का रोड़ा बन गयी : बस इसकी घोड़ी छोड़ने की बात रटती रहती है। मैं कैसे यह करूँ जब डिवीजन कमाण्डर राज़ मुझे हिदायत देते हैं : 'स्त्योप्का, ऐसे घोड़े को देखकर बहुतरे आयेंगे पर चार साल पूरे होने तक हरगिज़ मत छोड़ियो...'"

"खुद तो पन्द्रह साल भी पूरे न हुए कि छूटे चले आते हो," साश्का ने बड़बड़ाकर मुँह फेर लिया। "पन्द्रह की उम्र में और मैं चुपचाप सह लेती हूँ..."

उसने अपनी घोड़ी के पास जाकर कसन कसी और जाने की तैयारी की।

उसकी जूतियों में लगी महमज़ें खड़खड़ कर रही थीं डिज़ाइनदार जुर्राबें कीचड़ के छींटो और सूखी घास से ढकी थी, उसकी भयंकर छातियाँ उछलकर पीछे पर गिरने को उतावली थीं।

"रूबल तो मैं ले आयी," साश्का बिना किसी की ओर मुँह किये बोली और महमेज वाली अपनी जूती रकाब में टिकायी। "लायी तो थी पर अब वापस ले जाना पड़ रहा है।"

औरत ने पचास-पचास कोपेक के दो चमचमाते सिक्के निकाले, उन्हे हथेली पर रखकर निहारा और फिर से चोली में छिपा लिया।

"मिला दें जोड़ी, क्यों" तब दुप्लीश्चेव चाँदी के सिक्कों पर नज़रें गड़ाकर बोला और घोड़े का ले चला।

साश्का ने जंगल में साफ़ जगह पर ढलानवाला स्थान चुना और घोड़ी को खड़ा कर दिया।

"तू क्या अकेला साँड को लिये घूमता है," वह स्त्योप्का से बोली और तूफ़ान का अपनी घोड़ी पर चढ़ाने लगी, "मेरी घोड़ी को मोर्चे से फुर्सत कहाँ थी, दो साल से नहीं ब्याही, सोचा अच्छी नसल का कोई साँड़ मिल जाये..."

साश्का ने साँड़ को चढ़ा दिया, बाद में अपनी घोड़ी को हटाकर ले गयी।

"क्यों छोरी, भर गया पेट," वह फुसफुसाकर बोली और उसने अपनी घोड़ी के नम, लाल अबलक होंठों को चूमा जिन पर लार की डोरें लटकी थीं, घोड़ी की थूथनी से उसने अपना चेहरा रगड़ा और जंगल में मचते शोर को कान लगाकर सुनने लगी।

"दूसरी ब्रिगेड दौड़ रही है," साश्का गम्भीरता के साथ बोली और मेरी ओर मुड़कर उसने कहा, "चलना चाहिये ल्यूतोव.."

"दौड़ रही है या नहीं दौड़ रही," दुप्लीश्चेव चिल्लाया, उसका गला रुँध गया, "साली, पैसा निकाल..."

"मैं खुद अशरफी हूँ," साश्का बुदबुदायी और उछलकर घोड़ी पर सवार हो गयी।

मैंने भी उसके पीछे अपना घोड़ा दौड़ा दिया, हमारे घोड़े सरपट दौड़ने लगे। पीछे से दुप्लीश्चेव की चीख-पुकार और गोली चलने का हल्का-सा धमाका सुनाई दिये।

"छोटा-सा ध्यान दो!" कज़्ज़ाक लड़का एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाकर जंगल में दौड़ता हुआ चिल्ला रहा था।

टहनियों के बीच पगलाये खरगोश की तरह हवा फुदक रही थी, दूसरी ब्रिगेड गलीसी बलूतों के बीच से उड़ती जा रही थी, गोलों के बाढ़ से उठी लापरवाह धूल शान्त कुटिया जैसी धरती के ऊपर छाने लगी। और डिवीजन कमाण्डर के संकेत पर हमने हमला बोल दिया, चेस्निकी के पासवाला अविस्मरणीय हमला।

लड़ाई के बाद

अकीन्फ़ीयेव से मेरी अनबन का किस्सा यह है।

इकतीस तारीख को चेस्निकी के पास हमला हुआ था। गाँव के निकट के जंगल में स्क्वाड्रनें जमा हो चुकी थीं और शाम को पाँच बजे के बाद वे दुश्मन पर टूट पड़ीं। वह तीन मील की दूरी पर टीले पर हमारी प्रतीक्षा कर रहा था। हम बेहद थके

घोड़ों को तीन मील दौड़ाते गये और टीले पर चढ़कर हमें काली वर्दियों और सफ़ेद चेहरों की अडिग दीवार दिखायी पड़ी। ये पोलैण्ड से लड़ाई के शुरू में हमारे साथ गद्दारी करनेवाले कज़्ज़ाक थे जिन्हें कप्तान याकोवलेव ने एक ब्रिगेड में गठित किया था। अपने घुड़सवारों को वर्ग-व्यूह में खड़ा करके कप्तान म्यान से अपनी तलवार निकाले हमारी बाट जोह रहा था। उसके मुँह में सोने का दाँत चमक रहा था, काली दाढ़ी छाती पर उसी तरह पड़ी थी जैसे मुर्दे की छाती पर देवचित्र। दुश्मन की मशीनगनें बीस कदम की दूरी से मार कर रही थीं, हमारी कतारों में घायल हुए जवान गिर पड़े। हमने उन्हें कुचल दिया और दुश्मन से जा टकराये पर उसका व्यूह टूटा नहीं और तब हम भाग खड़े हुए।

इस प्रकार साविन्कोव के लोगों को छठी डिवीजन पर अल्पकालिक विजय प्राप्त हुई। वह इसलिये प्राप्त हुई कि हमले का सामना करनेवाले ने प्रचण्ड धावा बोलती स्क्वाड्रन की बाढ़ के समक्ष पीठ नहीं दिखायी। इस बार कप्तान याकोवलेव खड़ा था और हम गद्दारों के गन्दे खून में अपनी तलवारों को रंगे बिना ही भाग खड़े हुए।

पाँच हज़ार आदमी, हमारी सारी डिवीजन ढलानों पर भाग रही थी, कोई भी उसका पीछा नहीं कर रहा था। दुश्मन टीले पर ही खड़ा रह गया। उसे अपनी असम्भव विजय पर विश्वास न हुआ और वह पीछा करने का साहस न कर सका। इसलिये हम ज़िन्दा बच गये और बिना नुकसान उठाये घाटी में उतर गये जहाँ छठी डिवीजन का राजनीतिक अधिकारी विनोग्रादोव हमें मिला। विनोग्रादोव अपने बिदकते घोड़े को इधर-उधर दौड़ाता भागते कज़्ज़ाकों को वापस लड़ाई में भेज रहा था।

"ल्यूतोव," मुझे देखकर वह चिल्लया, "जवानों को लौटा, नहीं तो जान से मार डालूँगा!.."

विनोग्रादोव लड़खड़ाते घोड़े को पिस्तौल की मूठ से तड़ातड़ पीट रहा था, चीख-चिल्लाकर लोगों को जमा कर रहा था। मैं उससे छुट्टी पाकर कुछ ही दूरी पर घोड़े को दौड़ाते गुलीमोव नामके किर्गीज के पास गया।

"ऊपर चढ़, गुलीमोव," मैं बोला, "घोड़ा मोड़..."

"घोड़ी की पूँछ नहीं मोड़ूँ?" गुलीमोव बोला और उसने पीछे मुड़कर देखा। उसने चोरों की तरह मुड़कर देखा और गोली चला दी, मैं बाल-बाल बचा, मेरे कान के ऊपर के बाल झुलस गये।

"अपना मोड़," गुलीमोव फुसफुसाया, उसने मेरे कन्धे जकड़ लिये और दूसरे हाथ से तलवार निकालने लगा। तलवार म्यान से निकल नहीं रही थी, किर्गीज काँपता हुआ इधर-उधर नज़रें दौड़ा रहा था। उसने अपनी बाँह में मेरा कन्धा भर रखा था और सिर को झुकाकर अधिकाधिक पास ला रहा था।

"तेरा अगाड़ी," वह बेहद धीमे स्वर में दोहराये जा रहा था, "मेरा तेरे पिछाड़ी.. ." उसने हौले से मेरी छाती पर म्यान से निकल आयी तलवार की नोक मारी। मौत

की निकटता और उसके कसे पाश के कारण मतली आने लगी, मैंने हथेली से किर्गीज के धूप में तपे पत्थर की तरह गर्म चेहरे को धकेला और उसमें जितना बस चला उतने गहरे नाखून गाड़ दिये। मेरे नाखूनों के तले खून की धारा फूटकर उन्हें गुदगुदाने लगी, मैं किसी लम्बे सफर के बाद की तरह हाँफते हुए किर्गीज से दूर हट गया। मेरा लहुलूहान मित्र, घोड़ा मेरा धीमी चाल चल रहा था। मैं जा रहा था, मुझे रास्ते की कोई सुध न थी, मैं जा रहा था बिना मुड़कर देखे। जब तक मुझे पहली स्क्वाड्रन का कमाण्डर वोरोब्योव न मिला तब तक मैं ऐसे ही चलता रहा। वोरोब्योव अपने क्वार्टर-मास्टरों को ढूँढ रहा था पर वे उसे मिल न रहे थे। हम दोनों चेस्निकी गाँव में पहुँचे और क्रान्तिकारी कोर्ट मार्शल के भूतपूर्व गाड़ीवान अकीन्फीयेव के पास बेंच पर बैठ गये। हमारे पास से 31वीं कैवलरी रेजीमेण्ट की नर्स साश्का गुजरी और दो कमाण्डर हमारी बेंच पर और बैठ गये। ये कमाण्डर चुप बैठे ऊँघ रहे थे, उनमें से एक जिसे भीतरी घाव लगा था बराबर सिर हिलाये जा रहा था और अपनी फूली आँख झपक रहा था। साश्का उसके बारे में बताने के लिये असपताल गयी और फिर लगाम से घोड़ी को खींचती हुई हमारे पास लौटी। घोड़ी उसकी अड़ रही थी और उसकी टाँगें गीली मिट्टी पर फिसल रही थी।

"किधर का रुख कर रखा है?" वोरोब्येव नर्स से बोला। "बैठ भी हमारे साथ, साश्का..."

"नहीं बैठूँगी मैं तुम्हारे साथ," साश्का बोली और उसने घोड़ी के पेट पर लात मारी, "नहीं बैठूँगी..."

"आख़िर क्यों?" वोरोब्योव हँसते हुए चिल्लाया। "या तूने मर्दों के साथ चाय पीना छोड़ दिया?..

"तेरे साथ छोड़ दिया," वह कमाण्डर की ओर मुड़ी और उसने झुँझलाकर लगाम पटक दी। "छोड़ दिया, मैंने, वोरोब्योव, तेरे साथ चाय पीना क्योंकि आज मैंने तुम्हारी असलियत देखी, बड़े सूरमा बनते हो, तेरी असलियत भी आज मैंने देख ली, कमाण्डर..."

"अगर देखी थी," वोरोब्योव बुदबुदाया, "तो गोली क्यों नहीं चलायी..."

"गोली?! साश्का बौखलाकर बोली और उसने आस्तीन पर बँधी अस्पताल की पट्टी उतार डाली। "क्या इससे चलाऊँ गोली?"

और तब अकीन्फीयेव, क्रान्तिकारी कोर्ट मार्शल का भूतपूर्व गाड़ीवान हमारे पास सरका, जिससे मुझे कुछ पुरानी बातों का बदला लेना बाकी था।

"साश्का, तेरे पास गोली चलाने के लिये कुछ नहीं है," वह उसे शान्त कराते हुए बोला, "कोई तुझे इसका दोष नहीं देता, पर मैं उनको दोस देना चाहता हूँ जो लड़ने तो जाते हैं पर पिस्तौल में गोली नहीं भरते... तू हमला करने जा रहा था," अचानक अकीन्फीयेव चिल्लाकर मुझसे बोला, उसका चेहरा फड़क उठा, "तू जा रहा

था और तूने गोलियाँ नहीं भरीं... इसकी वजह कहाँ है?''

''जा अपना काम कर, इवान,'' मैंने अकीन्फीयेव से कहा पर वह मेरा पिण्ड न छोड़ रहा था और हिस्टीरिया में अपनी तिरछी, टूटी पसलियोंवाली देह को लेकर मुझ पर चढ़ा आ रहा था।

''पोलैण्डवाला तुझे मारता है और तू उसे नहीं,'' अपने टूटी हड्डीवाले विकृत कूल्हों को नचाते हुए वह बड़बड़ाया। ''इसकी वजह कहाँ है?..''

''हाँ पोलैण्डवाला मुझे मार रहा था,'' मैंने धृष्टता से उत्तर दिया, ''और मैं पोलैण्डवाले को नहीं...''

''मतलब, तू मोलोकान* है?'' अकीन्फीयेव पीछे हटता हुआ फुसफुसाया।

''मतलब, मोलोकान हूँ,'' मैं और भी ज़ोर से बोला। ''तुझे क्या चाहिये?''

''मुझे यही चाहिये कि तू रंगे हाथ पकड़ा गया,'' इवान विजयोल्लास के साथ चिल्लाया, ''तूने खुद कबूल किया है, और मेरे पास मोलोकानों के बारे में कानून लिखा है : उन्हें गोली मारी जा सकती है, वे भगवान की पूजा करते हैं...''

मजमा लगाता हुआ अकीन्फीयेव ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर मोलोकानों के बारे में बोले जा रहा था। मैं वहाँ से जाने लगा पर उसने पीछे से आकर मेरी पीठ पर घूँसा मार दिया।

''तूने गोलिया नहीं भरी थीं,'' अकीन्फीयेव मेरे कान के ऊपर फुसफुसाया, उसका दिल धुक-धुक कर रहा था। और वह अपने अँगूठे से मेरा मुँह चीरने की कोशिश करने लगा, ''तू भगवान की पूजा करता है, गद्दार...''

वह मेरे मुँह से अँगूठा डाले उसे झटक-झटककर फाड़ रहा था, मैं उस पागल को धक्के देता हुआ उसके चेहरे को छेत रहा था। अकीन्फीयेव कूल्हे के बल ज़मीन पर गिर गया और गिरते समय चोट लगने से उसके मुँह से खून बहने लगा।

तब साश्का अपनी झूलती छातियों को लेकर उसके पास आयी। उसने इवान पर पानी उंडेला और उसके मुंह से लम्बा दाँत निकाला जो मुँह के काले विवर में वैसे ही लड़खड़ा रहा था जैसे सपाट शाहराह पर खड़ा एकाकी भोजवृक्ष।

''मुर्गों को बस एक काम आता है,'' साश्का बोली, ''एक दूसरे का मुँह तोड़ने के अलावा कुछ नहीं जानते, और मेरा जी तो आज जो कुछ हुआ उसे देखकर डूब मरने का होता है...''

यह वह दुखित स्वर में बोली और घायल अकीन्फीयेव को अपने साथ ले गयी और मैं गलीसिया की हठी बारिशों से कीचड़ में डूबे चेस्निकी गाँव में चला गया।

गाँव फूली लाश की तरह तैर रहा था, उसके मनहूस घावों से लाल मिट्टी बह रही थी। मेरे सिर के ऊपर पहला तारा चमका और टूटकर घटाओं में गिर गया। बारिश

---

* मालोकान—एक इसाई सम्प्रदाय जिसके अनुयायी गिरजों और पादरियों, सरकारी और सैनिक सेवा को नहीं मानते।

भिंसे की टहनियों पर कोड़े बरसाकर निशक्त हो गयी। साँझ पक्षियों के झुंड की तरह आकाश की ओर उड़ी और अंधकार ने मेरे सिर पर अपना नम ताज रख दिया। मैं निढाल, मनहूस ताज़ के बोझ से झुका आगे चल पड़ा और अपने भाग्य से मुझे बस एक सबसे मामूली कौशल—मानवहत्या के कौशल का वरदान देने की प्रार्थना कर रहा था।

गीत

बुद्यातीची गाँव में मुझे जिस घर में टिकाया गया उसकी मालकिन बड़ी दुष्ट निकली। वह विधवा थी, वह गरीब थी; मैंने उसकी कोठरियों के बहुतेरे ताले तोड़े पर उनमें मुझे कोई पशु या पक्षी न मिला।

मेरे पास चालाकी का सहारा लेने के सिवा और कोई चारा न बचा। और एक दिन मैं जल्दी ही, अँधेरा होने से पहले ही घर लौट आया और मैंने देखा कि मालकिन अभी तक ठण्डी न हुई अँगीठी के मुँह को बन्द कर रही है। घर में बन्दगोभी के शोरबे की सुगन्ध भरी थी और शायद इस शोरबे में मांस भी रहा हो। मुझे उसके शोरबे में मांस की बू आ गयी और मैंने रिवालवर निकालकर मेज़ पर रख दी, पर बुढ़िया मुकरने लगी, उसका चेहरा ओर कालिख भरी उँगलियाँ फड़कने लगे, उसके चेहरे पर काली घटाएँ छा गयीं और वह मुझे भय और आश्चर्यजनक घृणा के साथ देख रही थी। पर वह मुझ से पिण्ड नहीं छुड़ा पाती, मैं रिवाल्वर के बूते उसे मजबूर कर देता अगर साश्का कोन्यायेव यानी साश्का मसीहा मेरे इस प्रयास में विघ्न न डाल देता।

उसने बगल में अकार्डियन दबाये घर में प्रवेश किया, वह अपने सुंदर पैरों पर नाप से बड़े, घिसे बूटों को चढ़ाये हुए था।

''कुछ गाना-बजाना हो जाये,''वह बोला और उसने अपनी उनींद की बर्फ़ से जकड़ी नीली आँखें मेरी ओर उठायीं। ''गाना-बजाना करेंगे,'' साश्का मसीहा बेंच पर बैठते हुए बोला और उसने गीत की धुन छेड़ दी।

यह विचारमग्न धुन कहीं दूर से आती महसूस हो रही थी, साश्का मसीहा ने उसे बीच ही में तोड़ दिया और उसकी नीली आँखों में उदासी छा गयी। उसने मुंह फेर लिया, उसे पता था कि मुझे खुश करने क लिए क्या चाहिए और उसने कुबानी गीत छेड़ दिया।

''खेतों का तारा,'' वह गाने लगा, ''अपने प्रिय घर के ऊपर चमकता तारा और मेरी गमगीन माँ के हाथ का स्पर्श...''

मुझे यह गीत प्रिय था। साश्का मसीहा को यह पता था क्योंकी दोनों—उसने और मैंने—पहली बार यह गीत सन उन्नीस में दोन के डेल्टे और कगालनीत्सकाया

गाँव में सुना था।

निषिद्ध क्षेत्र में आखेट करनेवाले एक शिकारी ने हमें यह गीत सिखाया था। वहाँ के संरक्षित जलागारों में मछली अण्डे देने आती है और पक्षियों के असंख्य झुण्ड विचरते हैं। डेल्टे में नदी की धाराओं में इतनी मछली होती है कि उसे डोल से या हाथों से ही पकड़ा जा सकता है और अगर चप्पू को पानी में सीधा खड़ा किया जाये वह सीधा खड़ा रहेगा—मछलियाँ चप्पू को गिरने नहीं देतीं और ऐसे ही उसे अपने साथ ले जाती हैं। हमने अपनी आँखों से यह देखा था और हम कगालनीत्सयाकया गाँव के पास के इस जल क्षेत्र को कभी न भूलेंगे। सभी सरकारों ने वहाँ शिकार पर प्रतिबन्ध लगा रखा था—यह सही प्रतिबन्ध है पर सन उन्नीस में डेल्टा प्रदेश में घमासान लड़ाइयाँ हो रही थी और याकोव शिकारी ने जो हम सबके सामने, खुलकर अपना गलत धंधा करता था, हमें लुभाने के जलए हमारी स्क्वाड्रन के गायक साश्का मसीहा को अकार्डियन भेंट किया। उसने साश्का को अपने गीतसिखा दिये : उनमें से बहुत से बड़े भावुकतापूर्ण और पुराने ज़माने के थे। इसके लिए हमने धूर्त्त शिकारी को माफ़ कर दिया क्योंकि हमे उसके गीतों की ज़रूरत थी। तब किसी को भी युद्ध का अन्त नहीं दिखायी देता था और अकेला साश्का मसीहा ही हमारी दूभर राहों को खुशी और आँसू भरे गीतों से पाट देता था। इन रास्तों पर रक्तरंजित निशान छूटते जाते थे। गीत हमारे निशानों के ऊपर मंडराते। कुबान प्रदेश में भी यही हुआ, उराल्स्क में भी यही हुआ और कोहकाफ़ की तलहटियों में भी और आज के दिन तक यही होता आ रहा है। गीतों की हमें ज़रूरत है, किसी को भी युद्ध का अन्त नहीं दिखायी देता और स्क्वाड्रन का गवैया साश्का मसीहा अभी मरने के लिए पका नहीं...

और आज की शाम भी जब मैं मालकिन के शोरबे के मामले में गचका खा गया, साश्का मसीहा ने अपनी घुटी-घुटी सी लहराती आवाज़ से मुझे सांत्वना दी।

"खेतों का तारा," वह गा रहा था, "अपने प्रिय घर के ऊपर चमकता तारा और मेरी गमनीन माँ के हाथ का स्पर्श..."

और मैं एककोने में सीले हुए बिछौन पर पसरा सको सुन रहा था। सपने मेरी हड्डियाँ चूर कर रहे थे, सपने मेरे नीचे बिछी गली घास को हिचकोले खिला रहे थे, सपनों की बरखा से मुझे हाथ पर कुम्हलाये गाल को टिकाये खड़ी बुढ़िया कठिनाई से दिखायी पड़ रही थी। अपने नुचे सिर का झुकाये वह दीवार के सहारे जड़ खड़ी थी, साश्का का गीत बन्द हाने के बाद भी वह अपनी जगह से न हिली। साश्का ने गाना पूरा करके अकार्डियन को एक तरफ़ रखा और उबासी लेकर वह ऐसे हँसा मानो लम्बी नींद से जागा हो। फिर उसने विध्वा की झोंपड़ी का दयनीय हाल देखकर बेंच से कूड़ा झाड़ा ओर एक बाल्टी पानी की ले आया।

"देखो,, मेरी जान," मालकिन दरवाज़े की चौखट से पीठ रगड़ती हुई मेरी ओर इशारा करके बोली, "यह तेरा अफ़सर थोड़ी देर पहले आकर मुझ पर चिल्लाया, पाँव

पटकने लगा, मेरे घर के ताले तोड़ डाले और पिस्तौल से धमकी देने लगा... मुझे हथियार से धमकी देना तो पाप है आख़िर मैं तो अबला हूँ...

उसने दरवाज़े की चौखट से फिर पीठ रगड़ी और अपने बेटे को खाल के ओवरकोट ओढ़ाने लगी। बेटा उसका देवप्रतिमा के नीचे चिथड़ों से पटे बड़े पलंग परखर्राटे ले रहा था। यह गूँगा लड़का था जिसका गोल-मटोल फूला-सा सफ़ेद सिर ओर वयस्क मरद की तरह बड़े-बड़े पाँव थे। माँ ने उसकी गंदी नाक साफ़ की और मेज़ क पास लौटी।

"मालकिन," तब साश्का मसीहा उसके कन्धे को छूकर बोला, "अगर चाहती हैं तो मैं अपकी ख़िदमत में हूँ..."

पर बुढ़िया ने मानो उसकी बात सुनी ही नहीं।

"मैं कोई शोरबा देखा तक नहीं," वह गाल को हाथ पर टिकायेबोली, "चला गया शोरबा मेरा लोग-बाग मुझे बस हथियारों से धमकाते हैं और कभी-कभार कोई भला आदमी आता है तो उसके साथ मज़ा ले सकती थी पर मैं तो ऐसी रूखी हो गयी कि पाप की खुशी भी महसूस नहीं होती..."

उसने बस अपने शिकवे-शिकायतों का राग अलापते हुए, बड़बड़ाते हुए गूँगे लड़के को दीवार के पास सरकाया। साश्का मसीहा उसके साथ गूदड़ो के बिछौने पर लेट गया और मैंने सोने का प्रयास किया तथा सुन्दर विचारों क साथ सोने के लिए तरह-तरह के सपने बुनने लगा।

रब्बी का बेटा

...याद है तुझे, वसीली, झीतोमीर? याद है तुझे, वसीली, तेतेरेव और वह रात जब शनिवार, तरुण साबूत डूबते सूरज की लालिमा के किनारे-किनारे अपनी लाल एड़ी से तारों का कुचलता हुआ चुपके से आ रहा था?

चाँद का पतला हँसिया अपनी नोकों को तेतेरेव के काले पानी में धो रहा था। निराला गेदाली, चतुर्थ इण्टरनेशनल का संस्थापक हमें शाम की प्रार्थना के लिए रब्बी मोताले ब्रात्सलावी के पास ले जा रहा था। अनोखाा गदाली शाम की लाल धुन्ध में अपने सिलिंडर हैट पर लगे मुर्ग़े के परों का झुलाता चल रहा था। रब्बी के कमरे में मोमबत्तियों की हिंस्र पुतलियाँ टिमटिमा रही थीं। भजनों की पोथियों पर झुके चौड़े कन्धोंवाले यहूदी दबी-दबी आवाज़ में कराह रहे थे और चेर्नोबिल के सादिकों का बुढ्ढा विदूषक अपनी फटी जेब में ताँबे के सिक्कों को झंकार रहा था...

...याद भी है तुझे,वसीली, यह रात?.. बाहर घोड़े हिनहिना रहे थे और कज़्ज़ाक चिल्ला रहे थे। कमरे की खिड़की के बाहर युद्ध का मरुस्थल मुँह बाये खड़ा था और रब्बी मोताले ब्रात्सलावी तालिस* में अपनी जर्जर उँगलियाँ गड़ाये पूर्वी दीवार के पास

बैठा पूजा कर रहा था। फिर अलमारी का परदा हटा और मोमबत्तियों की मातमी चमक में हमें मूसा-संहिता के सिन्दूरी मखमल और आसमानी रेशम में लिपटे खर्रे और मूसा-संहिता के ऊपर रब्बी के बेटे, वंश के अन्तिम राजकुँवर इलिया का निर्जीव, विनम्र, सुन्दर चेहरा लटका दिखायी दिये...

और अब, वसीली, परसों बारहवीं आर्मी की रेजीमेंटों ने कोवेल के पास मोर्चा खोल दिया। शहर में विजेताओं के उपेक्षापूर्ण गोले गरजने लगे। हमारी फ़ौजें डिगकर गड़बड़ा गयीं। राजनीतिक विभाग की रेलगाड़ी निर्जीव खेतों की पीठ पर रेंगकर भागने लगी। टाइफ़स के मारे देहाती कन्धों पर सिपाही की मौत का कूबड़ लादे चल रहे थे। वे हमारी रेलगाड़ी के पायदानों पर कूदकर चढ़ जाते और कुन्दों की मार खाकर उतर जाते। वे चुपचाप हाँफते, गाड़ी की खिड़कियों परसहमी ठकठक करते आगे ही आगे उड़ते जा रहे थे। और बारहवें मील पर जब मेरे पास उनको देने के लिए आलू न बचा, मैंने उनके बीच परचों का पुलिन्दा उठाकर फेंक दिया। पर उनमें से केवल एक ने अपना मैला, कंकाल जैसा हाथ परचे को उठाने के लिए बढ़ाया। और मैंने झीतोमीर के रब्बी के बेटे इलिया को पहचान लिया। मैं उसे फ़ौरन पहचान गया, वसीली। और पतलून खो चूके, सिपाही की गठरी के बोझ से झुके राजकुँवर को देखकर मुझे इतनी पीड़ा हुई कि हमने नियम तोड़कर उसे अपने डिब्बे में खींच लाये। बुढ़िया जैसे असहाय नंगे घुटने पायदान की ज़ंग लगी पैड़ियों से टकरा रहे थे; दो मल्लाहों जैसे ब्लाउज़ पहने भारी-भरकम छातियोंवाली टाइपिस्टें दम तोडतें की लम्बी, शर्मीली देह को फ़र्श पर घसीटती लायीं। हमने उसे सम्पादक के कम्पार्टमेण्ट में फ़र्श पर लिटा दिया। लाल पतलूनोंवाले कज़्ज़ाकों ने उसके कपड़े ठीक किये। लौण्डियाँ फ़र्श पर अपनी बांडी टाँगें टिकाये विनीत मादाओं की तरह चुपचाप उनकी मौन इन्द्रिय को, मृत्युशय्या पर पड़े इस शामी की मुरझायी, घुघराली मर्दानगी को निहार रही थीं। और मैं, जो अपनी यायावरी की एक रात को उसे देख चुका था, सन्दूकची में लाल सैनिक ब्रात्सलावी की बिखरी चीज़ों को रख रहा था।

यहाँ सब एक ही ढेर में पड़ा था—कम्युनिस्ट प्रचारक का पहचान-पत्र और यहूदी भक्त-कवि के भजनों की पुस्तकें। लेनिन और मैमून के चित्र साथ-साथ रखे रखे थे—लेनिन का लौह मस्तक और मैमून के चित्र के रेशम की धुँधली चमक। पार्टी की छठी कांग्रेस के प्रस्तावों की पुस्तक में ज़नाना बालों की लट रखी थी, और कम्युनिस्ट प्रचार के परचों के हाशियों पर प्राचीन हीब्रू कविताओं की टेढ़ी-मेढ़ी पंक्तियाँ लिखी थीं। मुझ पर उदास ओर कंजूस बरखा की तरह 'श्रेष्ठगीत' के पन्ने और रिवाल्वर के कारतूस बरस रहे थे। सूर्यास्त की उदास वर्षा ने मेरे बालों की धूल धो डाली और मैं कोने में फटे गद्दे पर अन्तिम घड़िया गिनते तरुण से बोलाः

"चार महीने पहले शुक्रवार की शाम को कबाड़ी गेदाली मुझे आपके पिता, रब्बी

* तालिस—कोनों पर फुँदनों वाली ओढ़नी जिसे ओढ़कर यहूदी भजन करते हैं।

मोताले के पास लाया था, पर तब आप ब्रात्सलावी, पार्टी में नहीं थे।"

"मैं तब पार्टी में था," लड़के ने छाती खुरचते हुए और बुखार में छटपटाकर उत्तर दिया, "पर मैं अपनी माँ को नहीं छोड़ सकता था..."

"और अब, इलिया?"

"क्रान्ति में माँ बस एकप्रसंग मात्र है," वह धीमे से फुसफुसाया, "मेरे अक्षर की बारी आ गयी, अक्षर 'ब' की और संगठन ने मुझे मोर्चे पर भेज दिया..."

"और इलिया, आप कोवेल जा फँसे?"

"मैं कोवेज जा फँसा!" वह हताशा के साथ चिल्लाया। "कुलकों ने मोर्चा खोल दिया। मैंने मिली-जुली रेजीमेंट की कमान सँभाली पर देर हो चुकी थीं मेरे पास तापख़ाने की कमी थी।"

वह रोव्नो आने से पहले ही मर गया। अन्तिम राजकुँवर मर गया, कविताओं, यहूदी तावीज़ ओर पायताबों से घिरा। हमने उसे एक अनजान स्टेशन पर दफ़ना दिया। और मैंने—अपनी आदिम काया से पिंजरे में अपनी कल्पना के तूफ़ानों को मुश्किल से सँभालकर—अपने भाई की अन्तिम साँस को ग्रहण किया।

अर्गामाक

मैंने लड़ती सेना में तबादला करवाने का फ़ैसला किया। यह सुनकर डिवीजन कमाण्डर ने नाक-भौं सिकोड़ी।

"तू कहाँ जा रहा है थूथनी उठाये?.. आँख झपकी नहीं कि तेरा कीमा बन जायेगा..."

मैं अपनी बात पर अड़ा रहा। यही नहीं। मैंने सबसे जाँबाज़ डिवीजन—छठी डिवीजन चुनी। मुझे 23वीं कैबेलरी रेजीमेंट की चौथी स्क्वाड्रन में नियुक्त किया गया। ब्रिययान्स्क के कारख़ाने का फ़िटर बाऊलिन, उम्र में बिलकुल बच्चा, स्क्वाड्रन का कमाण्डर था। रौब जमाने के लिए उसने दाढ़ी बढ़ा रखी थी। दाढ़ी के नाम पर उसकी ठोड़ी पर राख के रंग के घुँघराले गुच्छे लटके थे। अपनी बाईस साल की उम्र में बाऊलिन बेकार की हड़बड़ी से सर्वथा अपरिचित था। हज़ारों बाऊलिनों का यह गुण क्रान्ति की विजय का एक महत्वपूर्ण कारक रहा। बाऊलिन दृढ़, मितभाषी और हठी था। उसकी जीवन राह का फ़ैसला हो चुका था। इस राह की सच्चाई में उसे कोई सन्देह न था। कठिनाइयों को वह आसानी से झेल लेता। उसे बैठे-बैठे सोना आता था। वह एक हाथ से दूसरे को भींचकर सोता और ऐसे जागता कि पता चलता कि वह सोया भी था या नहीं।

बाऊलिन की कमान में अपने प्रतिदया की अपेक्षा नहीं की जा सकती थी। मेरी सेवा सफलता के विरले शकुन से हुई—मुझे घोड़ा दिया गया। घोड़े न अश्व रिज़र्व में थे न किसानों के पास। संयोग ने साथ दिया। कज़्ज़ाक तीख़ोमोलोव ने बिना पूछे दो

बन्दी अफ़सरों को मार डाला। उसे उन्हें ब्रिगेड हेडक्वार्टर तक ले जाने का काम सौंपा गया था, अफ़सर महत्वपूर्ण जानकारी दे सकते थें। तीखोमोलोव ने उनहें गन्तव्य तक नहीं पहुँचाया। कज़्ज़ाक का कोर्ट मार्शल कराने का फैंसला किया गया पर फिर विचार वदल दिया गया। स्क्वाड्रन कमाण्डर ने उसे कोर्ट मार्शल से भी कड़ी सज़ा दी—उसने तीखोमोलोव से उसका अर्गामाक नाम का घोड़ा छीन लिया और उसे कारवाँ का गाड़ीवान बना दिया।

अर्गामाक के साथ मैंने जो कष्ट सहे शायद ही कोई व्यक्ति उन्हें सह पाता। तीखोमोलोव तेरेक से, अपने घर से घोड़ा लाया था। उसे कज़्ज़ाक दुलकी चाल और खास कज़्ज़ाक सरपट—कड़ी, बेतहाशा, आकस्मिक चाल सिखाई गयी थी। अर्गामाक का कदम लम्बा, फैला और हठी था। अपने इस शैतानी कदम से वह मुझे कतारों से निकाल ले जाता, मैं अपनी स्क्वाड्रन से बिछुड़ जाता और दिशा-ज्ञान से वंचित मैं कई-कई दिन तक अपनी टुकड़ी की खोज में भटकता रहता, दुश्मन के इलाके में जा पहुँचता, खड्डो में रातें गुजारता, परायी रेजीमेण्टों में जा पहुँचता और उनके द्वारा खदेड़ दिया जाता। घुड़सवारी का मेरा कौशल यहीं तक सीमित था कि जर्मनी की लड़ाई में मैं पन्द्रहवीं इन्फेण्ट्री डिवीजन की आर्टीलरी बटालियन में था। ज़्यादातर गोलों की पेटी पर बैठकर सफर करता, कभी-कभार हम घोड़े जोतकर तोपगाड़ी पर बैठकर जाते थे। मुझे अर्गामाक की कड़ी झूमती दुलकी चाल का आदी होने का कहाँ मौका मिलता। तीखोमोलोव ने घोड़े को अपनी सारी बुराइयाँ विरासत में दे डाली थीं। मैं घोड़े की लम्बी, कड़ी पीठ पर बोरी की तरह बैठा हिचकोले खाता। मैंने उसकी पीठ रगड़ डाली। उस पर फफोले पड़ गये। मरकती मक्खियाँ इन घावों को कुरेदतीं। घोड़े के पेट को सूखकर जमे काले खून के छल्ले घेरे हुए थे। ठीक से नाल न ठुकी होने के कारण दौड़ते समय उसकी टाँगों को रगड़ लगने लगी और पिछली टाँगों को फीलपाँव की बीमारी लग गयी। अर्गामाक सूखकर काँटा हो गया। उसकी आँखों में यातना सहते घोड़े की लाक्षणिक आग, उन्माद और हठ की आग भर गयी। वह जीन नहीं कसने देता था।

''चश्मुदीन तूने घोड़े का कबाड़ा कर डाला,'' प्लाटून कमाण्डर ने मुझसे कहा।

मेरी उपस्थिति में कज़्ज़ाक चुप रहते और मेरी पीठ पीछे वे झपटने की तैयारी करते जैसे हिंस्र पशु अलसायी, विश्वासघाती निश्चलता में इसकी तैयारी करता है। वे मुझसे चिट्ठियाँ तक नहीं लिखवाते थे...

अश्वसेना ने नोवोग्राद-वोलीन्स्क पर अधिकार कर लिया। दिन में हमें साठ-साठ, अस्सी-अस्सी किलोमीटर की दूरी तय करनी पड़ती थी। हम रोव्नो के पास पहुँच रहे थे। दिन झट से गुजर जाता और रातों को मुझे एक ही सपना आता। मैं अर्गामाक को दुलकी चाल दौड़ा रहा हूँ। सड़क के किनारे अलाव जल रहे हैं। कज़्ज़ाक खाना बना रहे हैं। मैं उनके पास से गुजर रहा हूँ पर वे मेरी ओर नज़रें नहीं उठाते। कुछ

दुआ-सलाम करते और दूसरे मेरी ओर देखते तक न थे, उन्हें मेरी कोई परवाह न थी। इसका क्या अर्थ है? उनकी उदासीनता का अर्थ यह है कि मेरी घुड़सवारी में कोई खास बात नहीं, मैं भी सबकी तरह घोड़े पर सवारी करता हूँ, मुझे देखने की क्या पड़ी है उन्हें। मैं अपने रास्ते जा रहा हूँ घोड़े को दौड़ाता और सुख की अनुभूति कर रहा हूँ। वास्तव में सुख-चैन की प्यास न बुझने के कारण मुझे यह सपना आया करता था।

तीखोमोलोव नज़र नहीं आता था। वह कूच करती फ़ौज के किसी आँचल में कपड़े-लत्तों से लदे छकड़ों की बेढब कतारों में कहीं मेरी घात लगाये बैठा है।

प्लाटून कमाण्डर एक बार मुझसे बोला :

''पाश्का तीखोमोलोव तेरे बारे में पूछ रहा था...''

''उसे मेरी क्या ज़रूरत पड़ी है?''

''अगर पूछा है तो होगी ज़रूरत...''

''वह शायद सोचता है कि मैंने उसका कोई बुरा किया है?''

''तू सोचता है कि नहीं किया...''

जंगलों और नदियों को पार करके पाश्का की घृणा मुझ तक पहुँच रही थी। मैं उसे अपने रोम-रोम से महसूस करके सिहर जाता था। उसकी खून से उतरी आँखें मेरी राह पर टिकी रहती।

''तुमने क्यों मेरे लिये दुश्मन पैदा कर दिये?'' मैंने बाऊलिन से पूछा।

स्क्वाड्रन कमाण्डर मेरे पास से गुजरा और उबासी लेने लगा।

''यह मेरी चिन्ता नहीं,'' उसने बिना मुड़े मुझे उत्तर दिया, ''यह तेरी चिन्ता है...''

अर्गामाक की पीठ सूख जाती और फिर से घाव खुल जाते। काठी के नीचे मैं तीन-तीन चार जामे बिछाता पर न घाव भरते। इस बोध से कि मैं खुले घाव पर बैठा हूँ मेरे सारे बदन में खुजली होने लगती।

हमारे प्लाटून का एक जवान, जिसका नाम विजयूकोव था, तीखोमोलोव के गाँव का ही था, वह तेरेक में पाश्का के बाप को जानता था।

''उसका यानी पाश्का का बाप,'' एक बार बिज्यूकोव ने मुझे बताया, ''बढ़िया घोड़े पालता है... जाँबाज सवार है, हट्टा-कट्टा... घोड़ों के झुण्ड में आता है घोड़ा चुनने. .. दिखाने के लिये लाते हैं उसे घोड़ा। वह घोड़े के सामने खड़ा होता है, टाँगें चौड़ी करके देखता जाता है उसे... पता नहीं क्या करना चाहता है?... पता है क्या चाहता है : वह अपना भारी-भरकम मुक्का घुमाता है और झट घोड़े की आँखों के बीच जड़ देता है—और घोड़ा नहीं रहा। पूछते हैं उससे, कलीस्त्रात तूने जिनावर को क्यूँ मार डाला?.. वह कहता है यह घोड़ा मेरे काम का नहीं, बिल्कुल नहीं था... मुझे यह घोड़ा भाया नहीं... कहता है : मैं सवारी नहीं करता, मौत से खेलता हूँ... चाहे कुछ कहो, जाँबाजी का उसकी कोई जवाब नहीं।''

और अर्गामाक, जिसे पाश्का के बाप ने ज़िन्दा छोड़ दिया और अपने लिये चुना, मुझे मिला। आगे क्या करूँ? मैं दिमाग़ में तरह-तरह की योजनाएँ बना रहा था। युद्ध ने मुझे इन चिन्ताओं से मुक्त कर दिया।

अश्वसेना ने रोव्नो पर हमला किया। शहर पर अधिकार हो गया। उसमें हम दो दिन रहे। अगली रात को पोलैण्डवालों ने हमें खदेड़ दिया। उन्होंने अपनी पीछे हटती फ़ौजों को निकालने के लिये हमला किया था। उनका यह पैंतरा कामयाब रहा। तूफ़ान, मूसलाधार वर्षा, ग्रीष्म के झंझावात ने ज़मीन से लेकर आसमान तक पानी की काली दीवार खड़ी कर दी थी और पोलैण्डवालों ने इसकी ओट का फायदा उठाया। रात की इस लड़ाई में सर्बियाई दून्दीच, वीरतम मनुष्य, मारा गया। इस लड़ाई में पाश्का तीख़ोमोलोव भी लड़ा। पोलैण्डवाले उसके काफिले पर टूट पड़े। जगह सपाट थी, ओट लेने के लिये कोई जगह न थी। पाश्का ने अपने छकड़ों को ऐसे व्यूह में खड़ा किया जो सिर्फ़ उसे ही मालूम था। शायद रोमन भी इसी तरह से अपने रथों से व्यूह रचना करते थे। पाश्का के पास एक मशीनगन भी निकल आयी। शायद उसने चुराकर आड़े वक्त के लिये छिपा रखी होगी। इस मशीनगन से तीख़ोमोलोव ने हमले का सामना किया, रसद को बचा लिया और उन दो छकड़ों के अलावा जिनके घोड़ों को गोली लग गयी थी, वह सारे काफ़िले को सही-सलामत ले आया।

"तुम क्या वीर जवानों का अचार डालते हो," इस लड़ाई के कुछ दिन बाद ब्रिगेड हेडक्वार्टर में बाऊलिन से पूछा गया।

"हाँ, अगर इसकी ज़रूरत होती है..."

"देखके, कहीं पछताना न पड़ जाये..."

पाश्का को क्षमादान की घोषणा तो नहीं की गयी पर हमें मालूम था कि वह लौट रहा है। वह नंगे पाँवों पर रबड़ के स्लीपर पहने था। उसकी उँगलियाँ कटी हुई थीं। पट्टियाँ उसके पीछे-पीछे पुछल्ले की तरह घिसटती जा रही थी। पाश्का बुदूयातीची गाँव में गिरजे के चौक में आया जहाँ हमारे घोड़े बँधे थे। बाऊलिन गिरजे की पैड़ियों पर बैठा चिलमची में अपने पैरों को गर्म पानी में सेंक रहा था। उसके पैरों की उँगलियाँ गल गयी थीं। वे उसी तरह गुलाबी-सी थीं जैसे गढ़ाई से पहले तपे लोहे का रंग होता है। बाऊलिन के पुआल के रंग के तरुण बालों के गुच्छे माथे पर चिपके थे। गिरजे की ईंटों और खपरैल पर धूप चमचमा रही थी। स्क्वाड्रन कमाण्डर के पास खड़े विज्यूकोव ने उसके मुँह में सिगरेट डालकर सुलगायी। तीख़ोमोलोव पट्टियों के अपने पुछल्लों को घसीटता हुआ पघे की ओर गया। उसके स्लीपर ठक-ठक कर रहे थे। अर्गामाक ने अपनी लम्बी गर्दन तानी और हिनहिनाकर मालिक की अगवानी की। वह रेगिस्तान में मटके घोड़े की तरह धीमे से रिरियाकर हिनहिनाया। उसकी पीठ पर कटे मांस की धारियों में पीब की रेखाएँ विचित्र जाल बुन रही थीं। पाश्का घोड़े के पास खड़ा हो गया। गन्दी पट्टियाँ ज़मीन पर स्थिर पड़ी थीं।

"मतलब यह," वह अस्फुट स्वर में बोला। मैं उसकी ओर बढ़ा।

"पाश्का, आ याड़ी कर ले। मुझे खुशी है कि घोड़ा तेरे पास वापस जा रहा है। मै इसे सँभाल नहीं पाऊँगा... कर लें सुलह क्या?..."

"अभी ईस्टर नहीं आया सुलह करने के लिये," प्लाटून कमाण्डर मेरी पीठ पीछे सिगरेट पी रहा था। उसकी शलवार नुमा पतलून बूटों से बाहर निकली थीं, ताँबे जैसी छाती पर क़मीज़ के बटन खुले थे, वह गिरजे की पैड़ियों पर सुस्ता रहा था।

"पाश्का, मिल ले गले इससे," तीख़ोमोलोव के गाँव का विज्यूकोव बोला, जो पाश्का के बाप कलीस्त्रात को जानता था, "वह तेरे साथ गले मिलना चाहता है..."

इन लोगों के बीच मैं एकाकी था जिनकी दोस्ती मैं न पा सका।

पाश्का घोड़े के सामने ज़मीन में गड़ा-सा खड़ा था। अर्गामाक ज़ोर-ज़ोर से स्वच्छन्द साँस लेता हुआ उसकी ओर अपनी थूथनी बढ़ा रहा था।

"मतलब यह," पाश्का कज़्ज़ाक फिर से बोला और तेजी से मेरी ओर पलटकर उसने दो टूक कहा, "मैं तुझसे याड़ी नहीं करूँगा।"

स्लीपरों को घसीटता हुआ वह धूप में झुलसी खड़िया की सड़क पर, पट्टियों से गाँव के चौक की धूल बुहारते हुए चल पड़ा। अर्गामाक कुत्ते की तरह उसके पीछे-पीछे हो लिया। लगाम उसकी थूथनी के नीचे लटकी झूल रही थी और लम्बी गर्दन झुकी हुई थी। बाऊलिन चिलमची में अपने पाँवों के लोहे जैसे लाल मैल को रगड़े जा रहा था।

"तू ने मुझे बैरी दे दिया," मैं उससे बोला, "पर इसमें मेरा क्या कसूर है?"

स्क्वाड्रन कमाण्डर ने सिर उठाया।

"मैं तुझे आर-पार देखता हूँ," वह बोला, "मैं तेरी रग-रग पहचानता हूँ... तू बिना बैरियों के जीने के फेर में रहता है... तू बस इसी कोशिश में रहता है कि बैरी न हों..."

"गले मिल ले इससे," मुँह फेरते हुए बिज्यूकोव बुदबुदाया।

बाऊलिन के माथे पर आग की तरह दहकता दाग उभर आया। उसका गाल फड़कने लगा।

"तुझे पता है यह क्या है?" वह अपनी साँस को काबू में न कर पा रहा था, "यह तो ऊब ही ऊब की ज़िन्दगी है... तू जा हमारे यहाँ से भाड़ में..."

मुझे जाना पड़ा। मैंने छठी स्क्वाड्रन में तबादला करवा लिया। वहाँ मेरा काम अच्छा चलने लगा। चाहे जो भी हो पर अर्गामाक ने मुझे तीख़ोमोलोव की तरह घुड़सवारी करने सिखा दी थी। महीने बीत गये। मेरा सपना साकार हो गया। कज़्ज़ाकों ने मुझे और मेरे घोड़े को कौतुक के साथ ताकना छोड़ दिया।

1926